हंसराज कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

हंस

वार्षिक पत्रिका
2024

PREETI SHAH
B.A. (Hons.) Hindi, III Year

ओइम्! विश्वानि देव सवितुर्दुरितानी परासुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव।।

हे सकल जगत् के उत्पत्तिकर्ता,
समग्र ऐश्वर्ययुक्त, शुद्धस्वरूप,
सब सुखों के दाता, परमेश्वर!
आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुर्गुण,
दुर्व्यसन और दुखों को दूर कर दीजिए,
जो कल्याणकारक गुण,कर्म,
स्वभाव और पदार्थ हैं,
वे सब हमको प्राप्त कराइये।

स्वामी दयानन्द सरस्वती

(1824–1883)

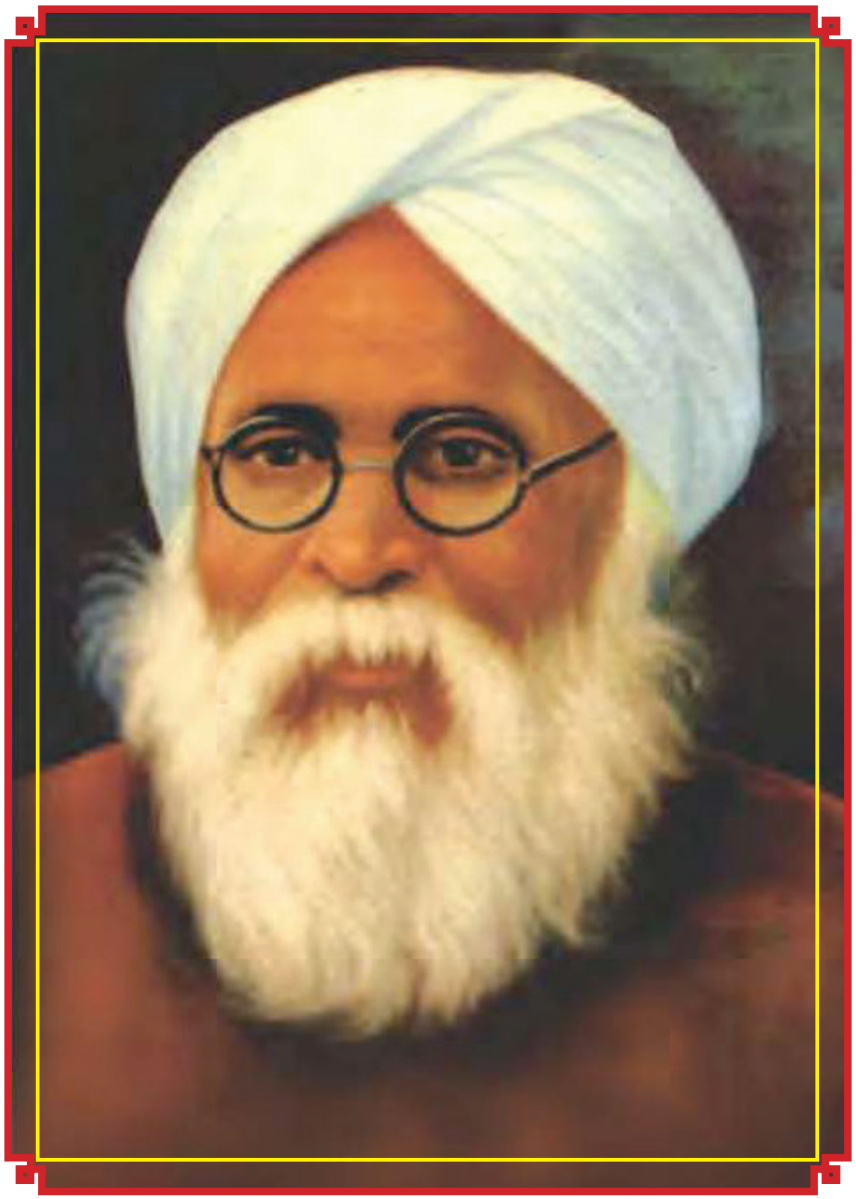

महात्मा हंसराज

(1864–1938)

प्रो. (डॉ.) रमा
प्राचार्या, हंसराज कॉलेज

हंसराज कॉलेज ने अपनी गरिमामयी यात्रा के 75 वर्ष पूर्ण कर लिए हैं। स्थापना के अमृत वर्ष में कॉलेज ने अनेक अकादमिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से इस अवसर को यादगार बनाने का सफल प्रयास किया है। हंसराज कॉलेज निरंतर विद्यार्थियों की रचनात्मकता को दिशा देने के लिए प्रयासरत रहा है। इस सन्दर्भ में अनेक प्रकार की गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं आदि के आयोजन से विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान किया जाता रहा है।

हंसराज कॉलेज की रचनात्मक परंपरा का एक महत्वपूर्ण पक्ष इसकी वार्षिक पत्रिका 'हंस; भी है। 'हंस' एक बहुभाषी पत्रिका है। हिंदी, अंग्रेज़ी और संस्कृत भाषाओं की रचनाएँ इसमें प्रकाशित की जाती हैं। साहित्य की विविध विधाओं कविता, कहानी, लेख, संस्मरण आदि के माध्यम से हंसराज कॉलेज परिवार के सदस्यों की रचनात्मकता को प्रकाशित कर उनकी साहित्यिक प्रतिभा को सामने लाने की दृष्टि से यह बेहद महत्त्वपूर्ण है। हंसराज कॉलेज की अब तक की यात्रा में 'हंस' निरतंर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह कॉलेज के युवा विद्यार्थियों के साथ ही रचनात्मक लेखन में रूचि रखने वाले प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के लिए भी एक विशेष मंच है। इसमें छात्र और प्राध्यापक दोनों की रचनात्मकता एक साथ उद्घाटित होती है। इसके माध्यम से लेखन के क्षेत्र में नए लोगों को एक बेहतरीन मंच तो मिलता ही है साथ ही निरंतर लेखन की प्रेरणा और प्रोत्साहन भी मिलता है। विद्यार्थी जीवन में कॉलेज की पत्रिका में अपनी रचनाओं के प्रकाशन से जो विशेष आनंद प्राप्त होता है उसकी अनुभूति प्रायः हम सबको है।

हंसराज कॉलेज की पत्रिका में प्रकाशित होने वाले अनेक विद्यार्थी आगे चलकर साहित्य, सिनेमा, मीडिया, कला आदि क्षेत्रों में अपना विशिष्ट मुकाम हासिल करते रहे हैं। ये सभी आज अलग-अलग क्षेत्रों में जिस तरह सफलता की चोटी पर खड़े हैं उसमें हंसराज कॉलेज और 'हंस' पत्रिका में उनकी रचनात्मकता के प्रकाशन का विशेष योगदान है।

कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'हंस' इस वर्ष का अंक आपके सामने है। इस अंक में परम्परागत स्वरुप और नए भावबोध से युक्त विशिष्ट रचनाओं को शामिल किया गया है। इसके साथ ही पेंटिंग आदि का भी सुंदर संयोजन किया गया है। इस अंक में प्रकाशित होने वाले विद्यार्थियों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ। 'हंस' के इस अंक के संपादक मंडल को भी मैं हृदय से बधाई देती हूँ और सभी रचनाकारों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ।

डॉ. विजय कुमार मिश्र
संयोजक, प्रकाशन समिति

हंसराज कॉलेज की सुदीर्घ और गौरवशाली यात्रा में हमारी वार्षिक पत्रिका 'हंस' का विशिष्ट स्थान है। इसके माध्यम से देश-दुनिया के सम्बन्ध में हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के अनुभव, दृष्टिकोण और संवेदनाएँ विविध साहित्यिक विधाओं के माध्यम से प्रकाशित होती रही हैं। उनकी भावनाओं, विचारों, रचनात्मकता आदि के प्रकटीकरण का एक बेहद शानदार मंच है 'हंस'। इसके माध्यम से समय-समय पर विद्यार्थियों के द्वारा बनाए गए चित्र आदि के माध्यम से भी उनके भाव को विस्तार मिला है। कक्षाओं की औपचारिक शिक्षा प्रणाली और नियमित पाठ्यक्रम के मध्य इस प्रकार की रचनात्मक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के समग्र विकास की दृष्टि से बेहद महत्त्वपूर्ण सिद्ध होते हैं।

संपादक मंडल ने विद्यार्थियों की रचनात्मकता को कविता, कहानी, लेख, समीक्षा, चित्र, फ़ोटोग्राफ आदि के माध्यम से 'हंस' के इस अंक में आपके समक्ष प्रस्तुत किया है। इसमें प्रकशित हिंदी, अंग्रेजी एवं संस्कृत तीनों भाषाओं की रचनाएं हंसराज कॉलेज के विद्यार्थियों की भाषाई और रचनात्मक विविधता का द्योतक है। रचनाएं आमंत्रित करने से लेकर, उनके चयन, प्रूफ और संपादन आदि की दृष्टि से संपादक मंडल के सदस्यों ने जो श्रमसाध्य कार्य किया है, वह अभिनंदनीय है। 'हंस' का प्रकाशन हमारे संपादक मंडल के सदस्यों के साथ ही प्रशासनिक कर्मचारियों के सहयोग के बिना संभव नहीं था। ऐसे सभी लोगों का हृदय की गहराईयों से आभार।

कॉलेज की प्राचार्या प्रो. रमा ने हमेशा की तरह इस बार भी समुचित मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से इस अंक को अंतिम रूप देने में बड़ी भूमिका निभाई है। इसके लिए प्राचार्या महोदया का विशेष धन्यवाद।

आशा है 'हंस' का यह अंक आप लोगों को पसंद आएगा और आपकी रचनात्मक संतुष्टि की दृष्टि से भी यह बेहद उपयोगी सिद्ध होगा।

प्रकाशन समिति

डॉ. विजय कुमार मिश्र (संयोजक)

सुश्री माधवी मोनी

डॉ. प्राची देवरी

श्री आशुतोष यादव

डॉ. नीलाक्षी एन. के. बोरा

डॉ. सविता

डॉ. तेजवीर सिंह

PREETI SHAH
B.A. (Hons.) Hindi, III Year

हिंदी खंड

संपादक

डॉ. नीतू शर्मा

छात्र- संपादक

सुमित कुमार चौरसिया
शिवम यादव

विषयानुक्रमणिका

1. एक लड़का हूँ / खुशबू पाल ---- 10
2. ईश्वरीय प्रेम / मयंक ---- 10
3. एक नारी / भूमिका चौधरी ---- 11
4. तूफानों की ओर चली / अक्षिता कौशिक ---- 11
5. राम धुन / नितिश कुमार ---- 12
6. बचपना / बलजीत सिंह ---- 12
7. दिल्ली विश्वविद्यालय की अनोखी दोस्ती / धर्मेंद्र कुमार पाल ---- 13
8. एक रोचक यात्रा / आयुष श्रीवास्तव ---- 14
9. मेरे समय का साहित्यकार / राजवर्धन ---- 16
10. यातना और सहायता / निखिल श्रीवास्तव ---- 17
11. वक्त / अखिल जायसवाल ---- 19
12. इश्क / देवांश पुरोहित ---- 19
13. निरुत्तर / आशुतोष सिंह ---- 20
14. बातें / ऐशी मांडल ---- 20
15. इत्तफाक / पीयूष शाही ---- 21
16. बाबा कैसे करते थे / सलोनी भारती ---- 21
17. दर्द / रुद्र प्रताप सिंह ---- 22
18. मन:स्थिति / विकास ---- 22
19. अफजल का वध / हर्ष यादव ---- 22
20. पर्यावरण, मानव और विज्ञान / नितिन निहाल ---- 23
21. तिलिस्मकारी / आयुष आव्रत ---- 24
22. आधार / सारांश मिश्रा ---- 24
23. कुछ था जो अब नहीं रहा / विनम्र शर्मा ---- 25
24. अपने नगर / युगांश शर्मा ---- 25
25. सिया राम / गरिमा राघव ---- 26
26. सुबह / जयप्रकाश ---- 26
27. मरजाद की विरासत / आशीष कुमार ---- 27
28. माँ / युगांश शर्मा ---- 27
29. ये शहर मुझे पसंद नहीं / पल्लवी चौहान ---- 27

एक लड़का हूँ

खुशबू पाल
बी.ए. हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

लड़का हूँ, जिम्मेदारियां
बेहिसाब रखता हूँ
मुश्किलों में भी चेहरे पे मुस्कान रखता हूँ।

अपने सपनों को अंजुल में छुपाकर,
परिवार का सरोकार रखता हूँ।

हमारी भी ख्वाइशे है जिन्दगी से,
पर सब दिल में दबाकर रखता हूँ।

हमें भी मोहब्बत की तमन्ना है,
पर जज्बात सारे छुपाकर रखता हूँ।

हो ना जाए किसी को खबर,
इस डर से मुस्कान बेमिसाल रखता हूँ।

ईश्वरीय प्रेम

मयंक
बी .ए. इतिहास (विशेष)

ईश्वर है,ईश्वर क्या है
ईश्वर, ईश्वर नहीं है,
ईश्वर कहीं प्रेम ही तो नहीं है
अदृश्य, अपरिभाषित, निराकार है,
फिर भी सभी दिलों में साकार है।
कभी प्रकट होता है इश्क़, ममता, सौहार्द्र में,
कभी छुप जाता है घृणा, क्रोध, हिंसा की आड़ में।
ईश्वर, प्रेम ही तो है।

प्रेम अबाध्य है, असाध्य है,
प्रेम समर्पण होते हुए भी आज़ादी है,
मन की गति सा तीव्र है,
भावनाओं का बेहता हुआ नीर है।

जहाँ मौजूद है, ख़ुशी,
जहाँ गायब, वहाँ आतंक
वहाँ खुद में भी है, खुद से भी होता है,
ईश्वर, प्रेम ही तो है।

प्रेम बहुरूपी होते हुए भी एक है,
सदैव सरल व नैतिक बनाता,
सम्मान करना, परिवर्तन लाना सिखाता।
आखिर प्रेम ही तो दुनिया चलाता
नयी उत्पत्ति कराता, सबको बचाता
ईश्वर, प्रेम ही तो है।

प्रेम रहस्यमयी है, समय माँगता है,
कभी शर्माता, कभी खिल खिलाता है,
कभी रुलाता, कभी हँसाता है,
रोके नहीं रुकता है, जितना छिपाओ उतना दिखता है,
कभी प्रत्यक्ष, कभी अप्रत्यक्ष।
क्या आजतक कोई सच्चा प्रेम पाया है?
ईश्वर, प्रेम ही तो है।

किताबों, कविताओं, कहानियों में
मुझमें-तुझमें समाया
असंभव को संभव करता,
वही अकेला सत्य, वही ज्ञान,
वही प्रकट, वही अदृश्य,
सबमे मौजूद, कभी मिराज,कभी विश्वास
ईश्वर, प्रेम ही तो है।

प्रेम अजूबे करवाता,
कहीं मांझी से पहाड़ कटवाता,
कहीं जल में सेतु, तो कहीं ताज़ बनवाता।
प्रेम सबका एक नहीं, पंथ नहीं, समुदाय नहीं,
प्रेम एक ही है, फिर भी सबका अपना-अपना है,
प्रेम एहसास है, वही धर्म है, वही ईश्वर है।
उसे संजोना, दिल में बसाना,
फिर भी आज़ाद छोड़ना,
सच्चा प्रेम ईश्वर है।
ईश्वर, प्रेम ही है।

एक नारी

भूमिका चौधरी
बी.ए. हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष

आबरू तुम्हारे हाथ में,
हो घर की तुम फुलवारी,
छिपके रहना, बाहर न जाना, हँसेगी दुनिया सारी,
ना पिंजरे की चिड़िया ना खुटे की हूँ बकरी,
हाँ मैं हूँ एक नारी।

रसोई के हो या चूल्हे, हो दफ्तर या हो न्यायालय,
रानी लक्ष्मीबाई हो या सावित्री बाई फुले हो,
हर क्षेत्र में योगदान है भारी,
जी हाँ! मैं हूँ एक नारी।

ना शर्मा जी की बेटी, ना चिंटू की बहन,
है मेरी खुद की एक पहचान,
ना नारायण की लक्ष्मी, ना हूँ शिव की गोरी,
सर्वप्रथम मैं हूँ एक नारी।

डंका पीटे स्त्री वंदन का, मन में बातें खारी,
क्या खूब है क्या खूब है, समाज के अधिकारी,
सब करो, धीरज धरो, अब है मेरी बारी,
करनी है नष्ट पितृसत्ता की बीमारी,
क्योंकि मैं हूँ एक नारी।

तुमने रोका, तुमने टोका, समझा मुझे बेचारी,
प्रयास हुए विफ़ल तुम्हारे, जीत हुई हमारी,
बैठ गया गीदड छुपके, जब शेरनी दहाड़ी,
जी हाँ मैं हूँ एक नारी।

तूफानों की ओर चली

अक्षिता कौशिक
बी .ए. हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

भांप हवा की दिशा को उल्टी,
एक चिड़िया उसकी ओर चली।

आंधी का गिरेबान पकड़ने,
वो साहस लिए पुरज़ोर चली।

वो लड़ी, थकी पर रुकी नहीं,
वो गिरी, उठी पर झुकी नहीं।

एक स्थूल अभीष्ट निज मन में लिए,
रग रग में भर वो परवाज़ चली।

कठपुतली जैसे बिन डोरी हो,
कुछ वैसे अंतस की आस चली1

भांप हवा की दिशा को उल्टी,
एक चिड़िया उसकी ओर चली।

राम धुन

नितिश कुमार
बी .ए .हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

स्वागत लागी दुअरा सजल बा
बाजे सगरो बधाई, अवध में आवे ला रघुराई।
अवध में आवे ला दोउ भाई,
अवध में आवे ला रघुराई।
देखे खातिर आँख तरसे मनमा खुश होई जाई,
लंका विजय कर राम जी आवथ,
साथ में सीता माई, अवध में बाजे सगरो बधाई।
अवध में आवेला दोउ भाई...। आँख

नल - नील और अंगद आवें,
निषादराज भी भाई,
स्वर्ग से सुंदर लगे अयोध्या,
सब राम में हुई जाई।
अवध में आवे ला दोउ भाई, अवध में आवे ला रघुराई।

पुष्पक चढ़ विभीषण आवें,
साथ में सुग्रीव भाई,
बजरंगबली आवत अयोध्या, भगवा ध्वज लहराई।
अवध में आवेला दोउ भाई,
अवध में आवेला रघुराई...।

दुखियन के सब दुख हर लिहें, मोरे राम रघुराई,
रामराज फिर अईहें भईया,
सब मंगल होई जाई, अवध में आवेला रघुराई।
अवध में बाजे ला शहनाई,
अवध में आवे ला दोउ भाई।

बचपना

बलजीत सिंह
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

बचपना कटाक्ष अर्थ इस शब्द का
इतना भारी पड़ गया है
इसके मूल अर्थ पर
कि स्वाभाविकता स्वीकारने से संकोच होने लगा है।
अरे भाई!
बच्चे तो बचपना करेंगे ही
यह कह कर भी हम लेते हैं
उनकी पल पल परीक्षा
कभी धैर्य की, कभी संतोष की,
कभी स्वार्थ की, और भी कई।

खींचते है टांग, चुस्की लेते है
चाचा मामा और पड़ोस के अंकल
और इस सब में लाद देते हैं
उनके नाज़ुक कंधो पर
समझदारी का बस्ता;
निकल जाता है बचपन उन मुरझाए मासूमों का
चंचलता और सहज व्यवहार
की डगर पर संतुलन बनाते बनाते।

अब होने को तो सही भी हो यह सीख,
पर ये तरीके,
छोड़ जाते है बनावटीपन की दीमक
जो उम्रभर कुरेदती है विश्वास और सच्चाई को
यही है बचपना।

दिल्ली विश्वविद्यालय की अनोखी दोस्ती

धर्मेंद्र कुमार पाल
बी. ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले दो दोस्त राजेश और नेहा आर्ट फैकल्टी में बैठे बातचीत कर रहे हैं। दोनों दोस्त ऐसे है कि उन्हे कोई यह नहीं समझ सकता कि लड़का और लड़की बिना स्वार्थ के अच्छे दोस्त बने हैं, जिसे भारतीय समाज कभी स्वीकार नहीं कर पाता। दोनों देश विदेश, सामाजिक समस्याओं, कॉलेज पर विचार विमर्श कर रहे थे तो एकदम से नेहा को ख्याल आया या कुछ सोच विचार किया और फिर राजेश से पूछा क्या तुम मेरे घर चलोगे ? राजेश सोच में पड़ गया कि क्या जवाब दूँ ? क्या उसके घरवाले इतने समझदार होगे कि हमारी दोस्ती को समझ सके? लेकिन जैसा भी हो उसने अपनी अंतर्रात्मा से सोचकर कि यह दिल्ली है जो कि देश की राजधानी है और उसके घरवाले नौकरी में है तो समझदार होगे इसी वजह से हाँ कर दिया था।

नेहा ने एक दिन पहले अपनी माँ से पूछा था कि क्या मम्मी मैं अपने दोस्त को घर ला सकती हूँ? जो बहुत समझदार है और हम आपस में पढ़ाई भी करते हैं। उसकी माँ ने हाँ इसलिए कर दिया था क्योंकि उसे लगा कि वह किसी लड़की की बात कर रही है, समझने में दिक्कत हो गई थी। बात यह थी कि नेहा के भाई नहीं थे तो उसकी उससे लड़के की शैली में बात करती थी और लड़की भी लड़के की तरह जैसे मम्मी मैं आज स्कूल नहीं जाऊँगा। माँ का हाँ कहना इसी शैली का परिणाम था। अगर माँ को यह शैली भ्रमित न करती तो माँ उसे हाँ भी नहीं बोलती।

आज सुबह जब नेहा कॉलेज जाने के लिए तैयार हो रही थी तो उसने अपनी माँ से कहा था कि "आज मेरा दोस्त आयेगा, घर में साफ सफाई कर लेना और कुछ नाश्ते पानी की भी व्यवस्था कर लेना। अब नेहा और राजेश शाम को कॉलेज की पढ़ाई-लिखाई के विषय में विचार-विमर्श करते हुए नेहा के घर जा रहे हैं। विश्वविद्यालय से मेट्रो पकड़कर आधे घण्टे में घर पहूँच गए। जब नेहा ने घर की घंटी बजाई तो माँ ने बाहर आकर नेहा के साथ एक लड़के को देखा तो उनका दिमाक़ 360 डिग्री घूम गया। माँ इस सोच में पड़ गई कि मेरी बेटी इतनी बर्बाद कैसे हो सकती है जो हमेशा स्कूल में टॉप करती आई है। उसे दिल्ली विश्वविद्यालय पर क्रोध इसलिए आ रहा है कि यह विश्वविद्यालय कौन सी शिक्षा दे रहा है जो मेरी बेटी बर्बाद हो रही है। खैर जो भी हो जैसे तैसे नेहा की माँ अपने दिमाक़ को शांत करके उस लड़के से नमस्ते करके और बनावटी मुस्कान से अंदर प्रवेश करने के लिए कहती है। उसके लिए पानी लाया जाता है। राजेश इसलिए बेचैन है कि उसकी माँ परेशान दिख रही है। उसे लग रहा है कि कहीं कोई गलती तो नहीं कर दी उसने, कहीं अमीरी-गरीबी का फर्क तो नहीं। फिर भी वह समन्वय करने की कोशिश करता है। पहली बार कहीं ऐसे मेहमान बनकर गया है। घरवाले तो उसे बिल्कुल भी इज्ज़त नहीं देते थे, उन्हें लगता था कि ये लोगों से बात नहीं कर पाएगा। खैर जो भी हो वह आंटी से हालचाल पूछता है और उसकी बेटी की प्रशंसा करता है, जिससे कि कुछ माहौल में सुंदरता बढ़े।

नेहा की माँ चाय बनाने रसोई चल देती है और नेहा भी उसके पीछे पीछे क्योंकि नेहा को पता है कि राजेश ज्यादा मीठी चाय पीता है और उसके घर में कम मीठी चाय बनती है। माँ ने नेहा से कान लगाकर पूछा " बेटा सच सच बता ये सब कब हो गया ? और मुझे बताया भी नहीं अगर पापा को पता चल गया तो क्या होगा? " नेहा ने माँ को समझाया कि हमारी दोस्ती ऐसी नहीं है जैसा कि आप सोच रही है। हम दोनों पढ़ाई लिखाई की बाते करते हैं। राजेश ऐसा नहीं है, बेचारा बहुत शांत स्वाभाव का है। जैसा भी हो राजेश ने सुन लिया क्योंकि रसोई के पास ही बैठक था। वह सोच में पड़ गया कि अगर ऐसी बात थी तो वह नहीं आता, उसे नेहा ने क्यों बुलाया? लेकिन वह यह भी जानता था कि नेहा सामाजिक बुराईयों का विरोध करती तो हो सकता है बात बिगड़ जाती, इसलिए वह अपने घर पर परीक्षण करके देखना चाहती हो। अब राजेश चाय नाश्ता करके वहाँ से अपने रूम तो चला गया लेकिन वह इस बात को लेकर चिंतित है कि अगर दिल्ली जैसे महानगर में ऐसी सोच के लोग रहे हैं तो वह

फिर अपने घर के लोगों से इतनी आशा क्यों रखता था कि उसके घर के लोग जाति-पाति, छुआछूत, लड़का लड़की आपस में बात नहीं कर सकते ऐसी अनेक कुरीतियों से मुक्त हों। जिस घर में, गांव में सुबह से ही धर्मगुरु के चरणों को स्पर्श करके शुरुआत होती है, उस गुरु पर इतनी आस्था रखी जाती है कि वह कुछ भी कहे सत्य मान लेना है। वहीं सब कुछ जानते हैं, उन्हें ही भगवान ने सारा ज्ञान दे रखा है। ऐसे परिवेश में इतनी समझदारी की आशा रखना प्रायः निरर्थक है। अब जो भी हो राजेश को अपने घर पर, अपने गांव के प्रति इतना क्रोध नहीं है। वह जब घर से दिल्ली पढ़ने निकला था तो उसकी इच्छा थी कि वह एक दिन गांव में क्रांति ला देगा, जैसे कि बड़े बड़े शहरों में होता है। लेकिन आज महानगर की वास्तविक दशा को देखकर शांत चित्त पड़ा है। अब वह गांव में क्रांति लाने की बात कैसे सोच सकता है? अंदर बेचैनी बढ़ती जा रही है। आज पूरी रात जगराता किया क्योंकि चिंता की हद सीमा से परे थी। सुबह सात बजे भी वह उसी अवस्था में चित्त पड़ा था, जैसे रात को नौ बजे।

जब सुबह नेहा का कॉल आया कि कॉलेज चलना है, तब वह भी थोड़ा सा हिला पर वह कॉलेज जाने की बात तो भूल ही गया था। जल्दी से तैयार होकर कॉलेज के लिए निकल पड़ा, रास्ते में ही नाश्ता किया। आज सुबह जब नेहा और राजेश कॉलेज में मिले तो दोनों में एक अंतराल की खाई नज़र आ रही थी। दोनों एक दूसरे को जानते हुए भी अंजान नज़रों से बातचीत कर रहे थे। नेहा भी परेशान थी कि राजेश को माँ का व्यवहार अच्छा नहीं लगा होगा। उसे लग रहा था कि राजेश और उसके बीच एक खाई पैदा हो गई तो उसे दूर करना मुश्किल हो जायेगा। जो भी हो नेहा ने राजेश को प्रसन्न करने के लिए पूछ ही लिया था कि कल का दिन अच्छा रहा न लेकिन आज राजेश की मुस्कराहट में बनावटीपन साफ नज़र आ रहा है।

नेहा ने राजेश से पूछ ही लिया था "आज इतने परेशान क्यों दिख रहे हो? आंखों में लाल पारा भी चढ़ा है, क्या बात हो गई?" राजेश ने फिर बनावटी मुस्कराहट से जवाब दिया "मुझे कल आपके घर जाकर बहुत अच्छा लगा, आपकी मम्मी का स्वाभाव बहुत अच्छा है, मेरा स्वागत भी बढ़िया किया गया, मजाक में मैं तो इतने सम्मान का हकदार भी नहीं था।"

नेहा को ये जवाब सुनकर समझ आ गया था कि कल की वो बात उसे परेशान कर रही है। उसने राजेश को समझाया कि हम तो समझदार है ना, दुनिया से क्या लेना देना, समाज तो गलत सोचता ही है। मेरी माँ भी बात तो बहुत अच्छी किया करती थी, उनकी बातों से लगता था कि शायद वो अन्य लोगों से अलग है, लेकिन जब खुद को बात आई तो उनका वास्तविक चेहरा भी नज़र आ गया। कहना आसान होता है, लेकिन खुद लागू करना बहुत मुश्किल। अब जो भी आपके साथ हुआ उसके लिए मैं क्षमा माँगती हूँ। हम तो समझदार है न, आप पीछे की बात को भूल जाओ।

एक रोचक यात्रा

आयुष श्रीवास्तव
बी. ए. दर्शनशास्त्र (विशेष) द्वितीय वर्ष

हॉस्टल से घर आने के लिए रवाना हुआ तो सोचा इस बार मेट्रो से नहीं मोटरसाइकिल से स्टेशन तक जाता हूँ, क्या कहें कि चांदनी चौक की गलियों से निकलने में उतना ही वक्त लगता है जितना मेरे पिताजी का मोटरसाईकिल स्टार्ट करने के बाद पहले गेयर से दूसरा गेयर बदलने में। दिल्ली स्टेशन के बाहर बहुत भीड़ थी और उधर ही कोने में एक रेलिंग से टिक कर एक बूढ़ा बाबा अपने पास चार केले लिए बैठा हुआ था। एकाएक एक बंदर पीछे से आया और उसके केले उठा के भाग गया। अब वह बूढ़ा बाबा क्या उठता, कहां भागता, सो चिल्ला कर रह गया। मैंने भी सोचा कैसा बेशर्म बंदर था। और फिर दूसरा ख्याल था कि अगर बंदरों में शर्म होती तो क्या इंसान बनते। आगे बढ़कर ट्रेन की चारों ओर से बंद कोच में ही पूरी रात बसर करनी पड़ी। अपने बैग को जैसे तैसे ऊपर वाली बर्थ पर चढ़ाकर मैं भी सकुशल चढ़कर बैठ गया। जब कभी अपने को चढ़ता देखते हो और आप बग़ैर फिसले एक बार में सफ़ाई से मुक़ाम हासिल कर लें तो ख़ुद को बछेंद्री पाल समझना मैं जायज़ ही समझता हूँ। शुरुआत में ज़रा टेंशन तो थी कि इतना बड़ा सफ़र कटेगा कैसे, मगर फिर मैंने फ़ोन खोला

और कैलकुलेट किया कि आधी वेब सीरिज़ तक झांसी पहुंच जाऊँगा। 20 मिनट ही हुए थे कि फ़ोन मेरे हाथ से छूटकर मेरे मुँह पर आ गया और मुझे एहसास हुआ कि मैं सो गया था। चोरी के डर से फ़ोन को जैकेट की अंदर वाली पॉकेट में डाला और पुन: सो गया। बीच में स्टेशन के छूट जाने के डर से तीन चार बार झटके से उठा तो सही मगर एक भी बार अंदाज़ा सही नहीं था। ख़ैर आ गया झांसी। यहां से उरई के लिए दूसरी ट्रेन पकड़नी पड़ती है। 2 घंटे का सफ़र है। सूरज भी उफ़क़ पर था। चांदी सी रोशनी से भरे बादल छाए हुए आसमान में और भीनी भीनी ठंडी हवा इसके साथ घर वापसी का भाव, इन सब ने मुझे रोमांचित कर दिया। लंबा मुँह करके और आसपास के लोगों को गहरी निगाहों से देखकर आगे उरई की ट्रेन की ओर बढ़ने लगा। मानो किसी कहानी का कोई मुख्य किरदार, जो इश्क़ में नाकाम रहा अब अपने आप को अकेला करने कहीं बहुत दूर किसी दश्त में आवारा होने जा रहा है। यह सफ़र भी मुकम्मल हुआ। अपने शहर में पहला क़दम एक उल्लास से भर देता है। 'अपना शहर' में 'अपना' शब्द का भाव शहर से दूर रहकर ही आता। ट्रेन से उतरते ही गहरी सांस ली बैग कंधे पर रखकर बढ़ गया। प्लेटफार्म पर कई बेघर सोए हुए थे। एक अच्छी बात थी कि उन सब पर कंबल डाले थे। उन कंबलों पर बड़े अक्षरों में दान करने वालों का नाम आप बड़ी आसानी से देख सकते हैं और उन्हीं कंबलों के एक कोने में कुत्ते के बच्चे अपना मुँह छुपाए लेटे थे। सुबह के 4:00 बजे थे और रिक्शा मिलने की तो कोई उम्मीद ही नहीं थी।

किसे कॉल करके बुलाऊंगा यही सोचते सोचते निकल रहा था कि निकास पर टी.सी. दिख गया। मैंने टिकट निकालने का सोचा मगर उसने मुझे ऐसे जाने का इशारा किया और इतनी ज़हमत भी नहीं करनी पड़ी। शायद मेरे भद्र कपड़े या मेरा मुँह का नक्शा बताता हो कि मैं कानून का उल्लंघन नहीं कर सकता। मगर हक़ीक़त में मेरे पास टिकट था नहीं। ख़ैर आगे बढ़ा तो देखता हूँ कि 4:00 बजे भी रिक्शे वालों का जमावड़ा था। उनमें से एक मुझे पकड़ कर अपने रिक्शे में ले गया। कुछ समय में रिक्शा भर गया और हम रवाना हुए। सिर उठा के मैंने रास्ता देखा तो मेरी नज़र पड़ी कि पूरी राह "विजय चौधरी (पूर्व चेयरमैन) के होर्डिंग्स से भरी पड़ी है। ख़ैर यह तो कोई नई बात नहीं है। कई सालों से उरई के पेड़, पेड़ों की शाखें; तालाब, तालाब के किनारे रखी कुर्सियाँ; रोड और उस पर लगे खंभे; गलियाँ और गलियों के मकान और अब तो ज़मी हो आसमां भी 'विजय चौधरी' के पोस्टरों से भरे रहते हैं। कई साल पहले यह चेयरमैन बने थे और तब से लेकर अब तक हमारी आंखों का पीछा नहीं छोड़ रहे हैं। मौसम आते हैं, मौसम जाते हैं, मगर ये शख़्स "आपका हमारे शहर में स्वागत है" करना नहीं छोड़ते। ना तो उनकी दाढ़ी का रंग बदलता है और ना ही खंभे से नीचे उतरने की तमन्ना होती है। इनके जज्बे को सलाम करूँ या इनके निहायती नालायक पन पर तरस खाऊं। आख़िर कोई इतने सालों 'पूर्व चेयरमैन' बनकर कैसे टंगा रह सकता है। कोई पूछे कि क्या करते हैं तो कहते होंगे: "हम दरअसल स्वागत करते हैं"। ख़ैर नई बात यह हुई कि महाशय 'भाजपा' में सम्मिलित हो गए हैं। किसी ज़माने में 'बसपा' के पुराने खिलाड़ी अब 'भाजपा' के आदरणीय सदस्य है और सम्मान का पात्र है। आख़िर क्यों न हो, अपनी राजनैतिक सोच और अपना मक़सद बदलना आसान थोड़ी है। 'भाजपा' की इंक़लाबी दौड़ में शामिल होने के लिए कितना जज़्बा लगा होगा और सबसे मुश्किल होगा अपनी ही पार्टी के ख़िलाफ़ खड़े होकर उसकी ख़ामियाँ गिनवा कर अलग होना। मैं तो बहुत ही प्रभावित हुआ और पूरे रास्ते देखता आया कैसे 'भाजपा' के उभरते हुए सितारे 'आपका' मजबूत नेतृत्व और अडिग स्वाभिमान की क्षत्रछाया पा कर आनंदित हुए जाते हैं।हर प्रकार के युवा नेता पार्टी अध्यक्ष, समिति अध्यक्ष, युवा नेताओं के युवा अध्यक्ष और उनके भी अध्यक्ष, पार्टी प्रधान, युवा नगर अध्यक्ष, युवा मोहल्ला अध्यक्ष, अधिपति, सभापति, श्रीपति, स्वामी पति, श्रीमती और तमाम पार्टी मुख्य हमारे पूर्व चेयरमैन को उनकी पार्टी में शामिल होने की बधाई एवं धन्यवाद करते हुए हर कण हर कोने पर अपनी होर्डिंगस लगवाए हुए हैं।विजय चौधरी पूरे रास्ते हमसफ़र रहे। स्टेशन से मेरा घर 5 से 6 कि.मी. दूर है। रिक्शे से उतरकर उसे 20 का नोट दिया और पांच वापस लेने के लिए खड़ा रहा। और सिक्का लेकर घर की ओर निकल गया। दिमाग कई उधेड़बुन में था। घर आ गया मैंने घंटी बजाई माँ ने अंदर से आवाज लगाई 'भैया' तो मैंने पलट के जवाब दिया 'हां मम्मी' दरवाज़ा खुला तो सामने वह खड़ीं थीं। उन्हें देखकर यकायक ख़्याल आया कि जितनी बार लौटता हूँ हर बार कुछ न कुछ नया होता है इस शहर में बस जो नहीं बदलता वह है विजय चौधरी की दाढ़ी, स्टेशन पर सोए बेघर लोग, शराब ख़ाने जाते लोग, पिताजी की भौहें और माँ की आँखें।

मेरे समय का साहित्यकार

राजवर्धन
बी . ए . हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

लोगों के पास अपनी कला एवं भावनाओं को अभिव्यक्त करने के अनेक ज़रिए हैं, परंतु आज भी साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अपनी भावनाओं को कागज़ पर उतार देना सबसे सशक्त ज़रिया माना जाता है और मेरे समय का साहित्यकार इसका सुंदर उपयोग करने में माहिर है।

आज के इस आधुनिक समय में भी जहां लोग केवल मनोरंजन हेतु सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं, मेरे समय का साहित्यकार उनमें से है जो अपनी लेखन शैली के बलबूते पर लोगों को सोंचने पर विवश कर देता है; जिसका नाम है – आशी। उनके साहित्य पर चर्चा करने से पहले उसकी पृष्ठभूमि पर चर्चा करना आवश्यक है ताकि उसकी शुरुआती साहित्यिक प्रेरणाओं पर थोड़ी रौशनी पड़े। आशी ने अपनी बारहवीं तक की शिक्षा 'संत जेवियर स्कूल, हजारीबाग (झारखंड)' से प्राप्त की है और वर्तमान में वह अपनी बी.टेक की पढ़ाई 'सप्तगिरी कॉलेज आफ इंजीनियरिंग, बेंगलुरु (कर्नाटक)' से पूरी कर रही है1

साहित्य में सर्वप्रथम रुचि का अनुभव उसे कक्षा आठवीं में हुआ जब 2017 में उसने 'वाग्मिता प्रतियोगिता' में भाग लेकर गुलज़ार साहब की कविता – 'पिछली बार भी आया था तो'सुनाई। परंतु कविता छोटी होने के कारण प्रतियोगिता जीत नहीं पाई। यहीं से कविता में उसकी रुचि बढ़ी और गुलज़ार की इसी कविता में उसने अपनी दो मौलिक पंक्तियाँ जोड़कर अपनी पहली कविता लिखी जो इस प्रकार हैं __

"ऊँचाईयों पर आना पसंद है तुम्हें,
हो भी क्यों ना, आदत जो है जीतने की,
देख मैं भी खड़ा हूं,
सबसे ऊँचा, तुम सब से ऊँचा,
लेकिन मुझे यहाँ जीत मिलती नहीं, दिखती है,

दिखती है उसकी खुशी।
आओ, तुम भी आओ इस ऊँचाई पर,
क्या पता इस बार हार में भी,
तुम्हें जीत की खूबसूरती दिख जाए।
हां बहुत कोशिश की सरोवर बनने की,
पर ऊँचा बन न सका।
कोशिश की मौसम बनने की,
पर रिश्ते निभा न सका।
बस पता नहीं था कभी कि,
हवाओं का भी एहसास होगा, सुकून का भी,
मेहनत का भी एहसाह होगा, दर्द का भी।

बस आंखें बंद कर सपने देखते रह गया मैं,
इसी पहाड़ के नीचे,
पिछली बार भी आया था तो।"

उसकी इस कविता के कारण उसे माता-पिता, दोस्तों एवं शिक्षकों; सभी से प्रोत्साहन मिला जिससे उसकी साहित्यिक विधाओं में दिलचस्पी बढ़ती चली गई।आशी जीवन की भिन्न परिस्थितियों को आधार बनाकर रचनाएं करती है और उसने लगभग सभी साहित्यिक विधाओं (कविता, कहानी, अनुच्छेद, उपन्यास, गीत आदि) को हिंदी एवं अंग्रेजी, दोनों ही भाषाओं में अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है।

साहित्य के संदर्भ में उनका यह मानना है कि रचनाकार्य चित्त एवं हृदय, दोनों को शांत कर देता है और यह मनोभावों की अभिव्यक्ति का प्रमुख आधार है। साथ ही यह जीवन को देखने का एक नया नज़रिया प्रदान करता है और समाज में घट रही घटनाओं पर टिप्पणी का अनोखा ज़रिया भी है। इसके अतिरिक्त, लोगों के साथ जुड़ने का एवं तादात्म्य स्थापित करने का भी यह प्रमुख आधार है। साहित्य का दायरा बड़ा ही विस्तृत और विशाल है और इससे लोगों का एक बड़ा तबका जुड़ा है, परंतु साहित्य का लाभ होने के साथ-साथ कई चुनौतियों का भी सामना करना पड़ता है जिनमें 'सहिष्णुता' एक बड़ी चुनौती है। साहित्यिक रचनाएं धैर्य एवं सहिष्णुता की मांग करती है और इसमें काफी समय लगता है। अतः यह सबके बस की बात नहीं है।

इसके साथ ही अपनी रचनाओं को प्रकाशित करवाना बहुत मुश्किल होता है। उदाहरण के लिए – लगभग 20 - 30 जगहों पर भेजने पर केवल 2 -3 जगहों पर ही प्रकाशन संभव हो पाता

है। साहित्यिक रचनाएं आत्मनिष्ठ होती हैं, जिस कारण से पसंद-नापसंद व्यक्ति-व्यक्ति पर निर्भर करता है। हिंदी साहित्यिक रचनाओं का प्रकाशन अंग्रेज़ी की तुलना में कफी कठिन होता है क्योंकि इससे जुड़े लोग काफी परिपक्व होते हैं जिस कारण से नए रचनाकारों को कम मौका मिल पता है। केवल यही नहीं, अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी के नि:शुल्क मंच जहां रचनाओं का प्रकाशन होता है, काफ़ी कम हैं और भाषाई सीमाओं के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अंग्रेज़ी की तुलना में हिंदी का वर्चस्व सीमित है। साहित्य और रचनाकार के आने वाले भविष्य को लेकर उसका यह कहना है कि सोशल मीडिया के कारण कई नए रचनाकारों को विशाल स्तर पर पहचान मिल रही है और आगे भी मिलेगी, जो पहले संभव नहीं था। सोशल मीडिया के कारण आज के युवा भी साहित्य से काफी जुड़े रहते हैं और नए रचनाकारों का खुलकर सहयोग भी करते हैं। अब सभी के पास मोबाइल फोन होने के कारण जो साहित्य से अंजान थे, वे भी इससे जुड़ते जा रहे हैं, जिनमे हमारे माता-पिता भी शामिल हैं जो फेसबुक आदि के माध्यम से साहित्य से अपना लगाव बनाए रखते हैं और भविष्य में और भी लोगों की जुड़ने की संभावना है।

साहित्य के संदर्भ में अपने भविष्य को लेकर उसका एक सकारात्मक दृष्टिकोण है और वह यह मानती है कि निश्चित ही भविष्य में उसे सफलता मिलेगी। उसे खुद पर और अपनी रचनात्मकता पर खूब मेहनत करनी है ताकि उसकी रचनाएं और भी निखर कर सामने आ सकें। इसके अलावा भविष्य में विज्ञापनों के लिए आकर्षक उद्धरण लिखने का भी उसका खूब मन है।

साहित्य को लेकर उसका सुझाव कुछ इस प्रकार है – साहित्यिक मंचों की संख्या बढ़नी चाहिए जो नए रचनाकारों के लिए नि:शुल्क और सहायक हो। नए साहित्यिक मंचों को लेकर जागरूकता फैलानी चाहिए ताकि उन नए रचनाकारों तक बात पहुंचे जो अपने कलात्मक प्रदर्शन हेतु इच्छुक हैं। इसके साथ ही कविता, अनुच्छेद, कहानी, गीत, उपन्यास जैसी अन्य साहित्यिक विधाओं को सीखने हेतु प्रयासों को और बढ़ावा देना चाहिए ताकि वे लोग जो साहित्यिक विधाओं में रुचि रखते हैं, इन्हें सीख पाएं और अनुभवी कलाकारों के लिए यह एक कमाई का ज़रिया भी बन सके।

अंत में, उभरते कलाकारों को प्रेरित करते हुए आशी द्वारा लिखित कुछ पंक्तियां इस प्रकार हैं -

"सामने कतार लंबी है,
लंबी उतनी ही पीछे।
मंजिल सामने पुकार रही,
पर चिंता पीछे खींचे।
डर मत, बढ़ते जा
कदम बढ़ा और चलते जा।
अब खोल के पंख अपने,
इस आसमान को दिखाते हैं।
हम किसी से काम नहीं,
चलो, कुछ कर दिखाते हैं।

यातना और सहायता

निखिल श्रीवास्तव
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

दुनिया जैसे-जैस आगे बढ़ रही है। वक्त के पहिये की चाल आज भी वही है जैसी पहले थी किंतु उसी चाल से जैसे-जैसे वक्त की गाड़ी आगे बढ़ रही है बहुत कुछ बदल रहा है। ज़माना बदल रहा है, लोग बदल रहे हैं, शिक्षा बदल रही है, यहाँ ज़िंदगी जीने का सलीक़ा बदल रहा है।आदमी की ज़िंदगी से सादापन, व्यवहारिकता और सभ्यता जैसी बातें जैसे गायब ही हो गई हैं चलती-फिरती ज़िंदगी में आज बहुत कम ही लोग मिलते हैं जिनके पास अभी सोचने-समझने की शक्ति पर्याप्त मात्रा में मौजूद है। ऐ खुदा मुझको शिकायत है तेरी मखलूक से, इश्कबारी देख जो रोती नहीं मगरूर हो। फूलदेवी अपने पति गणेश के साथ नेपाल से भारत आ, दोनों कुछ कमाने के लिए अपने जीवन को और आसान एवं सुविधाजनक बनाने की इचिछाओं को थामें उत्तराखंड के चमोली जिले में बस गए, क्योंकि उनके पास अपनी कोई जमीन जायदाद नहीं थी और न ही उन्हें विरासत में कुछ मिला उनकी खुद की जिंदगी उनके ही ऊपर भार थी क्या करें कहाँ जाएं कुछ समझ नहीं आ रहा था। कहने को इक्कीसवी सदी का दूसरा दशक खत्म हो चुका है दुनिया विकास के रथ पर चढ़कर आधुनिकता की सीढ़ी चढ़ रही है लेकिन एक तरफ

मजबूरी के कारण पैसा कमाने औसतन ग्रामीणों को शहरों की शरण में आना पड़ता है शहरों में इतनी आबादी होती जा रही है कि जैसे लगता है, मवेशियों का रेवड़ हर जगह विद्यमान है। खैर मैं अपनी कहानी पर आता हूँ। फूल का पति गणेश बहुत आलसी प्रवृत्ति का व्यक्ति था उसे नशा करने में बेहद आनंद प्राप्त होता था पर अभी तक उसकी ऐसी हिम्मत नहीं रही कि वो खुद जब चाहे ऐसा परम सुख भोगता रहे खैर फिर भी वह जहाँ रहता अपनी अय्याशी के लिए कोई-न-कोई मंडली खोज ही लेता था किंतु उसे अपनी पत्नी की कोई परवाह नहीं रहती थी चाहे खाए चाहे उपवास रखे। चमोली में उन्होने एक किराये के मकान में जैसे-तैसे रहना शुरू किया किंतु कोई खबर नहीं थी कि महीने के आखिर में किराया कैसे अदा करेंगे। पति ने जैसे-तैसे अखबार बेचने वाली नौकरी ढूँढ़ ली। गणेश संघर्षपूर्ण नौकरी करता था अखबार बेच-बेचकर जो पैसा कमाता था उसे भी अपनी अय्याशी में उड़ा देता था पत्नी उससे खौफ खाती थी फूल की जिंदगी आज चार सौ वर्ष पुरानी शोषित महिला की तरह थी। चमोली में बसने के एक वर्ष बाद और उनके विवाह के दूसरे वर्ष फूल को एक बच्ची हुई। उसका नाम उन्होने प्रीती रखा। किंतु इससे गणेश को कोई प्रसन्नता नहीं थी पुरुष प्रधान सोच वाले व्यक्ति के मन में लड़की की जगह कहाँ होती है आज लड़कियाँ सेना तक में अपना लोहा मनवा रही हैं पर उसको क्या। गणेश को तो मात्र अपने सुख के विषय में पड़ी रहती थी। इससे आप समझ सकते हैं कि एक परिवार संभालना कोई खेल नहीं हैं बेहद जिम्मेदारी का काम है। गणेश पत्नी की ही कोई फिकर नहीं करता था तो बच्ची की क्या मजाल। उसके दूध आदि की जरूरतों पर खर्चा करना भी गणेश फिजूलखर्ची समझता था वह नशे के जाल में फँस गया था शायद उसकी प्रवृत्ति ही बेकार रही होगी मैंने नशेबाज को भी नशा उतर जाने के बाद संवेदनशील होते देखा है। फूल स्वयं भूखा रह सकती थी मगर अपनी बच्ची के लिए सामान कहाँ से लाती। उसके लिए दूध कपड़े जैसी चीजें खुद कहाँ से लाती। इस वजह से फूल और गणेश के बीच अब रोजाना चिक-चिकबाजी होने लगी जिसका परिणाम मात्र यही होता कि फूल को मार-पीट जैसी यातनाएं सहनी पड़ती। वह अंदर से टूट रही थी। एक दिन उसके फिरे हुए पति का मस्तिष्क न जाने कहाँ फिर गया कि उस कुबुद्धि और पागल पति ने रात के अंधेरे में बर्फीली कपकँपा देने वाली ठंड में लड़-झगड़कर अपनी पतिव्रता पत्नी को बड़ी बेरहमी के साथ घर की चौखट से धकेल दिया और खुद शराब के नशे में धुत्त हर चीज़ से बेखबर सोता रहा न जाने उसकी मानवीयता कहाँ घास चरने चली गई थी। फूलदेवी अपनी गोद में बच्ची को थामे कपकपाती ठंड में कई दिन और कई रात बेचारी दर-दर भटकती रही। जब कोई आसरा नहीं मिला तो उसने अपने गाँव जाने का विचार बनाया हालांकि गाँव में भी उसका न कोई घर था न परिवार वह महिला दर-दर भटकती किसी की कृपा का सहारा खोज रही थी, कोई आसरा खोज रही थी जहाँ वह अपनी जिंदगी बसर कर सके जहाँ वह खुद का और अपनी बेटी का पेट पाल सके। बड़ा दुख होता है यह स्वीकारते हुए कि ऐसी घटनाएं किसी की कोरी कल्पनाएं नहीं बल्कि समाज की सच्चाई है। फूल का गाँव नेपाल के काठमांडु में स्थित था। फूल गाँव जाने के इरादे से सड़क पर निकली उसके पास तन पर कपड़ों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था। उसके सामने एक रिक्शा आकर रुका उसने रिक्शे पर बैठने के लिए कदम बढ़ाया और अपनी बच्ची के साथ रिक्शे में सवार हो गई। कुछ दूर चलने के बाद रिक्शे वाले ने किराया देने को कहा मगर फूल क्या कहती उसके पास तो एक तिनका भी नहीं था। वह चुपचाप मुँह नीचा किये बैठी रही जब दो बार किराये के जवाब में फूल ने कुछ नहीं कहा तो रिक्शाचालक को क्रोध आ गया। रिक्शा वाला गरजकर फूल को गालियाँ सुनाने लगा और उसने बड़ी बेरहमी के साथ उस बेचारी को रिक्शे से उतार दिया और उसे अपशब्द सुनाते हुए आगे बढ़ने लगा। तभी रिक्शे में सवार एक महिला को उस बेचारी पर दया आ गयी। कहीं-न-कहीं इंसानियत अभी भी किसी कोने में मौजूद है जो कभी-कभी लोगों को झकझोरती है कुछ अच्छा करने के लिए जगाती है। रिक्शे में सवार महिला जिसका नाम चंचल था उसने रिक्शे वाले को समझाया और रिक्शा वापस उसी स्थान पर ले जाने को कहाँ जहाँ उस फूल को बेरहमी के साथ उतार दिया था वहाँ पहुँचकर देखा तो पाया कि बेचारी फल एक कोने में सड़क के किनारे बैठकर सिसक रही थी चंचल ने उसे संभाला और उसके आँसू पोंछकर रिक्शे में बैठाया और चमोली बस स्टॉप तक अपने साथ ले गई और चंचल ने रिक्शे के किराये के साथ-साथ एक हजार रुपये फूल के हाथ में रख दिये फूल रोती रही क्योंकि वह इस विपरित स्थिति में थी कि मदद पाने के बावजूद रोती रही उसको चुप कराकर चंचल ने उसे बस स्टॉप पर छोड़ दिया और आगे वह न जाने किस तरह अपने किस दर पर पहुँची होगी, पता नहीं।

वक्त

अखिल जायसवाल
बी. ए. हिन्दी (विशेष) प्रथम वर्ष

भूली शाम ने फिर से सुबह का मुँह दिखाया है।
चौखट पे घोंसला लटका है हारिल और परिन्दे का,
वक्त ने अभिनय किया किरदार हीरो और गुण्डे का।
अपनाए जो पैंतरे थे वह सभी अब कैद हैं,
जो वक्त ने अब तक छिपाये खुल गये वो भेद हैं।
हो रहे हैं जो प्रकाशित पृष्ठ मेरी पत्रिका के,
है वक्त भी जिससे सुगंधित वो अंश मेरी मृत्तिका के।
बादलों में अब तिमिर की आँख सी भर आई है,
और वक्त की नुमांइदा चाँदनी ने दिन में नहाया है।

विगत की आपबीती से अब सूर्य सा ढलने लगा हूँ,
वक्त के ताप से जलकर मैं खुद में ही मरने लगा हूँ।
सूर्य का सातवां अश्व भी अब पकड़ा ही जाएगा,
वक्त की जंजीरों में इंसान को जकड़ा ही जाएगा।
वक्त की बढ़ती लगाम ने बेकाबू घोड़े सा दौड़ आया है,
मुड़ते हुए गंतव्य ने हर मोड़ सा, मुड़ना सिखाया है।
वक्त के मौसम ए तबीयत में तरुणाई सी छाई है,
वक्त ने ही बेपीर और खुदरंग सा मरहम लगाया है।
वक्त के लहजे ने दर को खटखटाया है,

इश्क

देवांश पुरोहित
बी.ए. (प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

क्या गजब का इश्क़ है, मेरा तुम्हारा
क्या गजब वाबस्तगी है ये हमारी
राबता क्या है हमारा कौन जाने
कौन जाने दोस्ती मेरी, तुम्हारी।
दर्मियां मेरे तुम्हारे क्या कशिश है
वो जो चंदा और चकोरों में हो वैसी
कौन कह पाएगा ये शब्दों में यारा
है नहीं कुछ शब्दों के ये अर्थ जैसी
आसमानों ने लिखी है ये कहानी
खूब कुदरत ने इसे है गुनगुनाया
ऐसा लगता है कि जैसे तुमको मुझको
जोड़ती है इक रूहानी कोई काया
क्या गजब का इश्क़ है मेरा तुम्हारा
बादलों ने गीत जैसे कोई गाया
तारो ने हो टिमटिमाकर सुर सजाया
या कहे फूलों की फिर हो कोई माया
जुगनूओ ने तीरगी जैसे मिटाई
हो हवाओं ने फिजा में रंग घोला
तुम मेरी हो मै तुम्हारा हूँ ये हमसे
एक दिन चुपके से आकर चाँद बोला
क्या गजब का इश्क़ है मेरा तुम्हारा,
क्या गजब वावस्तगी है ये हमारी
राबता क्या है हमारा कौन जाने
कौन जाने दोस्ती मेरी, तुम्हारी।।

निरुत्तर

आशुतोष सिंह
बी.ए .(प्रोग्राम) तृतीय वर्ष

कितना अच्छा होता, यदि मैं स्पष्ट होता
मन और बुद्धि के बीच द्वंद न होता
कृष्ण की तरह में भी इनके भेद को समझता
लक्ष्य जानता, कर्म जानता और जानता योग
अगर जानता तो क्रोध,वात्सल्य का नही करता भोग
नही पालता रोटी और कोठी के लालच का ये रोग
परंतु माधव तो अवतारी थे, निराकारी थे,
क्या ये संभव है सामान्य के लिए
क्या ये संभव है, मुझ यौवन में मदमस्त विद्यार्थी के लिए
क्या ये संभव है, भूख से तिलमिलाए निर्धन के लिए
किस की तालाश में, सिद्धार्थ ने छोड़ा था घरबार,
जिसके लिए हर सन्यासी, कर देता है
समाज का परित्याग हरबार।।

क्या परमात्मा से मिलन के लिए समाज से विरक्त होना जरुरी है,
या इसके पीछे कोई छुपी हुई मजबूरी है,
क्या जो ये सब करता है, वो ईश्वर से मिल जाता है,
क्या जो ये सब करता है, वो कली से फूल की तरह खिल जाता है,
भय और लालच हमारे जीवन को चलाते हैं,
फिर क्यों यही हमें दुख और अवसाद की आग में झुलसाते हैं,
कहीं ये सब सोचना व्यर्थ तो नहीं
ईश्वर और अभौतिक की खोज निरर्थक तो नहीं !

बातें

असाई मोंडा
बी.एससी.(विशेष) मानव शास्त्र, तृतीय वर्ष

कभी कभी जी चाहता है बहुत - कुछ कहूँ
और कुछ सुनते ही रहूँ,
कुछ मेरी कुछ तुम्हारी,
कुछ उनकी जो हैं और जिनकी याद आती हैं - बातें,
कुछ कहकर भी न कही गईं
और जो चाहकर भी न सुनी गईं
कुछ जो मन हलका करें,
और जो आँखों में आँसू लाऐं
कुछ जो गुदगुदाएं और कुछ जो दिल दुखाएं - बातें,
कुछ रिश्ते बनाती - बिगाड़ती
कुछ आँसूं पोछतीं और सहलाती
न जाने ऐसी कितनी बातें है
हर दिन कुछ नई और यादों से भरी कुछ पुरानी - बातें,
बातें जो पुकारती जो हिम्मत भरती
कुछ जो राह दिखाती और बातें जो रंग भरती
एक पिटारा जिसे खोलते ही जीवन बदल जाता है
कुछ बातें सुनने - सुनाने में बड़ा मज़ा आता है
सच, वो बातें ही तो हैं जिसके सागर में डूबने को मन करता है
बातें, जिनकी छाया तले राह चलता कोई अपना- सा लगता है
कभी लगे यूं कहते कहते शाम ढल जाए
बस एक कप चाय पे कुछ बातें हो जाए
मेरी, तुम्हारी, कुछ उनकी जो है और जिनकी याद आती है - बातें,
जिसे इंतजार है तुम्हारी बातों का ?

इत्तफाक

पीयूष साही
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

गुलों का खिलना इत्तफ़ाक है,
तेरा मेरा मिलना इत्तफ़ाक है।
यादों की होती नहीं तस्वीरें,
मिलना बिछड़ना इत्तफाक है।

तितलियों से रंग उधार लेकर,
तेरा खिलना संवरना इत्तफ़ाक है।
मेरे हिस्से बस एक बोसा था तेरा,
बाकी जो मिल जाए इत्तफ़ाक है।

हथेलियों को नहीं आज़ादी यहां,
जो हाथों में हाथ आए इत्तफ़ाक है।
घूँघट उठाना तक तो मुक्कदर में है,
देख जो वो मुस्कुराए इत्तफ़ाक है।

बिछड़ गए लोग वास्ता देकर जो,
अगले शहर मिले तो इत्तफ़ाक है।

बाबा कैसे करते थे?

सलोनी भारती
बी.ए. अंग्रेज़ी (विशेष) द्वितीय वर्ष

जलता है मशाल इक सीने में
मेहनत है खून-पसीने में
कद छोटा पर उबाल खून में
जुबाँ पर तलवार वो रखते थे
मैं इतने में ही थक गई
बाबा कैसे करते थे?

उनकी तकलीफें, उनके आँसू, मेरी आँखों में न ज़ाहिर थे
कष्ट छुपाकर हँसने में तो, वो सबसे ज़्यादा माहिर थे
कैसे इतनी बाधाओं से, हालातों से लड़ते थे?
मैं इतने में ही थक गई, बाबा कैसे करते थे?

इस जग की झूठी काया में
जब हर कोई फँसा है माया में
सिर्फ राम-नाम का जाप नहीं वो
राम सा चरित्र भी धरते थे
मैं इतने में ही थक गई
बाबा कैसे करते थे?

शायद ही इतनी बड़ी बन पाऊँ
कि कर्ज़ कभी उनका मैं चुकाऊँ
उनसा श्रेष्ठ ना दूजा कोई
इससे बेहतर ना हो सकते थे
मैं इतने में ही थक गई
बाबा कैसे करते थे?

दर्द

रुद्र प्रताप सिंह
बी.एस.ई (विशेष) तृतीय वर्ष

ए दर्द तूने क्या-क्या देखा है ?
क्या किसी को कभी खुदसे बिछड़ते हुए देखा है?
किसी को रोज संभलते और फिर बिखरते हुए देखा है?
या किसी को उस दर्द में निखरते हुए देखा है ?
ए दर्द बता ज़रा तूने क्या क्या देखा है ?
किसी को किसी और के आंसू पीते हुए देखा है,
किसी का होते हुए भी क्या
किसी को किसी और का होते हुए देखा है ?
या भीड़ में भी किसी को तन्हाइयों से लड़ते हुए देखा है ?
गमों को दिल में लिए किसी को मुस्कुराते हुए देखा है,
सब कुछ होते हुए भी क्या किसी का सबकुछ खोते हुए देखा है?
क्या किसी को आंसुओ के बिस्तर पर सौते हुए देखा है,
या किसी के सपनों को किसी के पांवों तले कुचलते हुए देखा है?
खुद को दर्द देकर क्या किसी को किसी और को हँसाते हुए देखा है?
मैंने किसी को गलती पर भी इनाम पाते हुए देखा है
और किसी को बिन गलती के उम्र भर की सज़ा पाते हुए देखा है।
किसी को दो वक्त की रोटी के लिए मरते हुए भी देखा है,
ऐ दर्द मैंने दर्द को भी किसी के दर्द पर रोते हुए देखा है।
बता तो ज़रा ए दर्द तूने और क्या क्या देखा है?

मन:स्थिति

विकास
बी.ए.हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष

प्रतिपल, क्षण-क्षण भय तेरे मन में है घर किए हुए,
मन में चलता है द्वंद, निर्दिष्ट स्थान मिले न मिले।
पर है क्यों तू इतना निराश ? रटता रहता अलाप।
अनवरत-आठों पहर कर पावक में स्वयं को समर्पित,
मन में माता-पिता को रख बस लक्ष्य को भेद मनु।
निश्चित ही फल अच्छा आएगा, मंजिल भी तू पाएगा।
आसमां भी फिर देख तेरे समक्ष मस्तक झुकाएगा।

अफजल वध

हर्ष यादव
बी.एस. सी (विशेष) तृतीय वर्ष

बढ़ते बढ़ते पाप की सीमा घर बारों में घुस आती थी,
आतंक देखकर उन मुगलों का, मौत भी लज्जा खाती थी।
दानवता का महा पुजारी, अफजल भी धूर्त प्रवासी था,
मूर्ति को खिलवाड़ समझता, हर मंदिर का जो नाशी था।

पाप पुण्य पर भारी जब भी पड़ने लगता है
मात भवानी की शक्ति से, तब एक वीर उभरने लगता है।
सुनकर अफजल के पापों को, राजे खुद को रोक रोक रह जाते थे
देख देख कर दानवता उसकी, मन ही मन बड़ा पछताते थे।

औऱ फिर भाग्य ने ऐसा खेल रचाया, न्यौता फिर मिलने का आया
चमक उठी आँखें राजे की, जैसे स्वप्न कोई है, सच हो आया।
और तब, प्रस्ताव किया स्वीकार, किया नहीं कोई इंकार
हर शर्त मान कर उस अफजल की, अकेले जाने को हो गए तैयार।

खेमे में खड़ा था दानव, अपने हाथो को फैलाए
देख मूर्खता उस अफजल की भाग्य भी हंसता जाए।
सिंहों की भांति तान के सीना, राजे आगे को आतें हैं
बांहों में जाकर फिर उस अफज़ल के गले भी लग जातें है।

पापी ने फिर पाप कर्म अपना दिखा दिया
धोखे से राजे को फिर बाँहो में था दबा लिया।
और निकाल खंजर को, पूरी शक्ति से वारों को बरसाने लगा
होता न कुछ देख राजे को, फिर मन ही मन घबराने लगा।

नरसिंह रूप धरा राजे ने, पेट अफजल खान का फाड़ दिया
और धर्म बचाने की खातिर, फिर शिव ने था भगवा गाड़ दिया।
उस वीर शिवा के वंशज है हम, मृत्यु से क्यूं घबराएंगे
आई आँच जो स्वाभिमान पर, हम काल से भी लड़ जाएंगे।।

पर्यावरण, मानव और विज्ञान

नितिन निहाल
बी. ए हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष

मानव बुद्धि के साथ ही विज्ञान का विकास हुआ होगा क्योंकि जब आदिम काल के मानव ने फटते ज्वालामुखी के लावे में आईस्क्रीम की तरह पिघलते पेड़ पौधों और जीवों को देखा होगा तो उसका अस्तित्व भी काँपने लगा होगा। समंदर की सुनामी में जीवन के किनारे पर पड़ा। बड़े बड़े जलीय प्राणियों का तिनके सा शरीर देखकर सन्न रह गया होगा। तभी उसने ठाना होगा कि प्रकृति को समझेगा। अपने अस्तित्व को बचाने के लिए और सबके साथ जीने के लिए। वह बहुत हद तक अपने काम में सफल भी रहा पर उससे एक छोटी सी गलती हो गई कि वह अपनी औलादों को ये बता और जता ना सका कि इस विज्ञान का असली मकसद क्या था, क्या है और क्या रहना चाहिए। जिस तरह वक्त के साथ-साथ शब्दों के अर्थ बदल जाते है उसी तरह आज का इंसान वैज्ञानिक सिद्धांतों के भी अर्थ अपने हिसाब से समझने लगा है। डार्विन ने कहा स्ट्रगल फॉर एक्सिस्टेंस, एडॉप्ट, सरवाइव। 'पर इंसान के मोटे दिमाग ने धरती पर अपना इकलौता हक जताते हुए सहूलियत के लिए एक और शब्द जोड़ दिया, एक्सप्लॉयट ! मुझे दुःख है कि जो इतना मोटा दिमाग लेकर भी उपयोग और उपभोग में अंतर नहीं कर सकते। उनके लिए मैं तो क्या खुद प्रकृति भी कुछ नहीं कर सकती। ऊपर से अपनी खुराफात को छुपाने के लिए; सस्टेनेबल डेवलपमेंट' जैसे मोटे मोटे शब्द उस पर रख दिए, इस तरह के नए नए लुभावने शब्द हर रोज ईजाद हो रहे हैं जो एक्सप्लॉयट और उपयोग के बीच की खाई में बिल्कुल फिट बैठकर उनके बीच का अंतर मिटा सके। आजकल ये डार्विन और गॉस के ईवोल्यूशन व अंतर प्रजातीय प्रतियोगिता के सिद्धांतो को गलत साबित करने में लगे हुए है दूसरे फाईलम' और किंगडम' के जीवों के साथ खाने और जगह के लिए छीना झपटी करके। वास्तव में शोषण करने की प्रवृति की शुरुआत तभी से हो जाती है जब हम प्रकृति को अपनी ज़िंदगी का एक ज़रूरी हिस्सा मानते हैं। यह सोच मन ही मन हमें प्राकृतिक संसाधनों को अपनी मर्जी से उपभोग करने का अधिकार दे देती है। लेकिन हकीकत यह है कि हम प्राकृतिक तंत्र का एक बहुत छोटा और गैर जरूरी भाग हैं। जिसे मानने से हम हर तरह से बचते रहते हैं या नजर अंदाज करते रहते हैं। यह बात हम जितनी जल्दी समझ जाएं उतना ही भला होगा। एक और बात यह भी है कि इस सतत पोषणीय विकास की धारणा को असल ज़िंदगी में एक गरीब आदमी ही अपनाता है और अपना सकता है पर इसलिए नहीं कि उसे धरती को बचाना है बल्कि इसलिए कि गरीबी उसके पास प्राकृतिक संसाधनों को बचाने के अलावा कोई विकल्प नहीं छोड़ती तो यह उसकी मजबूरी बन जाती है। वहीं जो अमीर परिवार से हैं उनके पास पर्याप्त मात्रा में दौलत होने के कारण संसाधनों की कमी नहीं है क्योंकि आजकल पैसों से स्वास्थ्य के अलावा सबकुछ खरीद सकते हैं। उदाहरण के लिए शहर के प्रदूषित पानी और हवा को साफ़ करने के लिए धनवान अपने घर में फिल्टर लगा सकते हैं पर गांव के गरीब लोगों के पास हर छोटी छोटी चीज़ पर खर्च करने के लिए धन नहीं होता इसलिए वो प्राकृतिक और मुफ़्त के संसाधनों पर निर्भर रहते हैं और उनका बचाव करते हैं। यदि देखा जाए तो मूलभूत रूप में विज्ञान नाम की कोई चीज नहीं बची है। किसी भी विषय से पहले कुछ ऐसे शब्द जोड़ दिए गए हैं जिनका सीधा या उल्टा संबंध व्यापार से होता है जैसे ट्रांसलेशन, इंडस्ट्रियल। आजकल किसी व्यक्ति की रुचि किसी चीज को जानने व समझनें में कम है और अपने फायदे बनाने में ज्यादा है। बिजनेस मैन को वैज्ञानिक समझा जा रहा है और वैज्ञानिक बिजनेस मैन बनने की ताक में हैं। जिनके पास दौलत है, यदि हाँ, उनसे पूछेंगे कि आप धरती को बचाने के लिए क्या कर रहे हैं तो कहेंगे हम मंगल पर इंसान को बसाने की तैयारी में हैं।

हमने धरती की तबाही का समय बताने वाली घड़ी बनाकर उसकी देखरेख कर रहे हैं। हमने इसके लिए एक फाउंडेशन बनाया है। हम ये, वो प्रोग्राम चला रहे हैं, वगैरह वगैरह। जो लोग पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने वाले प्रोग्राम, मंगल पर जीवन, घड़ी के नाम पर दौलत खर्च कर रहे हैं, वो पैसे अगर ऐसे काम में लगे जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो तो, में सबको आंखों के सामने सुधार दिखे तो इससे आए अच्छे परिणामों को देखकर लोग अपने आप ही जागरूक होकर सही रास्ते पर आ जायेंगे। क्योंकि लोग सिर्फ प्रत्यक्ष प्रमाण से मतलब रखते हैं। किसी की बात न मान कर हरकतों की नकल करते हैं जिससे सामने वाले के जैसा ही परिणाम मिले। अगर आप उनके सामने अच्छा उदाहरण पेश करेंगे तो वो भी आपका समर्थन करते हुए अनुगमन करेंगे। और आप सेलिब्रिटी हैं तो आप दुनिया में धरती की भलाई के लिए काम करने को ट्रेंड भी बना कर सकते हैं। फिर भी ऐसा नहीं हो रहा क्योंकि किसी को पैसे चाहिए तो किसी को प्रसिद्धि! यही कारण है किसी भी मुद्दे को नजरंदाज करने का आजकल एक आसान तरीका बन गया है कि उसके लिए एक दिन तय कर दिया जाए ताकि बाकी दिन उसके बारे में बिना सोचे भी आराम से बिता सकें। हमें प्रकृति को ये एक दिन के लिए याद करने से पहले हमारे पिछले घटिया कर्मों को सुधारने के बारे में सोचना चाहिए नहीं तो एक दिन आखिरकार ऐसा होगा कि सौ (चोटें) सुनार (मनुष्य) की, एक (मार) लुहार (प्रकृति) की।

तिलिस्मकारी

आयुष आव्रत
बी.ए.हिन्दी (विशेष) तृतीय वर्ष

ख़ुदा ने कितने प्यार से बनाई है ये दुनिया दोस्त
है कितने प्यार से बनाया तारों को सितारों को
हवा को, पानी को, घटा को, धूप, रूप, रात, दिन
ख़िज़ाँ को, फूल खारों को, बहारों को, हजारों को,
कि किस तरह बनाई खिरमनों की खेतों की ज़मीं
फिर उसपे कैसे-कैसे है बनाया काश्तकारों को
कि कितने एहतियात से बनाये ये दिमाग़-ए-दिल
मैं सोचता हूँ कैसे ढाला होगा पुर-ख़ुमारों को
कभी ये सोचना दुरुस्त कितने हैं ये हादसे
हसीन कितनी है हर एक शय के पीछे की दलील
कि कोई जुर्म कर न पाए इसलिए सिपाही हैं
किसी से भूल हो गई तो उसके वास्ते वकील
कोई भी हो मरज़ हर इक मरज़ की है दवा यहाँ
अगर कभी दवा न काम आई तो दुआ भी है
दवा दुआ के होते भी जो आदमी न बच सके
तो भूलो मत कि कोई चीज़ ख़्वाहिश-ए- ख़ुदा भी है
कि उस तिलिस्मकार की तिलिस्मी काएनात में
कहो कि क्या नहीं है एक दूसरे पे मुनहसिर
तमाम जिद्द-ओ-जहद के भी बाद मरना है अगर
ये ज़िंदगी सो सोचता हूँ दोस्त किसलिए है फिर
ये ग़म ये कहकशाँ ग़लत सही ये वो यहाँ वहाँ
जरूरतें मुसीबतें ये हसरतें ये मिन्नतें
कभी जो इसके नाम पे हज़ारों जंग टल गए
तो क्यों कभी तबाही का सबब बनी मुहब्बतें
मुझे तो लगता है ये कोई खेल है कि जिसमे दोस्त
सवालों के जवाब ढूँढना है मक़सद-ए-हयात
तिलिस्म के जवाब हैं हमारा हासिल-ए-वजूद
नहीं तो सोचो कोई क्यों बनाता ये तसव्वुरात
ये रौशनी सवाल थी तभी तो बल्ब बन सका
तवील रास्तों का ही जवाब हैं ये गाड़ियाँ
तुम्हे पता है पहली मर्तबा कि किसने कब कहाँ
रची थीं किन सवालों के जवाब में कहानियाँ
मैं देखता हूँ फोन तो कभी कभी हूँ सोंचता
किसी के कोई लफ़्ज़ लफ़्ज़ सुनने को तरस गया
उसी से बात करने की ही कोशिशों ने आख़िर
हम ऐसे आशिक़ों को और जहाँ को कितना कुछ दिया
वो देख लोगों के बनाए चाँद ये नदी पे बाँध
ये खिड़कियाँ दर-ओ-दीवार ये फ़सीलें ये हिसार
कि बात जब समाज की समाज तक नही गई
तो फिर बना दिया गया किसी को एक पत्रकार
कई ख़्याल थे कि जिनको शक्ल मिल गई मगर
अभी बहुत सवाल हैं जवाब जिनके पाने हैं
लगे हुए हैं सब के सब अलग अलग और एक साथ
यक़ीन कर कि उनके भी जवाब मिल ही जाने हैं।

आधार

सारांश मिश्रा
बी.एस.सी (विशेष) कंप्यूटर साइंस

मुट्ठी भीच कर आया है जो
हाथ पसार कर जाएगा
सब जानते हुए भी मानव
कुछ भी समझ नहीं पाएगा
मोह को कह दो खराब कितना भी
लिप्त उसी में होना है
माया है में मिथ्य फिर भी
भाव उसी में जोहना है
जन्म मरण से मुक्ति कहते
चौरासी लाख अभिव्यक्ति कहते
बात विरोधभास है पर
आँख मूंद कर शक्ति कहते
रचने वाले संसार बता
क्यों रचा है तुमने ये संसार
था पूर्ण अगर हुआ कैसे
तुझमे काम का विस्तार
उपाय तो तुम देते हो कितने
समस्या का तुम क्यों आधार
जो तुम भी सत् नहीं हो तो
तो, किसने गढा ये संसार।

कुछ था जो अब नहीं रहा

विनम्र शर्मा
बी.ए.अंग्रेज़ी (विशेष) प्रथम वर्ष

कसूर कसूर करते रह गए
पर कसूर कभी मिला नहीं
दिल में दबे अरमानों को
पर कभी मिला नहीं सोचता था कभी

उसके सपनों में खुद को पा जाऊँ
उसके सपनों के लिए जी जाऊँ
पर पता चला,
ना जाने खुद कैसे, वो सपने देखने वाला ही,
अब आंखों के सामने रहा नहीं

वो अब रहा नहीं ये मुझे पता है
पर ये बेचारा जाने क्यों नहीं मानने को तैयार है
अरे, छोड़ चुकी है वो तुमको इसको क्यों नहीं मानते
हर दिन बेसब्र होके, रातें क्यों बिताते
कभी करवटें बदल कर
कभी आसुओं के दरिया में
आखिर रोज़ क्यों खुद को तलाशते?

इन दुनिया वालों के नाटक भी अलग हैं,
क्या हुआ, क्या हुआ पूछ
मेरे ज़ख्मों को ना भरने देते हैं
जब भरने की बारी आयी,

तो उस लफ्ज़ों से फिर ज़िंदा करते हैं
पूंछते हैं मुझसे,
ओ अकीदतमंद, क्या सबब है तुम्हारा,
ज़रा हमें भी तो बतलाओ
ज़रा हम भी तो जानें कि क्या हैं ये सब तुम्हारे
पर जनाब,
ये भी कभी समझ ना पाए
ये भी कभी जान ना पाए
अरे कैसे समझाऊँ हाल ए दिल
इस बेदर्द दुनिया को...

क्योंकि खुद को समझाने के लिए अब
मेरे ही पास खुद कुछ अब रहा नहीं
और जो रूह बन के आते थे इस जिस्म में कभी
वो खुद अब इस जिस्म में रहे ही नहीं।

अपने नगर

युगांश शर्मा
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

चलो चलें जी अपने नगर,
उस स्नेह के भवन, पतली सी डगर।
जहाँ नहीं खड़े हों 'स्वार्थ-मगर',
जहाँ प्रेम भरें प्रीतम के अधर।

यहाँ कहाँ वह राज दुलार?
वह यार भाव, माता का प्यार।
वह बाग़ों के मिठियारे फल,
उल्लास भरे उन्मादी पल।

यहाँ नहीं वहाँ सी बात सनम,
यहाँ विद्यमान है स्वार्थ करम।
यहाँ नहीं किसी को पूछे कोई,
जिसपर हो धन, राजा ही सोई।

तुम भी चलो मेरे ही शहर,
जहाँ प्रेम बंटे चारों ही पहर।
जहाँ हर कोई अपना माने है,
जहाँ श्वास गति भी पहचाने है।
जहाँ अर्थ नहीं बस चलता धर्म,
जहाँ बची अभी है लाज शर्म।

संतोष हो जिसको 'खाटी' का,
अभिमान जिसे हो माटी का।
जिसको हो प्रिय हृदय विशाल,
जो न ओढ़े हो तृष्णामृग छाल।

वह चला चले मेरे उस नगर,
उस स्नेह के भवन, पतली सी डगर।
जहाँ नहीं खड़े हों 'स्वार्थ-मगर',
जहाँ प्रेम भरें प्रीतम के अधर।

सिया राम

गरिमा राघव
बी.ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

वो अंतिम क्षण
नि:शब्द हुए वे महाज्ञानी
जब अंतिम क्षण प्रकट हुई
माता सीता रानी
व्याकुल हृदय मन विचलित हुआ
सम्मुख देख प्रिये सीते को
प्रभु राम का हृदय प्रफुल्लित हुआ
समय चक्र से क्या कोई विजय पाया है
प्रभु ने भी हर जन्म प्रेम गवाया है।

राम संवाद
कैसे बतावे सीते तोहे मनोस्थिति
मेरे जीवन में प्रेम का स्थान सदैव तुम्हारे लिए रिक्त थी
तुम दूर थी परंतु सदैव समाहित रही
खुद से ना जाहिर हो पाए हृदय व्यथा
कुछ प्रश्न ही करो सीते जरा
मेरा हृदय सदैव मानता
तुम्हारे पवित्र मन को जानता
मौन रहकर हूँ मैं व्याकुल
कैसे करूँ मैं इजहार सम्मुख
रघुकुल रीति मैंने अपनाई
प्राण जाये पर वचन न जाए
यदि स्मरण रहती स्थिति
तो कभी न लेते
इस रीति का भार
दो पल साथ तुम्हारा होता
कुछ तो जीवन साथ गुजारा होता
यूँ न अंतिम क्षण हमारा होता।

सिया संवाद
प्रभु यूँ मौन रहकर नेत्रों से
न मन ही मन शब्दों से यूँ प्रहार करो
मैं सदैव तुम्हारी हूँ मुझ पर विश्वास करो
ये सौभाग्य मैंने पाया है
इस जन्म आपको पाया है।
परंतु अब समाहित मुझको हो जाने दो
इस प्रजा के सम्मुख आने दो
ना ये फिर प्रश्न प्रहार करें
युगों युगों तक
सिया राम की जय जयकार करें
ये मेरा सौभाग्य है
अब अंतिम क्षण मैं जाती हूँ
नेत्रों से कुछ अश्रु छलकाती हूँ
हे प्रभु ये कैसा अंतिम क्षण आया
आपके कोमल से नेत्रों में अश्रु की धारा लाया।

सुबह

जय प्रकाश
बी.ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

उस सुबह की याद में,
मैं आज भी सोया ना था।
दिन गए और मास गए,
पर वह सुबह पाया ना था।

ख्वाब मेरा एक सुबह का,
उस पर यूँ मैं अड़ पड़ा।
रात की चमगादड़ो पर,
बिन सुझाए चढ़ पड़ा।

वह सुबह जो मैंने देखी,
वह कभी थी या नहीं,
झूठ हो या हो फसाद,
मेरी वह सच्चाई सही।

लोगों ने झूठा ये माना,
रात को वह पूजते।
इक सबेरे सच के लिए,
वह न बिलकुल जूझते।

जूझा जो, वह ना बचा,
बच पड़ा, वह भागरा।
इक सवेरे की ये खातिर,
रात भी न जागरा।

अंत मैं वह सुबह एक दिन तो,
यूँ की आई ही थी।
सुबह के चाहने वालों को,
वह सुबह न पाई थी।

मरजाद की विरासत

आशीष कुमार
एम. ए. (हिंदी) उत्तरार्द्ध

कितना आसान होता है धर्म परिवर्तन करना
परिवर्तन करवाने को उत्सुक पहला,
दूसरे के धर्म पर अपनी विजय का परचम लहराता है
पक्ष का गौरव और अपक्ष अपनी संस्कृति की विरासत से
डरता हुआ हार जाता है।

फिर भी कितना आसान होता है, धर्म का बदलना
नहीं बदल सकते तो अपनी 'जाति'
जो पीढ़ियों के गुमान का क़तरा है
अलर्क ने परशुराम को कुरेद-कुरेद कर याद दिलाया था
कि यह जो कर्ण है, क्षत्रिय है, तुम ब्राह्मण हो परशुराम

तब परशुराम का ब्राह्मणत्व जागा
जोंक की तरह अपनी जाति
जिंदगी के साथ ऐसे आड़े-तिरछे चिपकी है
न मिटती है न हटती है
न मौका देती है परिवर्तन का
धर्म के केंद्र में डर की पुकार है, दुनिया भर से
पर जाति मध्यवर्गीय प्रतिष्ठा का वह चिह्न है
जहां प्रतिरोध में अम्बेडकर जन्म नहीं ले सकता
जन्म नहीं लेते है, कर्म के विचार
बस किताबों की थ्योरी सिर रखकर
पीएच.डी. हो जाती है
वाद-विवाद-संवाद नहीं
बस अंतिम फैसले हो जाते है
कितना आसान होता है उच्च कुल में गंधर्व विवाह का होना
कोई सवाल नही, एक भी नहीं

पूछने वाला मध्यवर्गीय होता कौन है
आज होरी थोड़ा कमा लिया है
एक घर बना लिया है
पर अब भी राय साहब
'होरी' को 'मरजाद' का बीड़ा दिया है,

थरथराते कलम के सामने
दूसरी तरफ जनतंत्र का अभागा
'दलित'
थक जाता है इन पर
अपने विमर्श के तले
ओमप्रकाश वाल्मीकि की तरह।

माँ

युगांश शर्मा
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

माँ तुम एक धारा हो,
एक देह में जीवन सारा हो।
मेरा गौरव अभिमान सदा,
जीवन का पूर्ण गुज़ारा हो।
माँ तुम एक धारा हो

तुम केवल यूँ ही शब्द नहीं,
मेरी श्रद्धा का नारा हो।
बाधाओं के तम में तुम,
आशा का उजियारा हो।
माँ तुम एक धारा हो।

ये शहर मुझे पसंद नहीं

पल्लवी चौहान
बी.एस.सी. भौतिक विज्ञान (विशेष) तृतीय वर्ष

ज़ाहिर है मेरा इस शहर को नापसंद करना
तीन साल होने को आए हैं इस शहर में
लेकिन ये गलियां अभी भी गैर हैं
इन इमारतों से न जाने कैसी बैर है।
यहाँ बादलों की बनावट मेरी आंखों को नहीं रिझाती
और सबा जो बहती है मेरी ज़ुल्फे नहीं सहलाती
मेरी पलकें मसर्रत में अब शरमाया नहीं करतीं
मुस्कान भी मेरे होठों को सजाया नहीं करती
मजाल है मेरी हट का बड़े शहर जाना है
बड़े शहर में मुझे अब सुकून पाना है
सुकून वैसा जैसे घर के आंगन में पलता है
यहाँ तो हर शख्स आंखें मूंद कर चलता है
आसमां यहां का क़फ़स से कम नहीं
और दिखावे की खुशी का किसी को गम नहीं
खैर, ये शहर मुझे पसंद नहीं !

PREETI SHAH
B.A. (Hons.) Hindi, III Year

ENGLISH SECTION

Editorial Board

Dr. Santoshi B. Mishra
Mr. Piyush B. Chaudhary

Student Editors

Vishnupriya Saxena
Saloni Bharti

INDEX

1. TRADITIONAL HEALING PRACTICES INTO MODERN HEALTHCARE: A MULTICULTURAL PERSPECTIVE / HIBBAN SHOWKET ---------- 31
2. RANADE: THE STORY OF A PROGRESSIVE NATIONALIST / SNEHIL RAJ SINGH ----- 34
3. MENSTRUATION : FLOWING FREEDOM / AANCHAL---------- 36
4. WORDS OF LOVE / SAMBHAV JAIN ---------- 38
5. ECHOES OF LOVE / RAINY VATS ---------- 38
6. GOING BACK TO THE PLACE YOU BELONG / SHUBHAANGI CHAUHAN ---------- 39
7. COSMIC HEARTSTRINGS / SHAMBHAVI GROVER---------- 39
8. DEMONS OF MY DREAMS / RAGINI SHARMA---------- 40
9. LET ME SING YOU / CHEICK ARWATA---------- 40
10. SICKNESS LOVE / CHEICK ARWATA---------- 41
11. GAP BETWEEN REALISM AND ILLUSION “THE PICTURE” / CHEICK ARWATA----- 41
12. GAP BETWEEN REALISM AND ILLUSION “DREAM” / CHEICK ARWATA ---------- 42
13. BEING IN THE MIDDLE / VINAMRA SHARMA---------- 42
14. INDIAN JUDICIARY: TAINTED LEGACIES AND THE HOPE OF REDEMPTION / ANSHUL ---------- 43
15. THE LINES / NITIN “NIHAL” ---------- 45
16. SO AM I / BALJEET SINGH---------- 45
17. PHOTOGRAPHS / VISHAL KUMAR SHARMA ---------- 46

Medical Anthropology and Medical Pluralism

Traditional Healing Practices into Modern Healthcare: A Multicultural Perspective

HIBBAN SHOWKET
B.Sc. (Hons.) Anthropology, I year

Abstract

The research backed article explores the potential of interest in traditional healing practices and modern healthcare systems. Using insightful examples from diverse regions like Cameroon, India, Kashmir, and Traditional Chinese Medicine (TCM), the aim is to highlight the crucial need to research and acknowledge the cultural and historical richness of traditional methods while simultaneously considering their demonstrable effectiveness through extensive research.

Introduction

Within the landscapes of modern healthcare, traditional healing practices are often met with scepticism or outright dismissal from scientists or doctors. While concerns regarding safety and efficacy are digestible, disregarding any of the traditional practices solely for their misalignment with modern medicine overlooks their valuable knowledge and perks as well. The golden mean should essentially entail the acknowledgment of cultural and historical significance embedded in a certain practice. This should lead to an efficient fusion of modern and traditional healthcare.

Despite the frequent marginalization of these modalities by biomedical methods, evidence- based cases support that traditional approaches have demonstrably aided individuals or communities in alleviating ailments. History provides evidence of diversified systems for cure and disease management. Treatments from the past could be herbal remedies, spiritual techniques, or some manual therapies which address physical, mental, and spiritual well-being.

In today's world, medical anthropology hosts the potential of integrating traditional healing practices into contemporary healthcare so as to bridge the gap between the wisdom of the bygone era and the advancement of the upcoming times. In resource-limited areas, customary approaches towards betterment of health have been utilized frequently.

Multicultural Perspectives

The most recent case of the rise of traditional medicine (TM) in Cameroon was largely because of the country's unsustainable economic circumstances. Cameroon's rich ecosystem, which boasts biodiversity used to treat various ailments, drew in pharmaceutical companies, particularly in the treatment of malaria. A few of the plants used were Vernonia guineensis,

Aframomum and spilanthes oleracea. The companies started to identify NCE (New Chemical Entity) among these plants. Similarly, several communities in the Indian subcontinent possess time-honoured healing techniques that have piqued fascination among biomedical researchers, either to produce synthetic counterparts of the chemicals found in the plants or to comprehend the science behind the practice. Indian communities such as the Mishings in Assam have reliance on both ritualistic and non-ritualistic healing practices. Mishings

have cultivated particular herbs to address specific health concerns. These herbs, which are by nature not available include Aloe barbadensis, Barleria cristata, Glycyrrhiza glabra and more. Mishings either directly apply these herbs or employ elaborate methods, the likes of decoction with spices, etc. For instance, they put Adhatoda zeylanica, which is decorated with kali mirch to use for treating coughs, and Ageratum conyzoides L. is directly applied to wounds to stop bleeding. The chemical constitution of Ageratum, which is Coumarin, β-caryophyllene, Precocene and Eugenol may hold the prospect to serve as a substitute for Heparin in blood coagulation as studies are conducted on it. Some other prevalent diseases treated by the Mishing healers are Jaundice, malaria, menstrual disorders, joint pains, skin diseases and so on. Each one is treated simply using herbs in diverse ways.

On attention to the region of Kashmir, a wealth of traditional healing practices that have persisted through generations is found. In Kashmir "Watan Gout" or Bone setters are locally believed to have spiritual healing powers. They assess the fracture without using any equipment and even cure it using just their hands.

Spiritual healers are also very prominent in kashmir. They generally are referred to as Bab locally and are believed to treat a vast number of ailments.In numerous cases, doctors have lost hope, yet patients have found healing through prescriptions from spiritual healers. One of the most successful and widely practiced treatment by these spiritual healers is the treatment of Jaundice. The treatment, known as "Matravun", involves the recitation of specific verses that facilitate healing and reduce bilirubin levels in the patient.

Use of oil on the belly during stomach aches is a common practice to alleviate pain. Scientifically, castor oil, containing Ricinoleic Acid, has been confirmed to be beneficial when applied at Naval which essentially acts as gateway to the body. However, Kashmiris use various oils with similar results.

Another significant aspect of Kashmiri traditional healing involves the use of local herbs like Brahmi (Bacopa monnieri), which has been employed to enhance memory, cognition, and overall brain function. It contains compounds that protect against oxidative stress and neurodegeneration, thus making it relevant for managing cognitive decline associated with aging.

In addition, ancient Kashmiri rituals like Rudraksha therapy also play a crucial role in promoting mental well-being. Rudraksha beads, sourced from the seeds of Elaeocarpus ganitrus Roxb., are believed to harness powerful energies capable of reducing stress, calming the mind, and improving concentration. Practitioners string together Rudraksha beads into necklaces or bracelets worn during meditation or daily activities, while others opt to place them under pillows for enhanced sleep quality. Although scientific validation remains limited, there exists a substantial body of anecdotal reports supporting the therapeutic effects of Rudraksha, suggesting the need for further rigorous investigation.

One of the most critically acclaimed forms of Traditional Medicine (TM) is Traditional Chinese Medicine (TCM). Based on a concept that a vital force of life know as Qi (气; 氣; qì) surges through body. The balance in this Qi (气; 氣; qì) needs to be maintained for a healthy life. They believe that ying and yang are the complementary forces that make up Qi. Ying and Yang can be altered by the lifestyle of an individual. Chinese use a therapy called Qìgōng (气功; 氣功) which is a TCM system of exercise and meditation that combines regulated breathing, slow movement, and focused awareness, purportedly to cultivate and balance Qi (气; 氣; qì). All the chinese traditional medicine is mainly based on bringing the Qi (气; 氣; qì) to balance therefore mostly all the diseases meet a very similar

treatment. However, some herbal treatments from Traditional Chinese Medicine have also been used extensively in Cancer Treatment Research. The major concepts even in use of Traditional Chinese Medicine (TCM) in cancer is also based on strengthening body resistance and treating both the manifestation and root cause.

In one of the methods to balance Qi (气; 氣; qì) Traditional Chinese Medicine (TCM) uses Ganoderma lucidum (Lingzhi or Reishi), Poria (Fu-Ling, Mandarin/Chinese) and other species as drugs; the fungi contain β-glucan or polysaccharide which rewires human immunity and

Scientists have speculated that this rewiring might also enhance anti tumor immunity (Li et al 2019). β-Glucan has also been used in cancer immunotherapy.

One more method they apply is called QingReJieDu method (清熱解毒) where the management of oxidative and inflammatory stress is done which according to scientists is essential in regulating the equilibrium of cancer stem cell state and metastasis. They use decoctions for this purpose. One such formula named SanHuangXieXin decoction is made up of three herbs, which are Coptis chinensis Franch, Scutellaria baicalensis Georgi, and Rheum palmatum L. This can suppress inflammation in cancer cells. Another principle is the HuoXueHuaYu method (活血化瘀 in Mandarin/Chinese), which is defined as invigorating blood circulation and eliminating stasis. All these methods together have proven useful in treatment of cancer in multiple aspects.

Conclusion

The coexistence of traditional healing practices alongside modern healthcare systems presents a rich treasure of knowledge and therapeutic approaches. Proper scientific research for the causes behind the application of traditional treatment methods must be understood.Integrating traditional healing practices into contemporary healthcare can bridge gaps in access, address the diverse needs of communities, and enrich patient centered care.

As research in the field continues and collaborations keep on expanding, the future of integrated healthcare holds immense promise.

In this particular field medical anthropology plays the guiding role. Studies in medical anthropology can assure that no traditional healing practice remains hidden and dies without proper research and integration in modern medicine.

References

1. Uniyal, S., Kumar, V., & Sharma, C. L. (2013). Traditional uses, phytochemistry and biological activities of Bacopa monniera L.: A review. Journal of Medicinal Plants Research, 7(25), 1648- 1661. Retrieved from <http://www.academicjournals.org/journal/JMPR>
2. Pradhan, P. K., Chatterjee, D., Pandit, S., Kumari, U., Mehta, T. K., Khanna, S. K., ... & Banerjee, R.K. (2019). Antidepressant activity of standardized hydroalcoholic extract of Bacopa monnieri leaves: Possible involvement of 5-HT1A receptor mediated mechanisms. Pharm Biol, 57(1), 65-72. doi: 10.1080/13880209.2018.1490847
3. Qureshi, F. A., Ahmad, Z., Masoodi, F. A., & Dar, G. H. (2018). Green Tea Consumption Promotes Well-Being: Emerging Benefits From Human Intervention Trials—Review. Plant Foods for Human Nutrition, 73(3), 281–288. https://doi.org/10.1007/s11130-018-0699-3
4. Wani, O. A., Shah, S. A., Mir, S. A., & Mohan, V. (2014). An overview on ethnobotany, phytochemistry and bioactivity of Elaeocarpus ganitrus roxb. International journal of pharmaceutical sciences and research, 5(9), 3710-3721. Retrieved from <https://ijpsr.com/>
5. Unlocking the Mystery of the Therapeutic Effects of Chinese Medicine on Cancer. Shao- Hsiang Liu https://doi.org/10.3389/fphar.2020.601785
6. Xiang Y, Guo Z, Zhu P, Chen J, Huang Y. Traditional Chinese medicine as a cancer treatment: Modern perspectives of ancient but advanced science. Cancer Med. 2019 May;8(5):1958-1975. doi: 10.1002/cam4.2108. Epub 2019 Apr 3. PMID: 30945475; PMCID: PMC6536969.
7. Shankar R, Lavekar GS, Deb S, Sharma BK. Traditional healing practice and folk medicines used by the Mishing community of North East India. J Ayurveda Integr Med. 2012 Jul;3(3):124-9. doi: 10.4103/0975-9476.100171. PMID: 23125508; PMCID: PMC34872.

RANADE: THE STORY OF A PROGRESSIVE NATIONALIST

SNEHIL RAJ SINGH
BA Program (Philosophy + Sanskrit)

Mahadev Govind Ranade was a prominent social reformer stemming from the western part of the Country. He espoused all progressive movements and worked unwearyingly for social reforms like widow remarriage, education of women, and education of the masses generally. His contribution to the field of Economics earned him the title of "The father of Indian Economics".

MG Ranade was born on January 18, 1842, in a Chitpavan Brahmin family to Govindrao (father) and Gopikabai (mother) in Niphad in Nashik district. He had an extraordinary liking for studies from the beginning of his education. It was his years at Elphinstone Institution and the academic atmosphere that moulded him into a progressive nationalist. He went on to engage himself in various social activities and founded various societies. He also became a founder member of the Indian National Congress in 1885 and the Indian National Social Conference in 1887.

The condition of the Hindu religion at the beginning of the 19th century, where it found itself in disarray and filled with a large number of pernicious and oppressive customs, paved the way for Indian reformers drawing their inspiration from the British customs to start social reform movements in India. An Anglo-Marathi daily-Indu Prakash, started by social reformers, paved the way for Ranade's debut in public life. He assumed the editorship of the English section of the Indu Prakash. Though he stepped down from the position later on but continued to write for Anglo-Marathi daily.

Gopal Hari Deshmukh (Lokahitavadi) and Vishnu Parashuram Shastri Pandit played an instrumental role in bringing Ranade into the social reform movement. They deeply sympathized with the sufferings of widows and thus in 1865 formed a society named 'Vidhava-Vivaha-Uttejaka Mandal' and Ranade joined it as a member. They espoused widow remarriage by contending, it was sanctioned by Hindu Shastras. The Orthodox immediately challenged this and they decided to challenge the reformists by forming another society 'Hindu Dharma-Vyavasthapak-Sabha'. After several isolated public discussions and debates, in 1870 a great debate was held in Poona, in the traditionally approved manner, in the presence of the Shankaracharya. The party of reformers was led by Vushnushastri Pandit assisted by J.S Gadgil, R.G Bhandarkar, and M.G Ranade. This nine-day debate ended in the victory of the Orthodox. The reformers were given a choice- the guilty person must perform penance or face social ostracism. Ranade chose the latter. In a letter to Sir William Hunter written long after Ranade narrated his experiences of this boycott "My younger sister who used to stay with me in Bombay was called away by her in-laws and they prevented us from meeting each other. Occasionally she used to visit me stealthily. My Brahman servants left me. If I engaged a new servant, for fear of being himself boycotted, he too left my service. We ceased to be invited to social functions. If our women went anywhere, they were insulted... If there was a death in the family, it was difficult to get men for the funeral... The marriages of members of my family which were settled before the commencement of the boycott were now cancelled. But we continued on our path; we brought about more widow-marriages." The boycott wore off eventually.

Meanwhile Ranade with the help of Ganesh Wasudeo Joshi popularly known as 'Sarvajanik Kaka' converted an inactive organisation 'Sarvajanik Sabha' founded in 1870 into an active platform for discussion on matters of public interest. Ranade through the platform of Sarvajanik Sabha criticized the imperialistic policies of the Britishers, while being in a government position himself, through the Sarvajanik Sabha journal started by him. The Times of India of Bombay regarded the Sabha as "a seditious, if not a secret, society." The effect was such that in a private letter to Ranade, Sir Michael Westrop, the Chief Justice of the Bombay High Court, wrote to him, "Your writings come in the way of your Promotion. If you want a promotion, spare these great efforts."

An interesting event happened in 1874 when Swami Dayanand Saraswati, founder of Arya Samaj, was invited to Poona by Ranade and a group of social reformers. Swamiji's lecture enthralled the audience which grew larger day by day. A few days before the end of Swamiji's lectures the reformers decided that a procession should be taken out in his honour. However, the orthodox saw this as a challenge and decided to interrupt the procession at any cost. On the day of the procession, they hurled curses at the procession and when the reformers paid no heed, they threw mud and stones at them, yet the reformers continued with the procession.

The orthodox nationalists of those times found allies in the anglicized cultural nationalists and wanted to conserve all that was 'Indian'. In the western part of the country, they were headed by the likes of Vishnu Krishna Chiplunkar and Bal Gangadhar Tilak. They were opposed to the ideas spread by the reformers and often called them agents of the Christian missionaries. In 1891 when the Age of Consent Bill was passed the supporters of the Orthodox section took out a mock funeral procession of the reformers, with reformist publications thrust into their hands, a garland of biscuits thrown around and a bottle of wine placed on the chest. This was the image created in the popular mind by their opponents.

It was in the 1890s when the difference between the Ranade group and the Tilak group had taken a political turn. The Tilak group scored a victory against the Ranade group by capturing power in the Sarvajanik Sabha in 1895 and the same year they succeeded in forcing the Ranade group from conducting the session of the Indian National Social Conference in the congress pandal. Ironically, in the 1907 session of INC, the Tilak group was attacked and dragged out of the session while the supporters of the other group spat at them. But this doesn't mean that Tilak held Ranade in low esteem. Once Tilak said, "Can we expect a peer of Ranade to be born within a hundred years after him?" Deep down in his heart, Tilak had respect for Ranade.

His opponents criticized Ranade for collaborating with the Britishers in implementing laws made from a Christian metaphysical perspective in the form of widow remarriage, raising the age of consent, education for women, etc. He was criticized by his fellow reformers when he under pressure from his father had to remarry a girl eleven years younger than him and when he had to perform a purification ceremony as he was accused of dining with Christians, to remove his father's mental agony. His fellow reformers called him treacherous and a coward. Ranade alone had to bear the wrath of some and the mockery of others.

After he was appointed as Judge of the Bombay High Court in 1893, his health started to deteriorate. Though he worked hard all along and even published papers and a book on Maratha history during 1898-1900. In the last year of his life, his condition deteriorated as the illness 'Angina Pectoris' went on increasing. On January 16, 1901, the life of this great scholar came to an end.

MENSTRUATION: FLOWING FREEDOM

AANCHAL
BA (H) English

Ahh, Menstruation? Sure, shedding of the uterine lining is called Menstruation, wait, is it all? Or is it what is taught? The term menstruation is far beyond this. Every month, your body prepares for a potential pregnancy by building a plush lining inside your uterus, ready to nurture a fertilized egg. In the absence of pregnancy, the lining sheds and is removed by a blood flow. This cycle typically lasts 28 days, though it can vary from person to person. It is a rollercoaster ride of emotions, a physical tango with your body and a monthly reminder of how strong you are and and and a relief that you're not pregnant. So, yes, it's clearly more than just a basic science.

That time of the month that sneaks up on you like an unexpected surprise test; you always know when it's coming, but you never quite know exactly when. A week of eating chocolates, staying in your comfy pyjamas, yelling at people for no reason, sounds fun? Some experience it as a soft transition, a nudging towards an internal change. While others experience a week or so filled with cramps that pull and ache.

Myths and Facts

However, menstruation is accompanied by various myths and taboos. It has an immediate impact on a woman's physical health, mental well-being and social life. Written below are some general myths and facts ÷

- Women should refrain from going to temples, as menstruation makes women impure for holy things or religious places. Periods are a natural biological process and not something related to impurity. Period blood isn't dirty, it's no different from the normal blood, just less concentrated.
- A menstruating woman shouldn't touch any fermented food or pickle as it leads to spoiling. Menstrual cycle of a woman is not at all responsible for such a thing happening. There is no scientific basis for this belief.
- Those who are menstruating should refrain from physical activity. Instead, menstrual cramps can be lessened and mood can be lifted with physical activity.
- Bathing or hair washing is not permitted while you are menstruating. Maintaining proper hygiene is what is required for comfort and preventing infections and washing hair during periods has no adverse effects.
- Menstruation is always accompanied by severe pain. As mentioned above it depends on individuals, some have minimal cramping and bleeding while for some it can be more intense and irritating.
- You can't get pregnant while on your period.
- Although less likely, pregnancy can still occur during menstruation. There's a chance of getting pregnant while on periods.
- Period-weary women are unstable emotionally. Women's moods can be impacted by hormonal fluctuations during menstruation, but they are not unstable.
- People who are menstruating shouldn't touch plants because it can make them whiter. For

plants to flourish, certain factors such as sunlight, nutrients and water are required. Menstruation doesn't affect these factors.

Types of menstrual cycles

Additionally, there are various kinds of menstruation cycles. Here's a brief synopsis:

- Regular cycle - Periods come on regularly and in a known length of time.
- Irregular cycle - It is characterized by unpredictable frequency or duration.
- Heavy periods - Severe bleeding that interferes with day-to-day activities.
- Amenorrhea - It is the absence of a menstrual cycle for three or more cycles in a row when the person is neither nursing or pregnant.

Seeking advice from a healthcare practitioner is crucial if you notice any troubling changes in your menstrual cycle, such as heavy bleeding, longer periods, or irregular cycles.

Taking good care during menstruation

Periods might be uncomfortable, but they shouldn't drastically disrupt your life. Taking care during your period is essential for maintaining your health and well-being.

- Hygiene - To stop bacterial growth and lower your risk of illness, practise excellent hygiene by changing your sanitary pads, tampons and menstruation cups on a regular basis. Wash your genital area with warm water and gentle soap rather than using some strong chemical products and perfumed items.
- Healthy Diet - Menstrual symptoms can be controlled and general health can be supported by eating a balanced diet full of fruits, vegetables and healthy grains.
- Heat Therapy - To reduce menstrual cramps and encourage relaxation, place a heating pad or warm compress on the lower back or abdomen. Pamper yourself with a hot bath.
- Rest - When it comes to resting during your period, pay attention to your body's needs, particularly if you're feeling tired or run down. In order to maintain general wellbeing, give yourself permission to take pauses, nap when necessary, and get enough sleep.
- Stay Hydrated- Staying hydrated will help minimise period cramps and bloating. Drink lots of water.

Remember-

- Menstruation is an indication that everything in your body is functioning as it should.
- It's a monthly reminder that you are capable of bearing children, healthy, and fertile.
- Yes, there may be some discomfort involved, but it's a discomfort that many of us share.

Conclusion

Menstruation shouldn't be hidden or ashamed of; rather, it should be embraced as a normal and healthy part of reproductive health. Collective action is needed to break the taboos around menstruation. So, Period warriors, raise your chins! Let's enjoy the flow, honour our bodies, and perhaps restock on extra-large pads this month.

References

1. Kumar A, Srivastava K. Cultural and social practices regarding menstruation among adolescent girls. Soc Work Public Health. 2011;26:594–604. [PubMed]
2. Kirk J, Sommer M. Menstruation and body awareness: linking girls' health with girls' education. 2006. [Last accessed on 2014 Aug 13]. Available from: http://www.wsscc.org/sites/default/files/publications/kirk-2006-menstruation-kit_paper.pdf
3. Article on menstruation, 2015 Apr-Jun; 4(2): 184–186, doi: https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC4408698/# 10.4103/2249-4863.154627 https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC4408698/

WORDS OF LOVE

SAMBHAV JAIN
BA (H) English, I Year

We come from darkness and go into darkness
But our life is colourful on this earth
But there are people who live in darkness
Right from the time of their birth
They are deprived of light
The light of kindness, love and care
Life for them is a terrible plight
Darkness surrounds them everywhere
Every man is born with an untold wealth
Preserved in his heart
He must find out that enormous wealth
And give it away.
Two words of love and consolation
And some help that you can give
Can bring many changes in them and fill their soul
With comfort and joy and make them live.
Two words of encouragement and sympathy
Are like sparks that can ignite
The souls and make them smile, with glee,
It can fill the darkness with light.
These words are like breeze,
That comforts a weary traveller
It has a magical power to ease
The pain of the sufferer
We have a short time on this earth
So let's change some one's unfortunate fate
And live life for all it is worth
Before it is too late.

ECHOES OF LOVE

RAINY VATS
B. A (H) English, I Year

In a crowded hall, our eyes first met,
A fleeting moment, but I won't forget.
Your smile, a beacon in the haze,
Igniting a fire in a heart ablaze.

From that instant, my world took flight,
Caught in the throes of one-sided light.
Like a moth drawn to a distant flame,
I found myself ensnared in love's sweet game.

But alas, the path we tread diverged,
Your gaze, a distant shore where I submerged.
In the caverns of my silent sighs,
Echoes of unspoken goodbyes.

Each day, I paint our tale anew,
In hues of longing, in shades of blue.
Yet you, a star beyond my reach,
In the sky of dreams, forever beseech.

Oh, one-sided love, a bittersweet dance,
A symphony of hope, a silent trance.
Though unreciprocated, it still holds sway,
In the labyrinth of my heart, it forever shall stay.

So here I stand, a poet of the unspoken,
In the pages of time, a love unbroken.
For in the realm of one-sided affection,
Resides a beauty, a poignant reflection.

GOING BACK TO THE PLACE YOU BELONG

SHUBHAANGI CHAUHAN
BA (H) English, II Year

It was winter outside but, I lay Standing on the threshold; chilling on the inside
With Racing thoughts and chaos in my mind I put that aside.
As I stepped in the college the very first time
I walked thoughtlessly, in a directionless spree
Like a wanderer in the ocean of suffering finally found a way meant to be
With endless anxiety as the real college pressure started to kick in And I decided to fit in
But somehow for every bit of stress or a bad mood
There awaits homies to rant with & the good old cafeteria food
For amidst the labyrinth called life if you ever feel lost again
Your mind will take you back to your first day and the place which held you in its holy embrace
And then it will dawn upon you that maybe you too, can belong
So much so that even after years go by, if someone would ask my way 'home',
My soul would whisper them the route back to college.

COSMIC HEARTSTRINGS

SHAMBHAVI GROVER
B.A (H) English, I Year

Real connection can't bubble through screens,
Nor can it be felt through a million audios and reels.
What a time to be alive in these momentary trends.
What a time to be alive in gossip and fickle-friends.
Couldn't we instead listen to guitar riffs and honey puffs.
Couldn't we instead look at written literature and start bursting up.
Couldn't we instead talk about aurora borealis and how those hues rush.
Cause all I want is to be in love;
Fall in deeper, be strangled and suffocated,
Cause apparently the current mania is to like it rough.

DEMONS OF MY DREAMS

RAGINI SHARMA
B.A (H) English, III Year

A crying kiss for a goodbye,
waterworks from the hallows,
that happen to be my eyes,
lifeless as I try to bid adieu.
a farewell to the gut-wrenching ache
to the throbbing of this heart.
my throat constricts,
clawing at the words threatening to spill
desperate attempts to barricade
and to stifle my being.
my mind is storm,
with rain and sunshine
devoid of rainbow, but.
amidst the two harbors I sail,
waves taking me as they will.
but this ocean is all but a room,
dark and deep and cold.
a doomed room to do away
where lives the demon of my dreams.
and today I push you out,
reluctant and unwillingly so
and to the demon I attempt to slay
yet every day, "of the door to your cold dungeon,
I ate the doorknob and now you can't come back in."

LET ME SING YOU

CHEICK ARWATA
B.A (H) English, II Year

Faith is where you are
The young people won't understand-you are
Our world is brightened with you as the moon
Unity comes unfailing – unbroken

Magical light which enlightens
As the apparition of stars in midnight you extend
As the golden of the day, you offend
Beautiful you are

E is made for everything
R was once a little rose
Rose which enlightens your everything
Rose which brightens your existence

Thanks for your
Friendship – presence – smile – kindness
Happiness – love – existence – muse.

SICKNESS LOVE

CHEICK ARWATA
B.A (H) English, II Year

Graving the sky hardly – early in the morning
On the bench is sitting the boy consciously
At the first glow appear the beauty of the golden rising
Suddenly a formal feeling seems subconsciously

Missed in thoughts farewell to lover heartbroken
Waking in a flowery tale and faced this cruel world
I maybe brave and heartbroken
Conflicts – disasters, remain my world behind

Looking back eyes closed with tears
Looking middle eyes half open with half-tears
Yet hope transcend time days and nights between
Back to middle and goes beyond
Fearlessness ye born in bravery – ye adversity
My feature maybe bright

One little chrysanthemum one little ghost
How dare – how foolish
Thou little dark – thou little light
Why do you hunt me

When Adam and Eve caress the sky and the earth
When the first disobedience pass
When the first punishment birth
When thy transcend sky to earth

From east to west they remain
Two hearts once connected
Distance fails Satan fails
Love once wins.

GAP BETWEEN REALISM AND ILLUSION "THE PICTURE"

CHEICK ARWATA
B.A (H) English, II Year

Thou tell me
Thou assert me
Ye love – inclination – uncertainty
Blind when there's light

Pointless by you whole day, seek by you whole night
sorry but there's no more fight
Regrettably the poor heart is no longer
Love is not made by constraint

Thought is it by kindness
Millions of days millions of nights
As protector as God…..awake ..immobile
None a mosquito approach thee
Thirsty – lonely cannot ask water
Hungry – sad cannot ask food
None a word because of fear
Wonder I wonder when she'll look at me

Uncertainty…. Thou please tell me
Ye which kind of relationship
Love is he? Fear only? Confusion
My heart keeps wandering

Yes, the heart has spoken but
Yet the mind confines it as distraction
Then I lost the point – l lost what's real
Thou tell me what ye should do…..

GAP BETWEEN REALISM AND ILLUSION "DREAM"

CHEICK ARWATA
B.A. (H) English, II Year

As normal as life and happiness
As transcend days to nights – nights to days
As normal as thou cherish air – thou breath
As beloved called astrophile – as natural love is

Truth comes with confession
Finally l speak
Thy say God saves world
Thy say world saves men
And men save love

two soulmates canonize together
First time I've seen thee my heart is breathing with
I have fallen in love don't blame me
Before you there are no words
There are no songs

My soulmate please listen
Thou made me poet – so thou are my words
Thou made me writer- so thou are my muse
Thou made me singer – so thou let me sing you

My soulmate don't blame me
The simple smile bright my universe
Before you there's no picture
Without picture there's no dream

A dream where l cured all pains
Where l can say
two destinies become one – you're mine and am l
you're my cure and am l – where you're my love
Whenever thy are together
breathing become heavy
two hearts hunting
Dreams light up their eyes
Lips silent but their eyes speak

Yet silently – quietly thy become close
Everything become clear
Magic is working
Shall I wake up or sleep?

Thou tell me
Is Love truth – truth ye love.

Dream "Day and reality ends a magic world"
D: day and
R: reality
E: ends
A: a
M: magic world

BEING IN THE MIDDLE

VINAMRA SHARMA
BA (H) English, III Year

Being in the middle
Or being the middle
Being the epicentre on which things
Revolve
Or being neglected as things revolve around

But the question may
And always may be
However, the situations look
Vague
But it always be

You'll be the centre whether someone remains
Or if someone may not be.

INDIAN JUDICIARY: TAINTED LEGACIES AND THE HOPE OF REDEMPTION

ANSHUL
BA (H). Philosophy, II Year

"An effective justice system is the cornerstone of a just society" said Kofi Annan, the former Secretary-General of the United Nations. What is justice? Why is it a paramount necessity for a well-functioning society? These enquiries are not exactly new; they have been contemplated and discussed in great detail by both ancient and contemporary thinkers. These questions provide us with the impetus to embark on a short journey of philosophical reflection.

The concept of Justice is artificial and abstract, it isn't built into the fabric of the world. The planet in its true form is unordered and chaotic. Sharp streams of water cut into rocks, volcanoes spew out magma, higher beings consume lower beings, inception and cessation, side by side and all at once. Human beings look for order and stability and thence arises the need for societal constructs and institutions like justice and judiciary. While my views seem somewhat in line with thinkers like John Rawls and Aristotle, they differ from the views of Plato who thought of justice as an objective reality which exists irrespective of human opinion. Justice in its meaning enjoys lesser divergence and is thought of by most as being about fairness and equality. The essence of Justice is present both in its understanding as "the performance of societal roles and non-interference" by Plato and in the modified social contract of Rawls with the hypothetical "veil of ignorance". Though philosophers held different views on what justice meant and represented, most of them agreed that it was essential for the creation of a fair and equitable society. We must hence, advance with this notion and look into the feasibility of justice and the effectiveness of the Indian judiciary and its machinery in delivering it.

We must begin by raising a fundamental question. Can a common Indian, overburdened with work, constrained by the shackles of society with little funds to spare, possibly find a glimmer of hope in the frowzy courts of India? The ones characterized by gloomy corners, musty rooms and libraries of grimy ledgers. Even sunlight fails to seep into those records, let alone justice. This essay shall emphasize upon the major impediments in India's path to establish peace and harmony for the people that inhabit it. Moreover, the measures required to alleviate these circumstances and construct feasible bridges to justice for the citizens of India shall also be the points of focus.

The judicial muddle India faces today is omnipresent yet easily overseen for it confines itself to only those who deal with it. With an alarming escalation in crime rates and amidst rapidly surging communal turmoil, India struggles with the execution of the sixteenth goal of the United Nations Sustainable Development programme, "Peace, Justice and Strong Institutions". According to a report published in the Hindustan Times "Over 3.7 million, or around 10 percent of the 37.7 million cases before high courts, district and taluka courts across India, have remained pending for over a

decade". This report proficiently highlights the hurdle of the hour. It also talks about a significant number of these pending appeals being as old as two to three decades. A decade of delay in delivering justice is nothing but preposterous, and is inexplicable under any conditions whatsoever. Not only does it undermine the principal ideas of "speedy trial and disposal" but also defeats the very purpose of the judicial process. Many of the appellants and victims in these cases complete their life spans before justice can reach out to them. In other cases people accused of grave criminal activities which do not permit bails, serve their whole sentences without actually being guilty of the accusation. These instances tend to erode the legitimacy of the judiciary and turn it against the people it strives to protect and empower. It all boils down to a single conclusion succinctly phrased by William E. Gladstone "Justice delayed, is justice denied".

The springing up of these complications isn't a happenstance but an accumulated result of many former policies. One broad example could be the ghettoization and social isolation of the downtrodden. The gradual alienation of these folks from the mainstream public has resulted in the creation of negative sentiments and increased belligerency amongst them. Have courts and tribunals become the domain of the posh? Modern day court hearings require an extravagant amount of funds, both from the accused and the accuser. Our society is undeniably on the wrong path if the availability of justice hinges on the flow of cash. The judiciary, as assigned to the people by the constitution of India, is an independent body, free from the reach of muscle power and political influence. Unfortunately, that is not the truth of today. The infallibility and transparency of the system has also become a point of debate. On multiple instances, renowned tribunals of India have passed rather nebulous decrees. In layman terms the courtrooms seem to act differently for different people. The statements issued by the various councils have reeked of bias and logical fallacies. These propositions even existing among its people is nothing but a shame for any judicature around the globe. Numerous backward areas of the country have reported the lack of proper infrastructure and the irregular attendance of attorneys, judges and other court faculties. These are just plain failures for the people of the nation who are undoubtedly at the brink of a major collapse, if they keep failing the guidebook that runs the country.

The last words of the sixteenth goal of the UN programme are laden with the capacity to both define and dissolve the problem. The probable key to these setbacks could be strong, efficient and transparent institutions at all levels and for all people. If the judiciary has to be relevant, it must do what every organism does to survive in nature; adapt and evolve. Courtrooms need to let go of the classical system and embrace the benefits of digital technology. Digitalization of the court records and digitally powered court hearings are sure to be the harbingers of efficiency and transparency in the judiciary. The digital platform will also aid the credibility of the judicature and ensure its smooth and steady functioning. Pending files would no longer glut the judicial offices and the middlemen would soon fade away making law and justice attainable and practicable. Though even technology is not flawless and the drawbacks of the digital platform may take time to address, the progress will be exceptionally significant. A few long-term measures could be the strengthening and widening of the education system and spreading the values

of cultural and economic inclusiveness. These steps will blunt the increasing crime rates and promote a peaceful society ultimately reducing the load on the judiciary. There should be persistent attempts made to liberate the needy and help them feel equal and welcome. Every citizen of the country including the people at the grass root level should be active participants of the judicial process. A just society will but be a figment of utopia until the one standing at the margin can access and rely on its institutions. No one shall suffer the adversities of injustice. No one shall die resentful and embittered.

The current crisis needs contemplation and intervention. The judiciary requires timely maintenance. We must answer the call and step ourselves up in the fulfilment of our duties because "If we do not maintain justice, justice will not maintain us".

THE LINES

NITIN "NIHAL"
Bsc. (Hons), Zoology

The poem presented ahead tries to lessen the gap created between two social roles by society in the name of bodily variations, establishing gender equality to see beyond conditioning.

The lines that make me
is different from thee
is just a Mirage that becomes
as big as the distance between us.
If you come closer to me
in my eyes you will see
a mirror image of "she"
conditioned differently.

SO AM I

BALJEET SINGH
B.A (H) Hindi, III Year

Your tears and cheers
Your comfort and fears
You being crazy or sincere
are all awaited to be welcomed and cherished
My place is missing you, so am I.

My vanity desk is eagerly waiting for you to have a seat back again
The mirror is happy seeing you in himself, so am I.

My pillow got addicted to your fragrance you left on it
It doesn't let me sleep these days
My pillow is insatiable and restless, so am I.

The vodka left in the bottle
and those uninitiated conversations
remain silent and undisturbed
waiting for you to come back and enliven them with your innocence, calm and peace, so am I.

The memories we made are quite enough to rely upon for this small life
But it's the human nature to be voracious for their favourites
So is human, so am I

VISHAL KUMAR SHARMA – B.A. (Hons.) Sanskrit

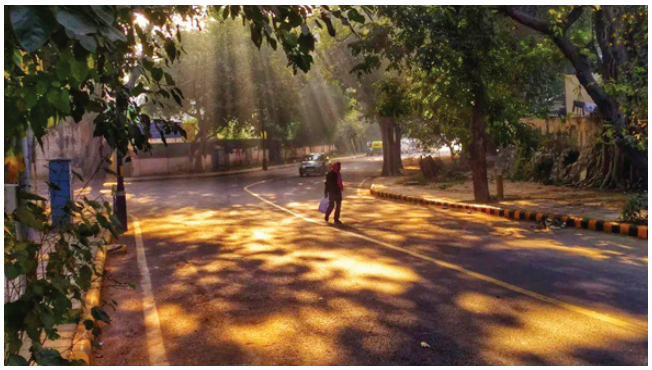

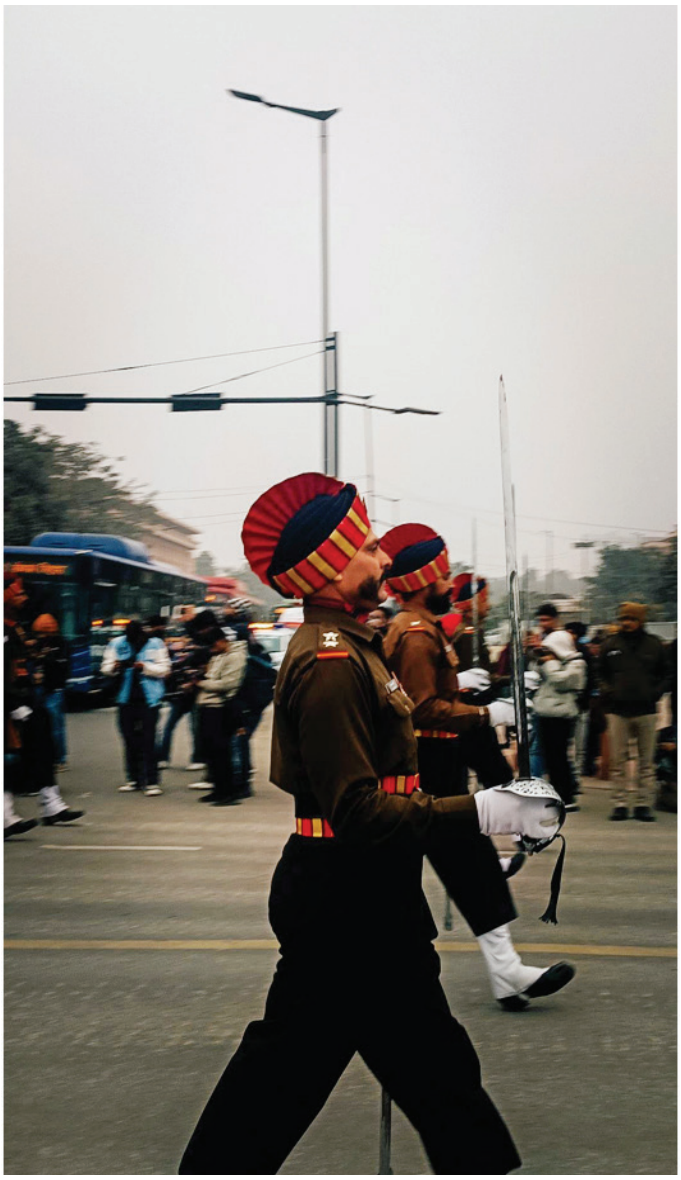

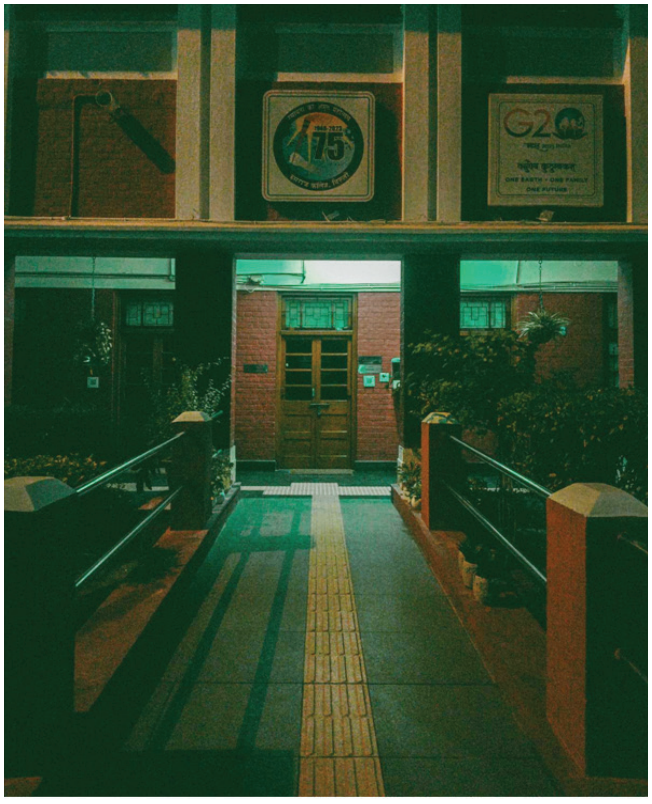

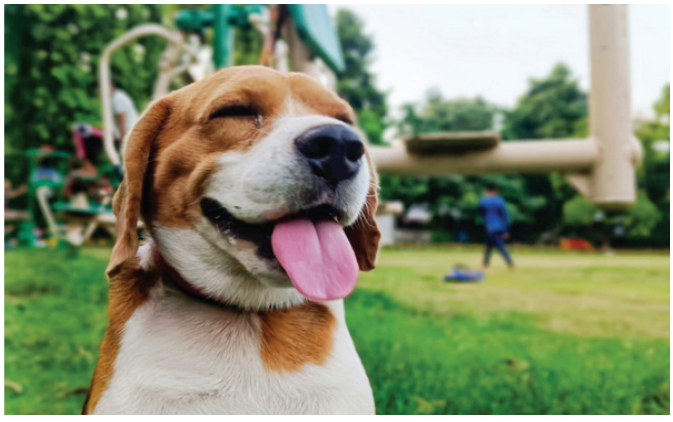

PREETI SHAH
B.A. (Hons.) Hindi, III Year

संस्कृतखण्डः

संपादकः

डॉ. सतीशकुमारमिश्रः

विद्यार्थिसम्पादकमण्डलम्

दिया तिवारी
कुमार आदर्शः

अनुक्रमणिका

1. रात्रिर्गमिष्यति नूनं भविष्यति सुप्रभातम् - गर्व अग्रवालः ---- 50
2. अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्- दिया तिवारी ---- 50
3. शुकनासोपदेशात् पद्यरूपेण लक्ष्मीचरित्रवर्णनम् - कुमार आदर्शः ---- 51
4. के कौरवाः के पाण्डवाः - कुमार आदर्शः ---- 52
5. मौनव्रतं करणीयम् - वैष्णवी ---- 52
6. विज्ञानं प्रौद्योगिकी च - सृष्टि ---- 53
7. संख्याविशेषः- चत्वारः – शुभमः ---- 53
8. पुस्तकेन सहैव मित्रतां करणीयम् - प्रेमजीतः ---- 54
9. नर-नारायणपर्वतशृंखला - गर्व अग्रवालः ---- 54
10. पर्यावरणस्य उपरि वर्धमानस्य दुष्प्रभावस्य परिणामः- शिवांशी मिश्र: ---- 55
11. मम हृदयस्य व्यथा – कुमार आदर्श: ---- 56
12. बिहारोऽहम् - पीयूषः ---- 56
13. प्रकृतिश्च पुस्तकालयम् - सुनीलकुमारः ---- 56
14. विवक्षुगणः - कुमार आदर्शः, गर्व अग्रवालः ---- 57
15. भारतवर्षे भाषाध्यायम् - अंकितः सिंहः ---- 58
16. अस्माकं महान् देशः - प्रिंसकुमारः ---- 58
17. 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' – बासुकीनाथ झा ---- 59
18. क्रियापदानानां ज्ञानम् – रामचंद्रपाण्डेयः ---- 60
19. वस्त्रं किमर्थम्? - ॐकारनाथ झा ---- 60
20. तस्याः स्वरः तस्याः बलम् - रिद्धिमा जैन ---- 61
21. महिलासशक्तिकरणम् – सृष्टि ---- 61
22. आध्यात्मिकताद्वारा मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनम् - आदित्यकुमारमिश्रः ---- 62
23. गीतम् - त्वमेव मम पूर्णभूमिः ---- 62
24. हास्यकणिका – विशालः ---- 63
25. चाणक्यनीतेः १० प्रमुखश्लोकाः – पलकपाण्डेयः ---- 63
26. काकः – सृष्टि ---- 64
27. प्रथमे प्रथमे कृतम् (पहिले पहिले हम कईनी) - वैष्णवी ---- 64
28. कोऽस्ति स्थितप्रज्ञः?- ॐकारनाथ झा ---- 65
29. पुस्तकालयं प्रति प्रेम – अंकुशः ---- 66
30. संविधानस्य प्रस्तावना - विवेकः ---- 66
31. संस्कृते डायरीलेखनम् - अमितः ---- 67

रात्रिर्गमिष्यति नूनं भविष्यति सुप्रभातम्

गर्व अग्रवाल:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

दुःखमेघानि गमिष्यन्ति भविष्यति गगने प्रकाशम्।
असत्यमनाचरं न विजयते जयते एव सर्वदा सत्यम्।।
पुनर्विकसन्ति पुष्पाणि दृश्यते च लोके हर्षोल्लाजम्।
रात्रिर्गमिष्यति नूनं भविष्यति सुप्रभातम्।।

दुखं नास्ति शाश्वतं कान्तिसौन्दर्यवैभवमैश्वर्यम्।
येषां प्रादुर्भावं दृश्यन्ते मृत्युलोके भवति खलु मरणम्।।
पुनर्कूजन्ति पक्षिणः गगने जगति भविष्यति कोलाहलम्।
रात्रिर्गमिष्यति नूनं भविष्यति सुप्रभातम्।।

कर्म एव मम हस्ते फलस्य चिन्ता नास्ति मम कार्यम्।
न शयीत चिंताङ्के, चिंता चिता इव विदुषां वचनम्।।
पुनर्वृष्टि इहलोके धरायाम् अंकुराणां अपि उद्भवम्।
रात्रिर्गमिष्यति नूनं भविष्यति सुप्रभातम्।।

अधुना कोऽस्ति मे सखा अमित्रमेव जगति सर्वम्।
सर्वे परित्यजयन्ति मां, मया सह मे आत्मबुद्धिबलम्।।
पुनर्वदामि तदा इहलोके श्रोष्यन्ति मे जनाः वचनम्।
रात्रिर्गमिष्यति नूनं भविष्यति सुप्रभातम्।।

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्।

दिया तिवारी
स्नातकतृतीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

भाषाया: शक्तिं ज्ञातुं अतीव कठिनं भवति, बुद्धौ उपस्थितापि, जाननां कर्णेषु गुंजायमानं भवति। ध्वन्यात्मकत्वे अपि, वाक्येषु प्रयुक्ता भवति। मनुष्याणामस्तित्वात् देवसत्त्वपर्यन्तं कारणमस्ति। सा 'ॐ' एतस्य आधारा, वेदज्ञानयुक्ता भाषा, काले-काले स्वरूपं परिवर्तयति परंतु तदपि तस्या: महत्वं किंचित् अपि न्यूनं न भवति।

ऋग्वेदे इमाम् वायुना सदृशा सर्वव्यापी शक्ति: वर्णित्वा, तां जगत: निर्माणस्य श्रेयं दत्त:।

अहमेव वात इव प्र वामि आरभमाणा भुवनानि विश्वा। ऋग्वेद (१०-१२४-८)

अनेन उदाहरणेन वयं भाषाया: सामर्थ्यं अवगन्तुं शक्नुमः यत् एकतः स्वभाषायाः गौरवं कृत्वा एकस्मिन् देशे निवसन्तः हिन्दीभाषिणः तमिलभाषिणः च मध्ये युद्धं भवति, अपरतः विदेशेषु निवसन्तः हिन्दीभाषिणः तमिलभाषिणः च जनाः एकपरिवारवत् जीवन्ति। अतः जनानां एकीकरणस्य वा विभाजनस्य वा बृहत्तमः स्रोतः भाषा एव अस्ति, इति वक्तुं न संशयः।

यथा अस्माकं देशस्य भङ्गार्थं आङ्ग्लै: प्रथमं अस्माकं भाषां परिवर्तयन्ति स्म, सर्वेषु संस्थासु च आङ्ग्लभाषां अनिवार्यं कृत्वा अस्माकं मातृभाषां दमनं कर्तुं प्रयासं अकरोत्। किन्तु, स्वातन्त्र्यकाले रवीन्द्र नाथ टैगोर, सरोजिनी नायडु इत्यादयः महाकवय: केवलं भाषायाः माध्यमेन जनानां हृदये क्रान्ते: अग्निं प्रज्वलितवन्तः, येन आङ्ग्लशासनम् अपि भस्मं अकरोत्।

अत एव ऋग्वेदे वाक्सूक्ते वाक् देवी स्वयं एव वदति-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्। -ऋग्वेद (१०-१२५-३)

लोके न हि एतादृशं ज्ञानं विद्यते यत् भाषाया: अधीनं न भवति वा तया व्याप्तं न भवति।-

नसोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते। अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते।।
-वाक्यपदीय (१-१२४)

विज्ञानं भवतु, अर्थशास्त्रं वा वास्तुकला वा, भाषा एव सर्वविधज्ञानं ज्ञातुं वर्धयितुं च एकमात्रं माध्यमम् अस्ति। सा एव अस्ति, यस्या: माध्यमेन अयं समस्तं जगत् प्रकाशितः भवति।

जगति तस्या: बहवः विविधताः भवति, किन्तु तेषां सर्वेषां भेदानाम् विशेषता एतत् भवति यत् सर्वा: भाषाः स्व स्व राष्ट्राणि उन्नतं कर्तुं निरन्तरं ज्ञानं वर्धयन्ति।

राष्ट्रेण सुदृढीकरणेन सह भाषा जनानां मध्ये प्रेमभावना अपि वर्धते। प्रत्येकं भाषा स्वभाषा-भाषीं एकतायाः सूत्रे बध्नाति अतः भिन्नाः सन्तः अपि ते एकतां अनुभवन्ति। यथा, अन्यस्य राज्यस्य यात्रायां यदि स्वराज्यस्य व्यापारिणं मिलति तर्हि केवलं भाषाया: प्रयोगेन एव तस्मिन् एतादृश: मैत्रीभावः उत्पद्यते यत् सः स्वस्य वणिक्धर्मं विस्मृत्य प्रेम्णा वस्तुनां मूल्यानि न्यूनं करोति।

अत एव वाक्सूक्ते वाक् देवी स्वयं एव कथयति-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्। -ऋग्वेद (१०-१२५-३)

भाषायाः माध्यमेन मनुष्याः स्वस्य पूर्वजानां भावनानां, विचाराणां, अनुभवानां च संरक्षणे सफलाः भवन्ति, तत् ज्ञानं च अग्रे वहन्ति। अस्माकं जीवनस्य कोऽपि क्षेत्रं नास्ति यत्र भाषायाः महत्त्वं प्रयोगं वा नास्ति। भाषा समाजस्य आधारा भवति तथा च सा समाजस्य आकारं दत्त्वा तस्य संस्कृतिं च व्यवस्थितं करोति।

सभ्यसंस्कृतौ समाजे च निवसन्तः जनाः अपि सभ्याः भवन्ति, परस्परं सहकार्यं कृत्वा सात्विकं जीवनं यापयन्ति।

अस्य कारणात्, वाक्सूक्ते वाक् देवी स्वयं एव कथयति-

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाम्।

शुकनासोपदेशात् पद्यरूपेण लक्ष्मीचरित्रवर्णनम्

कुमार आदर्श:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

अथ महाकविबाणभट्टेन विरचितात् शुकनासोपदेशात् लक्ष्म्याः चरित्रवर्णनम्।

नारायणीरमापद्मासिन्धुजाब्धिसुतामहम्।
इन्दिराकमलां वन्दे चञ्चलाहरिसंगिनीं।।१।।

शुकनासोपदेशात् नैषा कृतिः स्वनिर्मिता।
बाणभट्टस्य पद्यायां उद्धरिता महाकवेः।।२।।

दुर्वासर्षेऽभिशापात् हि लक्ष्मी वसति सागरे।
विष्णुना सह्यते दुःखं सागरः हर्षितोऽस्ति वा।।३।।

समुद्रमंथनादेव लक्ष्मी सख्यान्यया सह।
देवासुरप्रयासेन पुनरोद्भवति श्रीयम्।।४।।

यदागच्छति विच्छेदसमयः कष्टदुःखं हि।
तदा मित्रस्य चिह्नानि दुःख्यपि सर्वदा सुखं।।५।।

रत्नात् किंचित् गृहीत्वैव लक्ष्मीरपि चतुर्दशात्।
तया न स्वीकृतं सद्गुणमपितु विलोमम्त्वत्।।६।।

चन्द्रनात्वक्रताम्रागं स्वपारिजातपल्लवात्।
व्यवहारादस्ति वक्रा सा तस्योऽनुरागनश्वरं।।७।।

उच्चैः श्रवाहयादेव कालकूटविषात्रमा।
चंचलतां गृहीत्वा सा सम्मोहनस्य शक्ति श्र्या।।८।।

मदिरायाः मदं प्राप्य मणेः नैष्ठुर्यमाति सा।
उन्मादं जन्यते तया अस्ति सा निर्दयातीव।।९।।

बाणभट्टेन गद्यैव मयापद्ये कृतं इमम्।
अन्ते पुनः रमां वन्दे महते कवये नमः।।१०।।

के कौरवाः के पाण्डवाः

कुमार आदर्शः
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

कान् कथयानि कौरवान् अद्य
कान् अहम् पाण्डवान् अत्र

प्रश्नोऽयम् अति जटिलः प्रतीयते
सर्वत्र शकुनेरिव भ्रमजालः दृश्यते!
युधिष्ठिरः पुनर्क्रीडति द्युतक्रीडां सर्वदा
प्रत्येकपंचायते पाञ्चाली अपमानिता

धर्मराजः अधुनापि धर्मं संरक्षति।
सभा द्रौपद्याः चीरहरणं पश्यति।
तत्र तु वासुदेवाः कृष्णाः आगताः।
किमत्र अधुनापि आगमिष्यन्ति?
किं धरायाः प्रत्येकपाञ्चालीनाम्
मानं सम्मानं गौरवं च रक्षयिष्यन्ति?

धर्माणां पुरोहिताः एव धर्मपदं लाञ्छितवन्तः!
पतेः अधिकारं समाजे पत्न्यां स्थापितवन्तः!
भ्रातरः अप्यत्र स्वतंत्राः स्वकर्तव्येषु न दृश्यन्ते,
ज्येष्ठानां वर्चस्वं कनिष्ठेषु ते स्थापितवन्तः!

किन्तु सा पाञ्चाली भिन्ना अस्ति
पुत्रमोहे आनायासा एव आगतवती,
स्वयंवरम् अभवत् अर्जुनेन सह दृष्टम्
व्याहाता पंचपाण्डवानां कथं कथिता?

अद्य पंचपतिनां भार्या क्रन्दति च रोदिति
आत्मरक्षायै अद्य सभामध्ये संघर्षं करोति
धर्मचीरानि धारयित्वा पितृगुरुनृपजनाः उपविष्टाः
कुलवध्वाः सभायां वस्त्रहरणाय सन्ति प्रतीक्षारताः!

दुश्शासनस्य हस्तयोः अद्य कंपनं न भवति
किम् भातृजाया समाजे माता इव न पूजिता?
सः दुष्टः मात्रा सह इदृशं व्यवहारं करोति।
मर्यादां उलङ्घयति नास्ति नेत्रे न्यूनपि लज्जा!

दुर्योधनकर्णयोः जिह्वे भूमौ कर्तयित्वा न पततः।
उच्चरिताः शब्दाः नार्याः अस्मितां भङ्गं क्रियन्ते!
सा सभा सर्वप्रलापं शृणोति नास्ति बधिरा।
यस्यां हस्तिनापुरकुलवधूः वैश्या कथिता।

राजा अक्ष्णा काणः किन्तु नास्ति कर्णेन बधिरः,
पाञ्चाल्याः क्रन्दनं रुदनं च श्रुत्वापि विश्रुतः।
यदि गेहे पिता धृतराष्ट्रः सदृशः पुत्रश्च दुर्योधनः
तर्हि तु निश्चितमेव भवति अविरामः महासंग्रामः।

हे द्रौपदीसखा! हे कृष्ण! अधुना किं चिन्तनीयम्?
धर्मयज्ञं नूनं अवश्यमेव भारतभूमौ भवनीयम्,
पाञ्चजनस्य उद्घोषं अधुनैव भवता करणीयम्।
द्रौपदी स्वकेशमवलम्ब्य रोदिति, नाधुना श्रवणीयम्,

महाभारतं महाभारतं महाभारतमेव अधुना भवनीयम्।

मौनव्रतं करणीयम्

वैष्णवी
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

न श्रूयन्ते जनाः कश्चन्नपि तदा न कथनीयम्।
स्वेन सह वार्तां कृत्वा लेखं नित्यं लेखनीयम्।
अस्मिन् काले जनाः केवलं कथयितुमिच्छन्ति।
श्रवणेच्छां त्यक्त्वा केवलं वक्तुमिच्छन्ति।
तर्हि केवलं श्रेष्ठोपायमचिरात् मस्तिष्के आयाति।
न वदनीयम् न वदनीयम्, मौनव्रतं धरणीयम्।।१।।

उक्त्वा किमभवत् यदधुना पुनरोक्त्वा भविष्यति।
नेत्रं निमिल्य मौनं भूत्वा च स्वयात्रायां गमनीयम्।
स्वात्मना सह वार्तां कृत्वा स्वविषये ज्ञानीयम्।
कोऽत्र भवतां सुहृत्! यस्मिन्नेव त्वं विश्वसनीयम्।
सर्वबन्धनं त्यक्त्वा पुस्तकेन सह मित्रतां भवनीयम्।
न वदनीयम् न वदनीयम्,मौनव्रतं धरणीयम्।।२।।

विज्ञानं प्रौद्योगिकी च

सृष्टि
स्नातकतृतीयवर्षः संस्कृतविशेषः

अस्माकं दैनन्दिनजीवने विज्ञानं प्रौद्योगिकी च महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहति। वयं रात्रौ दीपं निष्कास्य प्रातःकाले अस्माकं अलार्मघटिकानां ध्वनिं कृत्वा शयनाद् उत्तिष्ठामः। विज्ञानं प्रौद्योगिक्याः च एतानि सर्वाणि विलासितानि क्रेतुं समर्थाः अभवन्। सर्वाधिक महत्त्वपूर्णं तु विज्ञानस्य प्रौद्योगिक्याः च विकासः एव कारणं यत् वयं एतावता अल्पे काले एव अस्माकं जीवने अधिकांशं कार्यं कर्तुं शक्नुमः। विज्ञानं प्रौद्योगिक्यं च विना अस्माकं आधुनिकजीवनपद्धतेः कल्पना कठिना अस्ति।ननु अस्माकं निरन्तरजीवनाय इदानीं अत्यावश्यकम् अस्ति। प्रतिदिनं नूतनाः प्रौद्योगिकयः विकसिताः सन्ति येन जीवनं सुलभं, आरामदायकं च भवति।वयं वैज्ञानिक-प्रौद्योगिकी-युगे स्मः। विज्ञान-प्रौद्योगिक्याः कारणात् अनेकानि सभ्यतानि स्थापितानि सन्ति। इदं प्रतिष्ठानं प्रतिदिनं वर्धते। एतेभ्यः जनाः लाभं प्राप्नुवन्ति, येन जीवनं अधिकं आनन्ददायकं, आरामदायकं च भवति।

विज्ञानप्रौद्योगिकीनां महत्वानि –

- विज्ञानस्य प्रौद्योगिक्याः च पर्याप्ताः लाभाः मनसि आगच्छन्ति। तेषां आकारः लघुतः महत्त्वपूर्णपर्यन्तं भवति। यथा, वयं यत् प्रातःकालिकं वृत्तपत्रं पठामः, यत् अस्मान् विश्वसनीयसूचनाः प्रदाति, तत् वैज्ञानिकप्रगतेः उत्पादः अस्ति। तदतिरिक्तं प्रौद्योगिक्याः वृद्ध्या रेफ्रिजरेटर्, कण्डिशनर, माइक्रोवेव, इत्यादीनां विद्युत् उपकरणानां विकासः अभवत् येन जीवनं सुलभं भवति।
- चिकित्साशास्त्रस्य कृषिस्य च क्षेत्राणि अपि तथैव विज्ञानेन प्रौद्योगिक्या च प्रभावितानि सन्ति। विज्ञानस्य विविधरोगचिकित्सानां कारणेन कोटिकोटिजनाः प्राणाः रक्षिताः सन्ति। प्रौद्योगिक्याः कारणात् विविधसस्यानां उत्पादनं अपि सुदृढं जातम्, येन कृषकाणां महती सहायता अभवत्।

भारत एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

- आङ्ग्लयुगस्य समाप्तेः आरभ्य भारतं विश्वव्यापीरूपेण वार्तायां प्रवृत्तः अस्ति। भारतस्य स्वातन्त्र्यप्राप्तेः अनन्तरं विज्ञानं प्रौद्योगिक्याः च उन्नतौ साहाय्यं कृतवन्तौ। अधुना विश्वव्यापीरूपेण नवीनस्य मौलिकस्य च वैज्ञानिकप्रगतेः महत्त्वपूर्णः स्रोतः अस्ति। अन्येषु शब्देषु अस्माकं राष्ट्रे कृताः सर्वाः विलक्षणाः वैज्ञानिकाः प्रौद्योगिक्याः च उन्नतयः भारतीय-अर्थव्यवस्थायाः लाभः अभवत्।
- अद्यतनतमं उपलब्धिं दृष्ट्वा चन्द्रयान २ भारतेन सफलतया प्रक्षेपणं कृतम्। भारतस्य चन्द्रयात्रायाः प्रशंसा सम्पूर्णविश्वस्य समीक्षकैः प्राप्ता अस्ति। पुनः एताः उपलब्धयः सम्भवं कर्तुं विज्ञानं प्रौद्योगिकी च उत्तरदायी आसीत्।

अस्माभिः स्वीकारणीयं यत् प्रौद्योगिक्या विज्ञानेन च मानवसभ्यतायाः उच्चतमजीवनस्तरं प्राप्तुं साहाय्यं कृतम् अस्ति, अग्रे अपि भविष्यति। तथापि अस्माभिः सर्वं अल्पतया, मध्यमतया च उपयोक्तव्यम्। प्रौद्योगिक्याः विज्ञानस्य च दुरुपयोगस्य दुष्प्रभावाः भवितुम् अर्हन्ति तथा च वयं तेषु केषुचित् सह व्यवहारं कुर्मः। अतः अस्माभिः विज्ञानस्य प्रौद्योगिक्याः च वरदानस्य उपयोगं कुर्वन् उपयोगे दृष्टिः स्थापयितव्या, सावधानी च करणीयम्।

संख्याविशेषः - चत्वारः

शुभमकुमारः
स्नातकद्वितीयवर्षः बी ए प्रोग्राम (संस्कृत+ दर्शनशास्त्र)

(चतुर्थवित्रक्षुगणसम्मेलनस्य कृते कृता रचना अनुष्टुपछन्दसि।)

चतुर्युगं चतुर्वेदाः चतस्रः नितयः सन्ति।
चतुर्वर्णाः चतुः धामाः अद्यचतुर्थगोष्ठ्यपि।।१।।
सन्त्यत्र चतुराश्रमाः चतुर्हस्तः मुरारि हि।
पुरुषार्थापि चत्वारः ब्रह्माननान्यप्येविव।।२।।
संगोष्ठीयं चतस्रः हि अद्य मन्यामहे वयं।
संस्कृतप्रेमिणः मञ्चे वन्देसंस्कृतमातरम्।।३।।
उपस्थितिः मया वन्दे संस्कृतोपासकान् दृष्ट्वा।
देववाण्याः शिशूनां मे चरणौ प्रणमाम्यत्र।।४।।
हर्षोल्लासेन तीव्रेण परिश्रमेण ध्यातव्यं।
संस्कृते वक्तुं कामोऽहम् दृढ़निश्चयमेव मे।।५।।

पुस्तकेन सहैव मित्रतां करणीयम्

प्रेमजीत:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

कोऽत्र भवतां सुहृत् यस्मिन्नेवं विश्वसनीयम्।
रागद्वेषस्वार्थान् त्यक्त्वा एव मित्रतां करणीयम्।
नास्ति अत्र एकोऽपि यं मित्रपदने अलंकरणीयम्।
मित्रं परं पुस्तकं येन सह चिंतनं विना भवनीयम्।
अतः कथयामि, पुस्तकेन सहैव मित्रतां करणीयम्।।१।।

पुस्तकं भवतां मित्रं, लेखनी सखी इव दर्शनीयम्।
पुस्तकात् वागर्थौ,पुस्तिकायाः धैर्यं स्वीकरणीयम्।
किमर्थं भ्रमति देवालयं पुस्तकालयमेव गमनीयम्।
क्व दिवसः क्व रात्रिः मौनं भूत्वा च पठनीयम्।
अतः कथयामि, पुस्तकेन सहैव मित्रतां करणीयम्।।२।।

मुखमवलोक्य सखत्वं कञ्चिदपि न दानीयम्।
स्वार्थसाधनस्य कृते तु मित्रतां न स्पर्शणीयम्।
मित्रताकरणस्य पूर्वम् एव हृदयमुद्घाट्य पठनीयम्।
यदि प्राप्यते मित्रं गर्वेव कदापि तं न त्यजनीयम्।
अतः कथयामि, पुस्तकेन सहैव मित्रतां करणीयम्।।३।।

वृक्षबीजारोपणमिव सखत्वबीजं हृदये रोपणीयम्।
विश्वासप्रेमस्नेहवात्सल्यात् दिनं प्रति सिञ्चनीयम्।
यदि मदभेदं भवति उपविश्य निवारणं अन्वेषणीयम्।
जलं पीत्वा नारिकेलवृक्षोऽपि किं छायां न दानीयम्?
अतः कथयामि, पुस्तकेन सहैव मित्रतां करणीयम्।।४।।

नर-नारायणपर्वतश्रृंखला

गर्व अग्रवाल:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

वयं सर्वे जानीमः यत् हिमालयश्रृंखलायाः भागत्रयं सन्ति-महान् हिमालयः, मध्य हिमालयः, शिवालिकश्च।

तत्र शिवालिकपर्वतश्रृंखलायाम् अहं वार्तां कर्तुम् इच्छामि नरनारायणपर्वतयोः उपरि। नरः नारायणः च द्वौ पर्वतौ स्तः, यौ बद्रीनाथमंदिरं उभयतः स्तः। एतत् मंदिरं नीलकण्ठपर्वतस्य पृष्ठभूमौ अस्ति। भारते उत्तराखण्डे अलकनन्दानद्याः तटे बद्रीनाथधामः शोभायमानः अस्ति। बद्रीनाथः बद्रीनारायणः वा भगवतः विष्णोः शालिग्रामनिर्मितः साक्षातप्रतिमूर्ति अस्ति। मान्यता अस्ति यत् भगवतः विष्णोः अंशौ नरः नारायणः च अत्र तपस्या कृतवन्तौ। अद्य अपि विद्यमन्तौ स्तः, अपि च एवं प्रतीयते यत् परमात्मनः तपस्यायां संलग्नौ स्तः। नरपर्वतः समुद्रतलात् ५,८५५ मी॰उपरि अस्ति, अपि च नारायणपर्वतः ५,९६५ मी॰उपरि अस्ति। पुराणेषु (प्रायः स्कन्दपुराणे) वर्णनं अस्ति, च तत्र सर्वत्र ईदृशी मान्यता अस्ति यदा तयोः पर्वतयोः मेलनं भविष्यति तदा बद्रीनाथः ततः लुप्तः भविष्यति।

एका महती मान्यता एषा अपि अस्ति यत् उत्तराखण्डे जोशीमठे विष्णोः अवतारः भगवान् नरसिंहः कालजयीमंदिरम् अस्ति। कलियुगे तस्य अविनाशी हस्तः नष्टः भविष्यति तदा बद्रीनाथः वर्तमानस्थानतः लुप्तः भविष्यति। ततः बद्रीनाथः भविष्यबद्री मध्ये पुनः अवतरितः भविष्यति।

सा पर्वतश्रृंखला ऊर्जासम्पन्ना भव्या दिव्या शान्तीप्रदायनी क्लेषहारिणी सन्तापनिवारिणी कृतज्ञकारिणी भगवत्सकाशदायिनी मोक्षप्रदायिनी च। एतत् अनुभवस्य वार्ता अस्ति। अवश्यम् एव देवभूमौ गन्तव्यम् यावत् स्वानुभवः न भविष्यति तावत् अवबोधनं न भविष्यति।

पर्यावरणस्य उपरि वर्धमानस्य दुष्प्रभावस्य परिणामः

शिवांशी मिश्रः
परस्नातकप्रथमवर्षः संस्कृतविशेषः

प्राकृतिकपर्यावरणम् अस्माकं जीवनस्य अभिन्नः भागः अस्ति। अस्मान् ऊर्जां, अन्नं, आश्रयं च ददाति। परन्तु मानवकर्मणां विकासेन अस्माभिः पर्यावरणस्य महत्तं परिवर्तनं जातम्, येन अनेके नकारात्मकाः प्रभावाः अभवन्। अस्मिन् निबन्धे वयं पर्यावरणस्य उपरि वर्धमानस्य दुष्प्रभावस्य परिणामेषु ध्यानं दास्यामः।

पर्यावरणस्य उपरि वर्धमानस्य दुष्प्रभावस्य महत्त्वपूर्णः परिणामः प्राकृतिकसन्तुलनस्य असन्तुलनं भवति। वनस्पतिजन्तुनाम् अत्यन्तं संकटस्य कारणात् जीवाश्मप्रदूषणं, वायुप्रदूषणं, जलप्रदूषणम् इत्यादीनां समस्यानां वर्धनं भवति। एतत् प्रदूषणं जनानां स्वास्थ्ये नकारात्मकं प्रभावं करोति प्राकृतिकजीवनस्य नाशं च करोति।

फलतः जलवायुपरिवर्तनस्य कारणेन वर्धमानस्य तापमानस्य, अनियमितस्य मौसमस्य च प्रभावेण प्राकृतिकविपदानां प्रकोपः वर्धितः अस्ति। चक्रवातः, जलप्रलयः, वर्षाभावः इत्यादयः घटनाः वर्धमानाः सन्ति, येन मानवसमुदायस्य महती हानिः भवति।

दुष्प्रभावानाम् अतिरिक्तं वन्यजीवानां संकटेन जैवविविधतायाः हानिः अपि भवति। वनानां कर्तनं, वन्यजीवानां निवासस्थानस्य हानिः, विलुप्तता इत्यादयः समस्याः वर्धन्ते, येन सम्पूर्णस्य जगतः जीवनस्य स्रोतः अन्वेषणं भवति।

दुष्प्रभावं परिहरितुं निम्नलिखितपदार्थाः ग्रहीतुं शक्यन्ते। प्राकृतिकसंसाधनानाम् सम्यक् प्रबन्धनं कुर्वन्तु।

वन्यजीवानां संरक्षणाय : जलस्य संरक्षणाय, वायुप्रदूषणस्य न्यूनीकरणाय च प्रासंगिकनीतिः उपायाः च स्वीकुरुत।

प्रदूषणं न्यूनीकरोतु: जलवायुप्रदूषणस्य न्यूनीकरणाय स्वच्छतानियमानाम् अनुसरणं कुर्वन्तु, प्रदूषणनियन्त्रणयन्त्राणां उपयोगं कुर्वन्तु च।

प्राकृतिकसंरचनानां संरक्षणम् : भवतः परितः प्राकृतिकसंरचनानां संरक्षणं कुर्वन्तु, यथा वनस्पतिः, जलपिण्डाः च।

ऊर्जासंरचनायाः अद्यतनीकरणं : स्वच्छ ऊर्जास्रोतानां, यथा सौरऊर्जा, पवनशक्तिः च उपयुज्यताम्, ऊर्जासंरचनायाः अद्यतनीकरणं च कुर्वन्तु येन ऊर्जायाः अपव्ययः न्यूनीकर्तुं शक्यते।

प्राकृतिकजीवनशैल्याः अनुकूलतां कुर्वन्तु : प्राकृतिकजीवनशैल्याः अनुसरणं कुर्वन्तु तथा जलस्य, ऊर्जायाः, भोजनस्य च रक्षणार्थं जैव-अपघटनीय-उत्पादानाम् उपयोगं कुर्वन्तु।

सामुदायिकसहकार्यम् : पर्यावरणसंरक्षणे सामुदायिकसहकार्यं प्रवर्धयन्तु, यथा वृक्षरोपण-अभियानानि, स्वच्छता-अभियानानि, जलसंरक्षणकार्यक्रमाः च।

जागरूकताम् उत्थापयन्तु : पर्यावरणसंरक्षणस्य महत्त्वस्य विषये जनान् शिक्षयन्तु, स्वयमेव सक्रियभूमिकां कर्तुं प्रेरयन्तु च।

एतेषां पदानां अनुसरणं कृत्वा वयं स्वपर्यावरणं सुरक्षितं स्वस्थं च स्थापयितुं शक्नुमः, भावीसन्ततीनां कृते उत्तमं भविष्यं सुनिश्चितं कर्तुं शक्नुमः।

मम हृदयस्य व्यथा

कुमार आदर्श:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

नास्ति भारतेण समं राष्ट्रम्
नास्ति जगति एतादृशी संस्कृतिः।
अजयाः सुराः उद्भवम् इच्छन्ति
अस्यां पुण्यायाम् भूमौ अपि।।

वसन्तर्तुः अस्याः शृंगारं करोति
हिमालयः दुष्टेभ्यः शत्रुभ्यः रक्षयति।
पापनाशिन्याः गंगायाः धारा अत्रैव वहति
प्रकृत्याः प्रत्येकं रूपं एकेन सह दृश्यते।।

बहवः जातयः संप्रदायाः
निवसन्ति सौहार्दरूपेण।
लोकतंत्रः भारते उद्भवति
पुष्पितः पल्लवितः अत्रैव।।

जीवने किं कुर्यान्न कुर्यात्
कथं जीवनं जीयते अस्माभिः।
एतेषाम् प्रश्नानाम् कृते दत्तवान्
क्रमशः रामायणं महाभारतं च गीता।।

न जानन्ति स्व महत्त्वं
अंधभक्ताः भूत्वा त्यजन्ति।
श्रेष्ठं गुणविचारमूल्यानि त्यकत्वा
निम्नकोटिं अंगीकृतं कुर्वन्ति।।

वयं कुर्मः अन्येषाम् अनुसरणं
ते कुर्वन्ति श्रद्धया अस्माकम्।
कदा कुंभकरणस्य निद्रातः उपविश्य
स्वमहत्त्वं जानन्ति इति आदर्शस्य प्रश्नं।।

बिहारोऽहम्

पीयूष:
स्नातकप्रथमवर्ष: संस्कृतविशेष:

चाणक्यस्य नीतिः अहम्, आर्यभट्टस्य अविष्कारोऽहम्,
महावीरस्य तपस्या अहम्, बुद्धस्य अवतारोऽहम्,
भो: बिहारोऽहम्।।

सीताया: जन्मस्थली अहम्, कविविद्यापतेः संसारोऽहम्,
जनकस्य नगरी अहम्, मातृगङ्गायाः शृङ्गारोऽहम्,
भो: बिहारोऽहम्।।

चंद्रगुप्तस्य शूरता अहम्, अशोकस्य कृपाणोऽहम्,
बिंदुसारस्य शासनोऽहम्, मगधस्य आकारोऽहम्,
भोः बिहारोऽहम्।।

दिनकरस्य कविता अहम्, रेणो: सारोऽहम्,
नालंदानगर्या: ज्ञानम् अहम्, पर्वतः मंदारोऽहम्,
भोः बिहारोऽहम्।।

वाल्मीके: रामायणम् अहम, मिथिलाप्रदेशस्य संस्कारोऽहम्,
पाणिने: व्याकरणं अहम्, ज्ञानस्य भंडारोऽहम्,
भो बिहारोऽहम्।।

राजेन्द्रस्य स्वप्नः अहम्, महात्मन: हुँकारोऽहम्
गोविंदसिंहस्य तेजोऽहम्, कुंवरसिंहस्य गर्जना अहम्
भोः बिहारोऽहम्।।

प्रकृतिश्च पुस्तकालयम्

सुनीलकुमार:
स्नातकप्रथमवर्ष: संस्कृतविशेष:

यद्यस्ति मम गेहे द्वे प्रकृतिः पुस्तकालयम्।
भूलोकस्य निधिः सर्वा विद्यते मम आलये।।१।।

भूमिः माता पिता व्योमः वायुः भ्राता सखा अग्निः।
विद्या पत्नी जलं पुत्रः षडेते मम बान्धवाः।।२।।

न जाने कष्टपीड़ा मे उपविश्य क्षणद्वयम् हि।
अक्षरपुष्पछायायां सर्वं दुःखं कुतः गतम्।।३।।

विवक्षुगणः

गर्व अग्रवालः
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

नमस्कृत्य तु वाग्देवीं ध्येयमन्त्रेणह्यारभे।
विवक्षुगणनाम्नाऽहं वन्दे संस्कृतमातरम्।।

विवक्षु इति शब्द श्रुत्वा मनसि आगच्छति कोऽर्थः विवक्षु? वयं एतानि पदानि जानीमः एव। जिज्ञासा अर्थात् ज्ञातुमिच्छा, यः ज्ञातुमिच्छति सः जिज्ञासुः। पिपासा अर्थात् पातुमिच्छा, यः पातुमिच्छति सः पिपासुः। तथैव विवक्षा अर्थात् वक्तुमिच्छा, यः वक्तुमिच्छति सः विवक्षुः। अधुना प्रश्नः आगच्छति के किं वक्तुमिच्छन्ति? उत्तरमस्ति वयं संस्कृतं वक्तुमिच्छामः। संस्कृतमपि एका भाषा अस्ति। भाषा इति पदस्य कोऽर्थः? यस्यां वक्तुं शक्नुमः, विचाराणाम् आदानं प्रदानं च कर्तुं शक्नुमः सा भाषा उच्यते। भाष्यते इति भाषा।

भाषायाः कति प्रयोजनानि भवन्ति? सर्वे वदिष्यन्ति एकमेव। तदस्ति संप्रेषणमिति। किन्तु आवां चिन्तयावः यत् भाषा एकसेतुरिव कार्यं करोति। भूतकालतः भविष्यकालपर्यन्तमेव भाषा एवास्ति या विभिन्नसंस्कृतिषु मध्ये सेतुरिव कार्यं करोति। पुरातनसमये जनानां कीदृशं चिन्तनमासीत्, कीदृशी भाषा आसीत्, कीदृशकार्येषु ते संलग्नाः आसन्, तेषां दर्शनविज्ञानव्यवहाराणि कीदृशानि आसन्, सर्वेषां ज्ञानं भाषा एव कारयति। अधुना भारतस्य परिप्रेक्ष्ये एषा भाषा संस्कृतमस्ति। भारतस्य ज्ञानं संस्कृतं विना भवितुं कदापि न अर्हति।

एतत् सम्पूर्णं विचिन्त्य व्यथितौ आस्व तर्हि आवां मेलितवन्तौ संस्कृतभारतीप्रान्ताध्यक्षेण डॉ. सुशीलमहोदयेन सह।

अस्माकं चिन्ताव्यथासंस्कृतप्रेम दृष्ट्वा तेन निर्देशितं यत् महाविद्यालये विवक्षुगणं चालयतु यस्मिन् गणे सर्वे छात्राः समागत्य संस्कृतभाषायामेव शृण्वन्ति वदन्ति, पठन्ति, लिखन्ति, क्रीडन्ति च। महोदयस्य आज्ञा पालयित्वा १० मई २०२३ इति दिनांके श्रीविजितार्यस्य कक्षे स्वकक्षामित्रैः सह इमं साधुविचारं साझां कृतवन्तौ। सर्वे हर्षमोदेन स्वागतं कृतवन्तः च १३ मई २०२३ इति दिनांके शनिवासरे वयं प्रथमविवक्षुगणं सम्पन्नं कृतवन्तः।

नित्य प्रति संस्कृतप्रेमकारणात् वयं प्रतिशनिवासरे सम्मेलनं कुर्मः। अधुना अस्माकं इंस्ट्राग्राम इत्यस्योपरि पञ्चाशदाधिकलक्षजनाः अनुसरणकर्तारः सन्ति इत्युक्ते जनाः संस्कृतं श्रोतुमिच्छन्ति।

विवक्षुगणस्य प्रयोजनद्वयं मुख्यं वर्तते।

१. संस्कृते वदनार्थं एकवातावरणस्य निर्माणम्।

भाषा वातावरणात् व्यवहरात् श्रवणाद् आगच्छति। अतः एकमञ्चस्य आवश्यकता अनुभूयते यत्र सर्वे जनाः आगत्य संस्कृते वदनार्थं प्रयासं करिष्यन्ति। एतस्य कृते एव प्रतिदिनं सांयकाले वयं संलापशालां चालयामः यत्र विभिन्नानि विषयाणि स्वीकृत्य तेषु संस्कृतभाषायां वार्तां कुर्मः।

२. संस्कृतविवक्षूनाम् एकत्रिकरणम्।

एवं नास्ति यत् संस्कृतविवक्षवः वक्तारः न सन्ति किन्तु ते एकस्मिन् मञ्चे न सन्ति अतः तेषां कृते अपि एषः मञ्चः प्रतिबद्धः अस्ति।

अधुना अस्माकम् इच्छा वर्तते यत् संस्कृतभाषायामपि वाद-विवादप्रतियोगितानामायोजनं भवेत्। यथा दिल्लीविश्वविद्यालयस्य विभिन्नेषु महाविद्यालयेषु हिंद्यांगलयोः भवति तथैव संस्कृतभाषायामपि।

तस्मिन् क्षेत्रे दैनिकाभ्यासात् वयं गच्छामः। वयं निकटवर्तीभविष्ये गत्वा अस्माकं एकापत्रिकायाः अपि संपादयितुमिच्छामः यस्याम् अर्वाचीनसंस्कृतसाहित्यानां संकलनं करिष्यामः।

संस्कृतम् अस्माकं प्राणः अस्ति, आत्मा अस्ति! किमर्थं पठति संस्कृतम्?

अस्य प्रकारस्य प्रश्नं श्रुत्वा केवलमिदमेव वक्तव्यम् यत् स्वज्ञानार्थं पठामि संस्कृतम्। यदि भवतः पार्श्वे कस्मिंश्चिदपि क्षेत्रे योग्यतास्ति तर्हि भवतः आदरं भवति एव।

संस्कृतभाषा पुनः जनभाषा भवेत्, संपर्कभाषा भाषा इति अस्माकं कामना।

पठामि संस्कृतं नित्यम् वदामि संस्कृतं सदा।
ध्यायामि संस्कृतं सम्यक् वन्दे संस्कृतमातरम्।।
जयतु संस्कृतम् जयतु भारतम्।।
पठतु संस्कृतं वदतु संस्कृतम्।।

भारतवर्षे भाषाध्यायम्

अंकित: सिंह:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

भारतवर्षस्य भिन्ननामानि इतोऽपि एकमद्य दास्यामि।
दृष्ट्वा अस्य भाषावैविध्यं भाषापुरं तं कथयिष्यामि।।

पदे पदे जनपदे भारतवर्षस्य प्रत्येकेऽस्मिन् खण्डे खण्डे।
देशस्य आत्मगौरवं वर्धन्ते भिन्न-भिन्नभाषाः दृश्यन्ते।।

भारतीयाः स्वभाषया एव अलंकृताः लोके भवन्ति।
त्यक्त्वा वेशभूषाव्यावहरान् तथापि भाषा न त्यजयन्ति।।

भूत्वापि देशे सहस्रभाषाः तथापि कुत्रापि न भिन्नता।
देशस्य वैविध्यगानं विदेशेषु अप्यस्याः कीर्ति श्रुता।

माताभारत्याः सर्वाः भाषाः एव सन्त्यस्याः कण्ठाभूषणम्।
नास्ति केवलं काचिदपि एकाभाषा अस्य देशस्य भूषणम्।।

भाषा तु देशे लोके च संवादस्य करोति सृजनम्।
किन्तु अद्य दृश्यतेऽत्र भाषाकारणात् एव विभेदम्।।

मम भाषा श्रेष्ठाप्राचीनास्ति तवास्ति निम्नापरिपूर्णा।
कथमिव इदृशी भावना जनलोके मानसे च आगता।।

निरन्तरता इति।

अस्माकं महान् देश:

प्रिंसकुमार:
स्नातकतृतीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

अस्माकं देशः भारतम् अस्ति। एष: एक: महान् देशः अस्ति। अत्र ईश्वरः अपि निवासं कर्तुम् इच्छति।भारतं सुवर्णपक्षि इति उच्यते। अत्र सर्वे धर्माः आदरणीयाः सन्ति। भारते अनेकधर्मानुयायिनः जनाः निवसन्ति। यथा - हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई इत्यादयः। भारतं कृषिप्रधानः देशः अस्ति। अत्र बहुविधाः सस्याः वर्धन्ते। भारतं सांस्कृतिकप्रधानः देशः अस्ति। भारते अनेके उत्सवाः मन्यन्ते। यथा, हिन्दुधर्मस्य, होली, दीपावली, रक्षाबन्धन दशहरा (असत्यस्य उपरि सत्यस्य विजयः) इत्यादीनां मुख्यपर्वणां महता धूमधामेन आचर्यन्ते। भारते अतिथिभ्यः ईश्वरस्य स्थितिः दीयते। अतः कथ्यते - अतिथि देवो भव। भारतस्य विभिन्नेषु प्रदेशेषु भिन्नाः भाषाः भाष्यन्ते, यथा - हिंदी, भोजपुरी, मैथिली, संस्कृत, तेलगु इत्यादयः।भारते गोः माता इति मन्यते।अत्र मृत्तिका अपि पूज्यते। भारते अनेके पर्वताः, नद्यः, जलप्रपाताः च सन्ति।। तेषु पर्वतराजः हिमालयः भारते एव अस्ति। अत्यन्तं पवित्रा नदी गंगा हिमालयात् निःसरति। भारतस्य प्रमुखाः नद्यः गङ्गा, यमुना, सरस्वती, कृष्णा, कावेरी, गोदावरी इत्यादयः सन्ति। अस्मिन् देशे अनेकानि पर्यटनस्थलानि सन्ति। यथा- काश्मीरः यः भारते अस्ति।यत् पृथिव्यां स्वर्गः इति उच्यते।अत्र अनेकानि तीर्थस्थानानि अपि सन्ति, यस्मिन् राममंदिर, काशी विश्वनाथ मंदिर, मथुरा, वृंदावन इत्यादाय: प्रमुखा: सन्ति। अस्मिन् देशे कालिदास इत्यादयः अनेके प्रसिद्धाः कवयः आसन्।कालिदासविषये उक्तम् -कविषु कालिदासः श्रेष्ठः। अस्माकं अस्मिन् महान् देशे बहवः महापुरुषाः आसन्। यः भारतस्य स्वातन्त्र्यार्थं स्वप्राणान् त्यक्तवान्। अत एव अस्माकं देशः महान् आसीत्, भविष्यति च।

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'

बासुकीनाथ झा
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

वेद्यन्ते ज्ञायन्ते वा धर्मादि पुरुषार्थाः एभिरिति वेदाः। एवमेव अन्यापि शब्दे इष्टप्राप्ति अनिष्ट परिहार्यो अलौकिकम् उपायम् यो ग्रंथो वेद्यति सः वेदः। अस्माकम् देशः धर्मप्रधानो अस्ति। धर्मस्य मूलं तु अत्र एव दृष्टिगोचरं भवति। विश्वस्य स्वस्थ ज्ञानराशीः वेदेषु निहिता वर्तते। महर्षिणा दयानन्देन स्वकीयायां ऋग्वेदभाष्यभूमिकायाम् - वदन्ति, जानन्ति, विद्यन्ते, भवन्ति, सर्वा विद्या येर्येषु वा स वेदः इति प्रकारान्तरेण प्रमाणितम्। वेदा हि नानाविधज्ञानाधिष्ठानानि सन्ति। वेदा विश्वसाहित्यस्य आदिमाः ग्रन्थाः। ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदश्चेति चत्वारो वेदाः। चतुर्षु वेदेषु ऋग्वेदः प्राचीनतमः। ऋग्वेदे 'ज्ञानकाण्ड प्रतिपादितं, यजुर्वेदे कर्मकाण्डं, सामवेदे उपासनाकाण्डं, तथा अथर्ववेदे विज्ञानकाण्ड प्रतिपादितम्।

'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्' इति मनुस्मृतिप्रणेतुर्मनोर्वचनम्। धर्मस्य सत्यज्ञानस्य वा शाखानां मूलानि वेदेषु विद्यमानानि विद्यन्ते। वेदा अपौरुषेयाः सन्ति। यथा संस्कृतभाषायां विविधानि काव्यानि रूपकाणि वा महाकविभिर्ग्रंथितानि तथा वेदानां रचना न एव जाता। वेदास्तु तपोलग्नैः ऋषिभिः समाधिषु साक्षात्कृताः। अतः 'ऋषयो मन्त्रद्रष्टारः' इति मन्त्राणां साक्षात्कर्तारः ऋषय इति परिभाषितम्। वेदाः प्रलयेऽपि विलयं न गच्छन्ति। वेदा अनादिनिधनाः विष्णुबुद्धिगामिनः सर्गे सर्गे स्वयम्भुवा उपदिष्टा भवन्ति। यथोक्तम् -

अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयम्भुवा।
नित्या वेदाः समस्ताश्च शाश्वता विष्णुबुद्धिगाः॥
सर्गे सर्गेऽमुनैवैत उद्गीयन्ते तथैव च।

मानवानां कल्याणाय "सत्यं वद। धर्म चर। स्वाध्यायान्माप्रमदः। अहिंसा परमो धर्मः।" इत्यादयः उपदेशा अपि वेदेषु विलसन्ति। अक्षसूक्ते द्यूतक्रीडा व्यसननिमग्नानां कृते हितोपदेशो द्रष्टव्यः - "अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व" अर्थात् जूतेन धनप्राप्तिकामनां विहाय समृद्धये कृषिः करणीया। द्युतशीलिनो द्य ताद् वारणाय द्यूतप्रभवां दुर्दशां निरूपयति –

जाया तप्यते कितवस्य होना माता पुत्रस्य चरतः क्व स्वित्।
ऋणा वा बिभ्यद्धनमिच्छमानोऽन्येषामस्तमुपनक्तमेति॥

समाजे सामञ्जस्य निरूपणाय ऋचेयं दर्शनीया-

संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते॥

अस्माकं वेदेषु आचार्यस्य भावना अपि गूढ़ताया रक्ष्यते। तैत्तिरीयोपनिषदे उक्तं यथा- मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। आचार्य-शिष्ययोः सम्बन्धस्य दृढतायै ऋगियं कियती महत्त्वपूर्णा-

सह नाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्वि नावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥

वेदेषु कर्तव्यनिर्देशनपराः काश्चित् सूक्तयोऽवलोकनीयाः -

नानाश्रान्ताय श्रीरस्ति। न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः।
न स सखा यो न ददाति सख्ये। माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।
कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः। ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।
न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः। कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

अर्थात् न केवल धर्मः अपितु दार्शनिक सिद्धान्तः, राजनीतिः, समाजशास्त्रम्, मनोविज्ञानं, आयुर्वेदः, ज्योतिषः, अर्थशास्त्रम, इत्यादयः सर्वे विषयः अस्माकं वेदेषु निहितः अस्ति। वेदेषु सर्वमेव अस्ति। यतोही सर्वे वेदाः संस्कृत भाषायां निबद्धाः, अस्मात् कारणात् वेदानां रक्षणाय संस्कृत भाषा अपि प्रधानता दातव्यः। अतः अस्माकं सर्वे धर्मग्रंथाः सर्वाषाम् समस्यानां च सर्वविध उपायाः वेदेषु एव सुष्ठुतया उपलब्ध्यते। अतएव तु मनुना उक्तम् - 'वेदोऽखिलो धर्ममूलम्'।

क्रियापदानानां ज्ञानम्

रामचंद्रपाण्डेय:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

बालकः अस्ति पित्रा सह वसति
पठति क्रीडति नृत्यं करोति।
मधुरं वदति मधुरं हसति
गीतं गायति संस्कृतं वदति।।

मातरं स्मरति प्रश्नं पृच्छति
गृहे कोऽपि नास्ति केन सह क्रीडति।
माता कुत्र अस्ति कदा आगच्छति
बहुवारं पृच्छति एकान्ते रोदति।।

चाकलेहं आनयति बालकाय ददाति
चाकलेहं दृष्ट्वा सः तूष्णीम् भवति।
लेखम् लिखति कवितां रचयति
पद्यकाव्यं लिखति पुरस्कारं प्राप्नोति।।

आम्ररसं पिबति मोदकं खादति
विद्यालयं गच्छति गृहम् आगच्छति।
गृहकार्यं करोति रामायणं पश्यति
रात्रौ शयति प्रातः काले उतिष्ठति।।

दीर्घं स्वप्नं अस्ति परिश्रमं करोति
सहायतां करोति आशीर्वादं स्वीकरोति।
अग्रे गत्वा प्रधानमन्त्रि: भवितुम् इच्छति
भारतं पुनः विश्वगुरुं रुपे द्रष्टुम् इच्छति।।

वस्त्रं किमर्थम्?

ॐकारनाथ झा:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

आत्मा वसति देहैव शाश्वतः एव सः खलु।
आच्छादनं शरीरं ते नश्वरे नश्वरः पटः।।

किमस्ति मम कायैव कर्मज्ञानेन्द्रियेन हि।
यत् नास्ति तव गात्रेऽपि पंचतत्वेन निर्मितः।।

निर्वस्त्रं जन्मवेलायां दत्तं सर्वं सुरेणात्र।
तथैव मृत्युकालेऽपि प्राप्तं न किमर्थाम्बरं।।

यद्यभावोऽस्ति वस्त्रस्य देवेन नीयते कदा।
सुरपुरे किमर्थं न मृत्युकाले दहन्पटः।।

क्षयवानस्य शृंगारं वर्धते मे शरीरस्य।
विविधाभूषणैः शोभा किमर्थं क्रियते त्वया।।

आत्मनि विद्यते माया ईशप्राप्तिः न भूयते।
धारयित्वा पुनर्माया बह्मप्राप्तिः न ऐच्छते??

तस्याः स्वरः तस्याः बलम्

रिद्धिमा जैनः
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

महिलासशक्तिकरणं स्त्रियाः शक्तिशालिनः करणं निर्दिशति। तेषां स्वयमेव निर्णयं कर्तुं समर्थं करोति। वर्षेषु स्त्रियः पुरुषाणां हस्तेन बहु दुःखं प्राप्नुवन्ति। पूर्वशतकेषु तेषां प्रायः अस्तित्वहीनत्वेन व्यवहारः कृतः। यथा सर्वे अधिकाराः पुरुषाणां एव सन्ति। यथा यथा कालः विकसितः भवति स्म तथा तथा स्त्रियः स्वशक्तिं अवगच्छन्ति स्म। ततः महिलासशक्तिकरणार्थं क्रान्तिः आरब्धा।यतः स्त्रियः तेषां कृते निर्णयं कर्तुं न अर्हन्ति स्म, तथैव महिलासशक्तिकरणं नूतनवायुः इव आगतं। तया तेषां अधिकारस्य विषये अवगताः अभवन्, कथं तेषां समाजे पुरुषाश्रयस्य अपेक्षया स्वस्थानं कर्तव्यम् इति च।

स्त्रियाः सशक्तिकरणं कथं कर्तुं शक्यते इति विविधाः उपायाः सन्ति। तत् सम्भवं कर्तुं व्यक्तिभिः, सर्वकारेण च एकत्र आगन्तुं आवश्यकम्। बालिकानां शिक्षा अनिवार्यं करणीयम् येन महिलाः स्वस्य जीवनं निर्मातुं निरक्षराः भवितुम् अर्हन्ति।

लिङ्गं न कृत्वा प्रत्येकस्मिन् क्षेत्रे स्त्रियः समानाः अवसराः दातव्याः। अपि च तेभ्यः अपि समानं वेतनं दातव्यम्। बालविवाहस्य उन्मूलनं कृत्वा वयं महिलानां सशक्तिकरणं कर्तुं शक्नुमः। विविधाः कार्यक्रमाः अवश्यं करणीयाः यत्र तेभ्यः आर्थिकसंकटस्य सम्मुखे स्वस्य रक्षणार्थं कौशलं शिक्षितुं शक्यते।

सर्वाधिक महत्त्वपूर्णं तु तलाकस्य दुरुपयोगस्य च लज्जा खिडक्याः बहिः क्षिप्तव्या। समाजस्य भयात् बहवः महिलाः दुर्व्यवहारसम्बन्धेषु तिष्ठन्ति। पितरौ स्वकन्याभ्यः अवश्यमेव शिक्षयन्तु यत् चितायां न अपितु तलाकं प्राप्य गृहम् आगन्तुं कुशलम्।

सशक्तिकरणं असशक्तिकरणं च सापेक्षिकं भवति; अतः सशक्तिकरणं प्रक्रिया एव, न तु उत्पादः। आर्थिकरूपेण, राजनैतिकरूपेण, सामाजिकरूपेण च महिलानां उत्थानार्थं अपारः प्रगतिः अभवत्, परन्तु अद्यापि एषा मुक्त-अन्त-प्रक्रिया अस्ति। अनेकानाम् प्रचलनस्य आलोके स्पष्टा दृष्टिः उद्भवति, प्रत्येकस्य योग्यस्य सशक्तिकरणस्य दृष्टिः। नवयुगस्य महिला दूरतरं सशक्तं भवति चेदपि तस्याः प्रगतिः स्थगितवती यदा हिंसायाः प्रकरणाः अथवा अपूर्वं प्रतिगामी दुष्टं उद्भवति। अतः यदा कश्चन मूल्याङ्कनं करोति यत् महिलासशक्तिकरणं मिथकं वा वास्तविकता वा, तदा तत् तावत् सुलभं न भवति यतः महिलासशक्तिकरणं कदाचित् केभ्यः यथार्थरूपेण कृतः भ्रम इव दृश्यते परन्तु बहवः अचिन्त्यः प्रदेश एव तिष्ठति। वयं समाजरूपेण लैङ्गिकविमर्शस्य समतायां आनेतुं अद्यावधि कृतस्य प्रत्येकस्य प्रयासस्य प्रशंसाम् कर्तुं प्रवृत्ताः स्मः तथा च एतत् युद्धं किमर्थं अतिमूल्याङ्कनं न भवति, न्याय्यतां प्राप्तुं सर्वथा महत्त्वपूर्णं च इति अवगन्तुं आवश्यकम्। अद्यत्वे एकस्याः महिलायाः सशक्तिकरणेन श्वः कृते प्रगतिशीलः समाजः भविष्यति तथा च एतत् रजत-अस्तरणं अस्माकं कस्यापि लैङ्गिक-समानता-चर्चा-विमर्शस्य विश्लेषणे प्रेरणा भवितुम् अर्हति।

महिलासशक्तिकरणम्

सृष्टिः
स्नातकतृतीयवर्षः संस्कृतविशेषः

महिलासशक्तिकरणस्य अर्थः अस्ति यत् महिलानां अधिकारानां रक्षणं कृत्वा तेषां सशक्तिकरणं, कस्यापि प्रकारस्य आपराधिक-अपराधानां विरुद्धं सुरक्षा-प्रदानं च। स्त्रीविवेकं नास्ति इति अपि भावः।

महिलानां सशक्तिकरणस्य कृते शिक्षा एव महत्त्वपूर्णं कारकम् अस्ति। यदि कदापि सत्यार्थे स्त्रियाः सशक्तिकरणं साक्षात्कृतं भवेत् तर्हि शिक्षाद्वारा एव भवितुम् अर्हति। शिक्षिता महिला कुटुम्बे एकः शिक्षक इव भवति यः प्रत्येकं बालकं बालकः बालिका वा इति न कृत्वा विद्यालयं गच्छति इति सुनिश्चितं करोति।

शिक्षिता महिला स्वस्य कृते कार्यं प्राप्तुं, स्वपरिवारस्य दैनन्दिन आवश्यकतां च पूरयितुं समर्था भवति। सा आर्थिकरूपेण स्वतन्त्रा भूत्वा स्वनिर्णयान् करोति। शिक्षा न केवलं स्त्रियाः तस्याः परिवारस्य च अपितु राष्ट्रस्य अपि समृद्धिं जनयति।

शिक्षां विना महिलासशक्तिकरणं दूरस्थः स्वप्नः अस्ति तथा च स्थायिविकासलक्ष्याणां प्राप्तेः कोऽपि उपायः नास्ति। यदि वयं इच्छामः यत् महिलाः सशक्ताः भवेयुः तर्हि अस्माभिः तान् शिक्षितुं बालिकायाः शिक्षां च अनिवार्यं कर्तव्यम्।

आध्यात्मिकताद्वारा मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनम्

आदित्यकुमारमिश्रः
परस्नातकप्रथमवर्षः संस्कृतविशेषः

मानवजीवनस्य आध्यात्मिकः आधारः समाजे महत्त्वपूर्णां भूमिकां निर्वहति। आध्यात्मिकता इत्यस्य अर्थः अस्ति यत् आत्माना सह सम्बद्धः भवति, यः अस्मान् स्वस्य, अन्येषां, पर्यावरणस्य च सम्बद्धं करोति। मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनं आध्यात्मिकतायाः माध्यमेन सम्भवति। अस्मिन् निबन्धे वयं ज्ञास्यामः यत् मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापने आध्यात्मिकता कथं महत्त्वपूर्णा भूमिका निर्वहति।

मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनस्य अर्थ अस्ति यत् अस्माकं समाजस्य संस्कृतेः च कृते महत्त्वपूर्णानि मूल्यानि पुनः स्थापयितुं आवश्यकम्। एते मूल्यानि अस्माकं आध्यात्मिकविकासस्य मार्गदर्शनं कुर्वन्ति तथा च समाजे सद्भावना, सहानुभूतिम्, न्यायं, सामञ्जस्यं च प्रवर्धयन्ति। आध्यात्मिकता अस्मान् शिक्षयति यत् प्रत्येकस्मिन् व्यक्तिषु ईश्वरीयता अस्ति तथा च अस्माभिः तत् अवगन्तुं, सम्मानं च कर्तव्यम्।

मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनार्थं
आध्यात्मिकतायाः महत्त्वम्

आध्यात्मिकता अस्मान् अस्माकं आत्मायाः विशिष्टतां साक्षात्करोति, अन्यैः सह सहकार्यं, सामञ्जस्यं च प्रति प्रेरयति च। एतेन वयं समाजे सामाजिकाध्यात्मिकसंरचनाम् अवगत्य तदनुसारं स्वकर्माणि व्यवस्थितं कुर्मः।

आध्यात्मिकतायाः माध्यमेन वयं स्वदायित्वं साझां कुर्मः, समाजे न्यायाय समर्पिताः च स्मः।

अध्यात्मस्य महत्त्वपूर्णा भूमिकाः

आध्यात्मिकता न केवलं अस्मान् स्वयमेव संवादं कर्तुं नयति, अपितु अस्मान् अवगमनं, सहानुभूतिम्, परप्रेमं च प्रति प्रेरयति। अस्माकं सहमानवानां प्रति उत्तरदायित्वस्य, सहानुभूतेः च भावः विकसितः भवति। आध्यात्मिकता अस्मासु न्यायस्य प्रति संवेदनशीलतायाः, समर्पणस्य च भावः स्थापयति, यस्य माध्यमेन वयं समाजे सहानुभूति-उत्कृष्टतायाः वातावरणं निर्मातुं शक्नुमेः। आध्यात्मिकतायाः माध्यमेन वयं स्वस्य आन्तरिकशक्तयः परिचितुं। वर्धयामः च, येन अस्माकं स्वास्थ्यं व्यक्तित्वं च सन्तुलितं दृढं च भवति।

मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनं आध्यात्मिकतायाः माध्यमेन सम्भवति, येन समाजे शान्तौ, समृद्धेः, सौहार्दस्य च वातावरणं निर्मीयते। अतः अस्माकं कृते अध्यात्मस्य महत्त्वं अवगत्य तस्य जीवने समावेशः अत्यन्तं महत्त्वपूर्णः अस्ति। अध्यात्मस्य महत्त्वं न केवलं अस्माकं व्यक्तित्वस्य विकासे एव भवति, अपितु समाजे सद्भावाय, बलाय च संघर्षं कर्तुं प्रेरयति। अतः आध्यात्मिकतायाः माध्यमेन मानवीयमूल्यानां पुनर्स्थापनम् अस्माकं समाजस्य कृते अत्यन्तं महत्त्वपूर्णम् अस्ति।

गीतम् - त्वमेव मम पूर्णभूमिः

प्रेमजीतः
स्नातकद्वितीयवर्षः, संस्कृतविशेषः

त्वमेव मम पूर्णभूमिः, यत्रापि चलानि अहम्, त्वयि एवागत्य स्थगनम्....
त्वां विना गच्छानि क्व, कश्चिदपि मार्गोऽयम्, त्वयि एवागत्य स्थगनम्....

त्वमागच्छ तु क्षणं स्थगितं, त्वमागच्छ तु सर्वदुःखं गतं, त्वमागच्छ हसाम्यहम्...
त्वमागच्छ, तु चमत्कारोऽभवत्, त्वमागच्छ तु जिजीविषात्र,
त्वमागच्छ तु प्राप्यते देवता मया!!!

हास्यकणिका

विशाल:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

१. न इदानीम्...

"सुखमयं जीवनं नाम कीदृशम् इति विवाहानन्तरं ज्ञातं मया" इति उक्तवान् एकः।

"तन्नाम विवाहानन्तरम् इदानीं भवान् सुखेन जीवन् अस्ति इति खलु भवतः आशयः ?" इति पृष्टवान् अपरः।

तदा प्रथमः उक्तवान् तथा न। विवाहानन्तरं मया ज्ञातं यत् विवाहात् पूर्वतनं जीवनम् एव सुखमयम् आसीत् इति" इति।

२.न करोमि तथा

कार्यालयतः गृहम् आगतः रामरायः पत्नीम् उक्तवान् - "भोः, शेखरः भवत्याः सखीं रुक्मिणीं परिणेष्यति इति श्रूयते।"

"शेखरः नाम सः एव खलु, यश्च पूर्वं मम सहाध्यायी आसीत्?"

"आम्।"

"तर्हि तं बदतु - रुक्मिणी न परिणेतव्या इति। यतः सा कलहशीला, कोलाहलप्रिया, संशयप्रवृत्तियुक्ता, कठोरचित्ता च अस्ति। यदि तेन सा परिणीयेत तर्हि अग्रे पश्चात्तापः अनुभोक्तव्यः भवेत्। अतः पूर्वम् एव सूचने वरम्।"

"अहं तं सर्वथा न सूचयिष्यामि दृढस्वरेण उक्तवान् रामरायः।

"किमर्थम् ?" - कुतूहलेन पृष्टवती पत्नी।

तदा मन्दस्वरेण उक्तवान् रामरायः "यतः सः मम विवाहात् पूर्वम् एतादृशं साहाय्यं न कृतवान् आसीत्।"

चाणक्यनिते: 10 प्रमुखश्लोका:

पलकपाण्डेय:
स्नातकप्रथमवर्ष: संस्कृतविशेष:

न देवो विद्यते काष्ठे न पाषाणे न मृण्मये।
भावे ही विद्यते देवस्तस्माद् भावो ही कारणम्।।१।।

पुनर्वित्तं पुनर्मित्रं पुनर्भाया पुनर्मही।
एतत्सर्वं पुनर्लभ्यं न शरीरं पुनः पुनः।।२।।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि अन्नमापः सुभाषितम्।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते।।३।।

सत्यं माता पिता ज्ञानं धर्मो भ्राता दया सखा।
शान्तिः पत्नी क्षमा पुत्रः षडेते मम बान्धवाः।।४।।

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति।।५।।

दृष्टिपूतं न्यसेत् पादं वस्त्रपूतं जलं पिबेत्।
शास्त्रपूतं वदेद् वाक्यं मनःपूतं समाचरेत्।।६।।

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च।।७।।

एकोऽपि गुणवान् पुत्रो निर्गुणैश्च शतैर्वरः।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च ताराः सहस्रशः।। ८।।

अति रूपेण वै सीता चातिगर्वेण रावणः।
अतिदानाद् बलिर्बद्धो ह्यति सर्वत्र वर्जयेत्।।९।।

लेखनी पुस्तिका दाराः परहस्ते गता गताः।
आगता दैवयोगेन नष्टा भ्रष्टा च मर्दिता।। १०।।

काकः

सृष्टि
स्नातकतृतीयवर्षः संस्कृतविशेषः

तस्मिन् अन्धकारे गभीरं निरीक्षमाणः,
चिरं तत्र स्थितवान् अहं विस्मयमानः, भयभीतः,
संशय, स्वप्न स्वप्न न मर्त्य।

कदापि पूर्वं स्वप्नं द्रष्टुं साहसं कृतवान्;
परन्तु मौनं अखण्डम् आसीत्,
निश्चलता च न चिह्नं दत्तवती,
एकमेव च वचनं तत्र उक्तम्,
किं कुहूकुहू शब्दः आसीत्, "लेनोर!"
एतत् अहं कुहूकुहू कृतवान्, प्रतिध्वनिः च,
"लेनोर्" इति शब्दं प्रतिगुर्गुरितवान्!
केवलम् एतत्, न च किमपि अधिकं।

प्रथमे प्रथमे कृतम्

(पहिले पहिले हम कईनी)

वैष्णवी
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

(छठगीतस्य संस्कृतानुवादम्)

प्रथमे प्रथमे कृतम्
षष्ठीमातः व्रतं तव।
करोतु क्षमां षष्ठीमातः
सर्वापराधं मम।।

अंकस्य बालकाय देहि
षष्ठिमातः ममताशीषं।
भर्तुः स्नेहः मयि भवतु
देहि सुखवैभवमपारं।।

नारिकेलकदलीफलानि च
सज्जितानि नदीतीरे।
शृणोतु प्रार्थनां हे मातः
वर्धतां विश्वपरिवारम्मे।।

सुष्ठुसज्जा सरसतीरे
मातः तव वदनं श्रेष्ठं।
स्वीकरोतु पूजामस्माकम्
देहि मे सहस्राशीषम्।।

कोऽस्ति स्थितप्रज्ञः?

ॐकारनाथ झा
स्नातकद्वितीयवर्षः संस्कृतविशेषः

श्रीमद्भगवद्गीतायां स्थितप्रज्ञां ज्ञातुं पूर्वं श्रीमद्भगवद्गीतायाः परिचयं ज्ञातव्यं इति आवश्यकम् अस्ति।

स्थितप्रज्ञस्य विषये कथयितुं पूर्वं भगवान् श्रीकृष्णः पुनः अर्जुनं वदति यत् हे अर्जुन! भवता बहुविधाः विषयाः श्रुताः, भवता धार्मिकग्रन्थाः अपि पठिताः अवश्यं यस्मात् कारणात् भवतः ध्यानं विचलितं जातम्। यतः जनाः भिन्नप्रकारस्य मतं व्यञ्जयन्ति यस्मात् कारणात् भवन्तः कः सत्यः, कः मया विश्वासः कर्तव्यः इति निर्णयं कर्तुं न शक्नुवन्ति? परन्तु यस्मिन् क्षणे भवतः बुद्धिः ईश्वरे स्थिरा भवति, तस्मिन् एव क्षणे भवन्तः ज्ञास्यन्ति यत् एतां सृष्टिं कः चालयति, तस्मिन् भवतः का भूमिका अस्ति, एषा योगस्य अवस्था। अतः पूर्वं भवन्तः स्वमूल्यानुसारं निर्णयं कुर्वन्ति स्म येषु भवन्तः सत्यस्य ज्ञानं प्राप्तुं न शक्नुवन्ति स्म। अतः ईश्वरे स्थितः भवितुं प्रयतध्वम्। अस्मिन् क्रमे अर्जुनः श्रीकृष्णं वदति -

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥

अर्थात् यदा मनुष्यः मनसि स्थितान् सर्वान् कामान् सर्वथा परित्यज्य आत्माने आत्मानं तृप्तः तिष्ठति, तस्मिन् काले सः स्थितप्रज्ञः इति उच्यते। ईश्वरस्य उत्तरम् अस्ति यत् कामनाः केवलं उत्पादकः एव, सः विविधप्रकारस्य लौकिकसुखानां इच्छां कुर्वन् एव तिष्ठति तथा च एताः कामाः यदा न पूर्यन्ते तदा सः दुःखी भवति। एते कामाः विविधाः सन्ति येषां पूर्तये सः कदापि न शक्नोति। अस्य कारणात् तस्य बुद्धिः भ्रान्ता भवति यस्मात् सः सत्यस्य निर्णयं कर्तुं न शक्नोति, सः इच्छाशक्तिः नास्ति। आत्मनि स्थितः सन् स्वस्वरूपं मत्वा नित्यसक्तेन तया सन्तुष्टः तिष्ठति, भोगकामस्य उपरि उत्तिष्ठति। स्थितप्रज्ञ इत्युच्यते तादृशः स्थिरबुद्धिः।

स्थितप्रज्ञस्य प्रकृतिः -

स्थितप्रज्ञस्य द्वौ रूपौ भगवद्गीतायां वर्णितौ -

विषयाद् दूरं गत्वा एतत् स्थितप्रज्ञस्य नकारात्मकरूपम्। ज्ञानी लौकिकविषयेषु सक्तः भवति ततः भगवान् श्रीकृष्णः कथयति यत् -

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥

अर्थात् यस्य साधकस्य गौरवं दुःखेषु न विक्षिप्तं न चञ्चलं भवति, यस्य कामाः सुखे शमन्ते, यः सङ्गभयक्रोधविहीनः स स्थिरचित्तः स मुनि उच्यते। श्रीकृष्णेन अत्र स्थितप्रज्ञा मुनि इति उक्तम्। अस्थिरबुद्धिः चपलः, वाक्पटुः, असन्तुष्टत्वात् किमपि वदति। स्थिरचित्तः शान्तः सन्तोषात् न दुष्कृतं वदति। अत एव सः 'मुनि' अर्थात् 'मौन' स्वभावयुक्तः इति उच्यते।

अर्जुनः पृष्टवान् आसीत् यत् स्थितिज्ञानयुक्तः व्यक्तिः कथं वदति -' स्थितधिः कि प्रभाषेत् ', सः अवदत् यत् सः 'मुनिः' अस्ति, बहु न वदति इति। न केवलं सुखदुःखेन न प्रभावितः, राग-भय-क्रोधेनापि न प्रभावितः भवति। एते त्रयः भावाः के सन्ति? लौकिकं प्रति अस्माकं कामाः रागाः उच्यन्ते। अस्मिन् दुविधायां अस्माकं इच्छाः पूर्णाः भविष्यन्ति वा न वा इति दुविधा सर्वदा भवति। एषा दुविधा भयम् उच्यते। यस्मात् कारणात् अस्माकं इच्छा न सिद्धा भवति तस्य प्रति वयं क्रुद्धाः तिष्ठामः। यः व्यक्तिः गुप्तकामान् त्यक्तवान् - 'प्रजाहति यदा कामान् सर्वान् पार्थ मनोगतान' सः स्वाभाविकतया आसक्तिं, भयं, क्रोधं च त्यजति, त्रयः अपि।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

अर्थात् यस्य किमपि प्रति स्नेहः नास्ति, यः शुभं प्राप्य न सुखी भवति, अशुभं प्राप्य न दुःखी भवति, तस्य बुद्धिः सर्वथा स्थिरा अभवत्।

स्थितप्रज्ञा इत्यस्य अर्थः न भवति यत् यः व्यक्तिः लौकिकविषयेभ्यः आत्मानं दूरीकृत्य आध्यात्मिकविषयेषु आसक्तः भवति, सः 'मुनिः' भवति, सः लौकिककर्माणि त्यजति। कर्म कर्तव्यं भविष्यति, परन्तु कार्यं कुर्वन् स्वस्य शुभस्य अशुभस्य वा परिणामस्य चिन्ता न कर्तव्या। अत एव स्थिता प्रज्ञा सत्फलेन न प्रसन्नो भवति इति उच्यते। यदि कर्म परित्यागं करोति तर्हि शुभाशुभप्रकरणम् अत्र न उत्थापयितुं शक्यते। स्पष्टं भवति यत् कर्मत्यागविचारः गीतायाः ग्राह्यः नास्ति।

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

अर्थात्, यथा कूर्मः सर्वान् अवयवान् संहरति, तथैव यदा अयं पुरुषः सर्वेभ्यः इन्द्रियाणां विषयेभ्यः इन्द्रियाणि अपहृत्य तदा मनुष्यः स्थिरः भवति। बुद्धिस्थिरीकरणाय अनेकाः उपायाः सन्ति इत्यर्थः।

चक्षुः कर्णनासिका जिह्वा त्वक् च पञ्च ज्ञानेन्द्रियाणि भवन्ति। रसः रूपं गन्धः शब्दः स्पर्शः इति पञ्च विषयान् आलिंगयति। एतानि पञ्च विषयाः प्रियत्वात् तेषु निमग्नं तिष्ठति सर्वदा। एषा शक्तिः मनुष्यस्य बुद्धिं भ्रमयति, यस्मात् कारणात् तस्य मनः कदापि शान्तं न तिष्ठति। तस्य स्थिरीकरणस्य एक एव उपायः यथा कूर्मः सर्वं शरीरं स्वस्य अन्तः गृह्णाति, तथैव मनुष्यः एतेभ्यः विषयेभ्यः सर्वाणि इन्द्रियाणि अपसारयित्वा आत्मानं स्थिरं कुर्यात्।

पुस्तकालयं प्रति प्रेम

अंकुशः

स्नातकप्रथमवर्षः संस्कृतविशेषः

यदा त्वं विनोदम् अन्विष्य महाविद्यालयम् आगमिष्यसि तदा त्वं माम् अन्वेष्य कुर्वन् एव भविष्यसि।

भवान् मां A block, B block, C block, क्रीडाक्षेत्रे, canteen, mitti cafe, LP area इत्यत्र अन्वेषयिष्यति परन्तु भवान् मां कुत्रापि न प्राप्स्यति!

परन्तु शृण्वन्तु मम मित्राणि!

यदा लेखनस्य पठनस्य च इच्छा भवति तदा न्यूनातिन्यूनं एकवारं पुस्तकालयं अन्वेष्टुम् आगच्छन्तु।

भवान् कुत्रचित् प्राप्नुयात् वा न वा, पुस्तकालये पुस्तकेषु लीनः माम् अवश्यं प्राप्स्यति!

तथा च भवन्तः पश्यन्ति यत् कश्चन बालकः एतादृशैः पुस्तकैः सह गपशपं करोति पुस्तकैः सह मित्रतां कृत्वा। पुस्तकं तस्य हृदयं जित्वा सः पुस्तकस्य हृदयमपि।

किन्तु कानिचित् पुस्तकानि अद्यापि तस्य पृष्ठं कृतवन्तः, परन्तु विश्वासं कुरुत, अवश्यमेव किञ्चित् अधिकं समयं गृह्णीयात्, शेषाणि च पुस्तकानि अपि तस्य हृदये समाविष्टानि भवन्तः प्राप्नुवन्ति, त्वमपि मया सह उपविश्य पश्यसि, पुस्तकेषु प्रेम्णा अपि पतिष्यसि, यदि अवसरः प्राप्यते तर्हि पुस्तकालयम् आगच्छतु मित्र!

कुत्रचित् मिलित्वा वा न वा, तत्र भवन्तं पुस्तकेषु मग्नं अवश्यं प्राप्नुमः!

संविधानस्य प्रस्तावना

विवेकः

स्नातकद्वितीयवर्षः, संस्कृतविशेषः

वयं, भारतस्य जनाः, भारतं सम्पूर्णप्रभुत्वसम्पन्नं, समाजवादिनं, सम्प्रदायनिरपेक्षं, लोकतन्त्रात्मकं गणराज्यं विधातुं, तस्य समस्तान् नागरिकांश्च

सामाजिकम्, आर्थिक, राजनैतिकं च न्यायं, विचारस्य, अभिव्यक्तेः, आस्थायाः, धर्मस्य,

उपासनायाश्च स्वतन्त्रतां, प्रतिष्ठायाः, अवसरस्य च समतां प्रापयितुं; तेषु सर्वेषु च व्यक्तिगौरवस्य राष्ट्रस्य एकतायाः, अखण्डतायाश्च सुनिश्चायिकां बन्धुतां

वर्धयितुं; कृतदृढसङ्कल्पाः अस्याम् अस्मदीयायां संविधानसभायाम् अद्य, ख्रिस्तीये १९४९ तमे वर्षे नवम्बरमासस्य २६-तमे दिने (२००६-तमे विक्रमसंवत्सरे मार्गशीर्ष शुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ) एतेन इदं संविधानम् अङ्गीकृतम्, अधिनियमितम्, आत्मार्पितं च कुर्महे।

संस्कृते डायरीलेखनम्

अमित कुमार:
स्नातकद्वितीयवर्ष: संस्कृतविशेष:

अतिसौभाग्यस्य वार्तास्ति इयं अस्माभिः अद्य २०/०५/२०२३ इति दिनाङ्के द्वितीयविवक्षुगणसम्मेलनः पूर्णः जातः। न केवलं संस्कृतविभागस्य छात्राः भागं गृहीतवन्तः अपितु इतिहासविभागात् वाणिज्यविभागादपि छात्राः सम्मिलिताः आसन्।

अयं सम्मेलनः हंसराजमहाविद्यालयस्य निष्ठाखण्डस्य A116 इति कक्षे पूर्णः जातः। परम्परायाः निर्वहणं कृत्वा सर्वप्रथमम् अनुरागार्येण महोदयेन वैदिक मन्त्रोच्चाराणात् कार्यक्रमस्य

प्रारंभमभवत्। वैदिक मन्त्रोच्चारणे सः ईश्वरस्तुतिप्रार्थनोपसनामन्त्रात् वातावरणं वैदिकमयी कृतवान्। ततपश्चात् कुमारादर्शेण 'पठामि संस्कृतम् नित्यम्' इत्यस्य गीतस्य वाचनमभवत् च सर्वे संस्कृतप्रेमिणः तमनुसृत्य उक्तवन्तः तस्मात् कारणात् पूर्णं वातावरणम् "वन्दे संस्कृतमातरम्"

"जयतु संस्कृतम् जयतु भारतम् वदत संस्कृतम् पठत संस्कृतम्" इति ध्येयवाक्येन सह गुञ्जिता जाता। तदोपरांतं कुमारादर्शेण "शतृ-प्रत्ययस्य" उपरि व्याख्यानः भूयते स्म। सर्वे सर्वाश्च तस्य दैनिकप्रयोगं प्रत्यपि रुचिं प्रदर्शनं कृतवन्तः च कक्षैव वाक्यनिर्माणं कृत्वाभ्यासपि कृतवन्तः कृतवत्यश्च।

ततपश्चात् वासुवर्येण 'पुस्तक पठनं' इत्यस्मिनवसरे 'विश्व बन्धुत्वम्' इति विषये एका मनोहरा कथा उक्ता। च महोपनिषाद् श्लोकात्

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

तस्य उद्बोधनं समाप्तं जातं। तत्रैव रुस-युक्रेन उभयोः देशयोः मध्ये युद्धस्यापि चर्चा भारतस्य भूमिकायाः अपि विवेचनाभवत्।

ततपश्चात् अभिज्ञाशाकुन्तलात् एकस्य श्लोकस्य उपरि शुभममहोदयेन व्याख्यानं कृतम्। तस्य सारांशं इदमासीत् सम्पूर्णं समयं अस्माकमनुकूलं न भवति अतः सुखेषु अतिहर्षिताः न भवेयुः दुःखेषु अतिखिन्नाः न भवेयुश्च।

तस्मिन् सन्दर्भे आदर्शेणोक्तं यत् "चक्रवत्परिवर्तन्ते सुखानि च दुःखानि च"। बहु सुष्ठुतया व्याख्या महोदयेन कृतम्।

अद्य भाषाक्रीडायां अत्यानंददायकी क्रीडाभूत्। आदर्शेण अनेकेषु पृष्ठेषु अनेकानि नामानि लिखितानि तर्हि सर्वे छात्राः एकं एकं पृष्ठं स्वीकृत्य स्वानुभवमाध्यमेन तस्य व्यक्तेः प्रस्तुतिं कृतवन्तः च अग्रे उपविष्टाः छात्राः अनुमानं कृतवन्तः।

यथा वासुः काकस्य अंशः शाहरुखखानस्य राकेशः कंगनारानौतः (प्रेमजीतस्य सहायतां स्वीकृत्य) सुमितः वानरस्य गर्वः अरिजीतसिंहस्य प्रेमजीतः प्रो. (डॉ.) रमाप्राचार्यायाश्च अन्याश्च बालकाः अप्यभिनयं कृतवन्तः।

तदोपरान्तम् प्रेमजीतेन एका मधुरा प्रस्तुतिः अभवत्। प्रेमजीतः अनेकानां हिंदीगीतानां संस्कृतानुवादं गीतवान् सर्वे छात्राः लयं श्रुत्वा शब्दानानुसरणं कृत्वा नामानि उक्तवन्तः।

गीतानि तु मधुराणि सन्ति किन्तु संस्कृतभाषया सह प्रेमजीतस्य कण्ठेन सह मिलित्वा इतोऽपि मधुराणि अभवन्।

ततपश्चात् सभायां समसामयिकी चर्चा गर्वेण प्रस्तुतं भूयते स्म। गर्वः "द केरला स्टोरी" इत्यस्योपरि स्वविचारान् प्रकटं कृतवान्। तेनोक्तं यत् सर्वप्रथमम् स्वधर्मस्य विषये ज्ञानं वर्धन्ताम्। च 'लवजिहाद' इति भीषणा समस्यास्ति।सर्वे एकत्रितं भूत्वा एकेन सह परस्परसहयोगेन सह युद्धं कुर्मः। सर्वाः बालिकाः मधुराणि वचनानि श्रुत्वा केवलं तस्य दुष्टस्य कृते स्वजीवनस्य आहूतिं न दातव्यानि। इत्यस्ति सारांशं तस्य संबोधनस्य।

द्वितीयविवक्षुगणसम्मेलनस्य समापनं शान्तिपाठेनाभवत्। अनुरागार्यादर्शाभ्यां शान्तिपाठः भूयते स्म।

अद्य विनोदानंदमहाभागाः अस्माभिः सह उपस्थिताः नासन् किन्तु तेषां स्नेहमासन्। महोदयाः स्वानुपस्थितेः पश्चादपि अस्माकं कृते प्रीतिभोजनं प्रेषितवान्। सर्वे स्वधन्यवादाः व्याहरन्ति महोदयं प्रति। धन्योऽस्ति प्रथमवर्षीयाः छात्राः महोदयेन सह मित्रतां प्राप्त्वा।

अन्ते अस्माकं आदरणीयाः विजीताचार्याः किंचिदावश्यकं कार्यं कारणात् अस्माभिः सह नासीत् किन्तु महोदयानां स्नेहः मार्गदर्शनं आशीर्वादाश्च तु सदैव भवति।

सर्वेषां कृते धन्यवादाः।

जयतु संस्कृतम् जयतु भारतम् वन्दे संस्कृतमातरम्।।

पुनः श्वः मेलिष्यावः।

PREETI SHAH
B.A. (Hons.) Hindi, III Year

KHYATI CHAUDHARY

HANSRAJ COLLEGE

— UNIVERSITY OF DELHI —

TEL: 011-27667458, 27667747, Email: principal_hrc@yahoo.com

Website: www.hansrajcollege.ac.in